हस्तपुस्तिका

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता

कमल कार

रॉबर्ट चैम्बर्स के साथ

IDS Institute of Development Studies

Plan

प्लान यूके एक बाल केन्द्रित सामुदायिक विकास संगठन है जिसका किसी धार्मिक या राजनीतिक विचारधारा अथवा संगठन से कोई सम्बन्ध नहीं है. हम बच्चों के सुखमय भविष्य के लिये पूरी तरह समर्पित हैं. हम बच्चों, उनके परिवारों, समुदायों, नागर समाज, सरकारों के साथ सहयोग करके उनके हित के लिये काम करते हैं. हम रचनात्मक सम्बन्ध स्थापित करते हैं और बच्चों को सक्षम बनाते हैं कि उनकी आवाज सुनी जा सके और उन पर प्रभाव डालने वाले मुद्दों के विषय में उनकी आवाज को महत्व मिल सके.

प्रथम विश्व [illegible] दिवस पर [illegible] में स्कूलों में शौच मुक्त होने का उत्सव छायांकन: [illegible], प्लान केन्या

[illegible], [illegible] में स्कूलों में शौच के [illegible] का मानचित्रीकरण करते हुए बच्चे छायांकन: [illegible], प्लान केन्या

[illegible] की स्कूलों में शौच के [illegible] में स्थानीय [illegible] के उपलब्ध [illegible] निर्मित [illegible] का [illegible] को दिखाया गया

हस्तपुस्तिका

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता

कमल कार

रॉबर्ट चैम्बर्स के साथ

प्लान इन्टरनेशनल (यूके) की सहायता से
तैयार किया गया, मार्च 2008

Plan

Be a part of it

आभार

इस हस्तपुस्तिका को लिखने और तैयार करने के लिये प्लान इन्टरनेशनल (यूके) से सहयोग प्राप्त हुआ. इसे तैयार करने की पूरी अवधि के दौरान रोज़र येट्स द्वारा दिये गये प्रोत्साहन तथा दर्शाये गये धीरज और उदारता के लिये हम कृतज्ञतापूर्वक आभारी हैं. उनके साथ ही समीर शाह, एलेक्स बेट्टी द्वारा कार के चरणों में दिये गये सहयोग के लिये आभार व्यक्त करते हैं. हम जूडिथ रौबर्टसन को धन्यवाद करते हैं जिनके द्वारा इस हस्तपुस्तिका को रूप सज्जा और अभिन्यास को अंतिम रूप देने में सहायता की गई. पैट्रु कोलार्ड भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने हस्तपुस्तिका की पाण्डुलिपि तैयार करने में सहयोग दिया. पीटर फीलडमैन द्वारा बहुत ही अनुशंसक सुझाव दिये गये और टिप्पणियां की गईं जिनके कारण हस्तपुस्तिका में और सुधार किया जा सका. हस्तपुस्तिका में उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत बहुत से वास्तविक दृष्टान्त और घटनाओं के विवरण उन लोगों के द्वारा उपलब्ध कराये गये जिनके नाम विवरणों के साथ ही अंकित किये गये हैं. यहां हम समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के उन चैम्पियनों के प्रति भी धन्यवाद व्यक्त करना चाहेंगे जिनके ऊपर न तो किसी ने कोई गीत लिखे और न किसी ने गाकर उनका गुणगान ही किया. कई देशों के अनेकों साथी, सहयोगी, सुगमकर्ता, समुदाय, स्वाभाविक नेता, गैर-सरकारी संगठनों के सदस्य और कार्मिक, अनुदान दाता, वरिष्ठ कार्मिक, लोगों के चुने गये प्रतिनिधि, और अन्य भी धन्यवाद के पात्र हैं. उनकी संख्या इतनी अधिक है कि सबके नामों का उल्लेख नहीं किया जा सकता और उनमें से कुछ के नाम का उल्लेख करना तथा अन्य को छोड़ देना उचित नहीं होगा. वे सब अपने योगदान को जानते हैं इसलिये हमें आशा है वह हमारी इस बात को भी समझ जायेंगे और स्वीकार कर लेंगे. डी.एफ.आई.डी. सहायतित इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेन्ट स्टडीज के शोध कार्य "गोइंग टू स्केल विद कम्युनिटी-लेड टोटल सैनिटेशन" द्वारा प्रदान किये गये अवसरों के बिना कुछ अनुभव और सामग्री उपलब्ध हो नहीं हो पाती.

दिसम्बर 1999 से लगातार समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के साथ जुड़े रहने से प्राप्त अनुभवों के आधार पर ही इस हस्तपुस्तिका का विकास किया गया है. यह अनुभव एशिया के बांग्लादेश, भारत, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया, मंगोलिया, नेपाल, चीन, पाकिस्तान, अफ्रीका के यूगाण्डा, जाम्बिया, इथियोपिया, तन्ज़ानिया, केन्या, और सियरा लियोन, दक्षिण अमेरिका के बोलीविया, मिडिल ईस्ट के यमन तथा अन्य देशों में प्राप्त हुए. जिन विधियों का यहां वर्णन किया गया है समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये केवल यही विधियां कारगर नहीं हैं. उपयोगकर्ताओं को हर स्थिति में अपने विवेक का प्रयोग करने के लिये तथा स्थानीय स्थितियों के परिवेश में उपयुक्त अभिनव पहल करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है जिससे समुदाय की सहभागिता प्राप्त की जा सके तथा बढ़ाई जा सके और समुदायों का सशक्तिकरण इस प्रकार हो सके कि सम्पूर्ण स्वच्छता प्राप्त करें और इसके आगे की यात्रा भी समुदाय एकजुट होकर पूरी कर सकें.

कमल कार
मार्च 2009

सभी छायाचित्र: डॉ कमल कार (उन छायाचित्रों को छोड़कर जिनके चित्रांकनकर्ताओं के नाम साथ में अंकित हैं)

CLTS हस्तपुस्तिका मुद्रित हुई है WSSCC, Geneva' के आर्थिक सहयोग से एवं हिन्दी अनुवाद संपन्न हुआ है IDS, Sussex- के आर्थिक सहयोग से - नवम्बर, 2009

हिन्दी रूपान्तर एवं अभिन्यास — एस.एस.उप्पल
सम्पादन हिन्दी संस्करण — के.पी. शुक्ला
[illegible] प्राइवेट लिमिटेड

अनुक्रमणिका

2. आभार
3. अनुक्रमणिका
4. परिभाषाएं
5. संक्षेपाक्षर

6. अध्याय 1 - परिचय और पृष्ठभूमि
7. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की उत्पत्ति, प्रसार और विस्तार
8. यह हस्तपुस्तिका क्यों?
9. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता
12. चरणों का अनुक्रम

14. अध्याय 2 - ट्रिगरिंग से पहले
15. समुदाय का चयन
16. अधिक अनुकूल
17. अधिक चुनौतीपूर्ण
18. स्थितियाँ जो अनुकूल या चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं
19. स्थिति मूल्यांकन से पहले परिचय और घनिष्ठता विकसित करना

22. अध्याय 3 - ट्रिगरिंग
23. समुदाय द्वारा मूल्यांकन और विश्लेषण को सुगम बनाना
24. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की चिंगारी जगाने के लिये पृष्ठभूमि
29. खुले में शौच के स्थानों का अनुप्रस्थ भ्रमण
31. खुले में शौच के स्थानों का मानचित्रीकरण
34. सबसे गंदी जगहों की पहचान
35. उत्पादित मल की मात्रा तथा चिकित्सा पर व्यय का आकलन
36. मुख कैसे दूषित हो जाते: मल जनित संदूषण के मार्ग
37. प्रज्वलन क्षण
40. विभिन्न प्रतिक्रियाओं के सापेक्ष रणनीति
40. सुझाव
40. पेट्रोल पम्प में दियासलाई
41. आशाजनक लौ
41. बिखरी हुई चिंगारियां
42. भीगी दियासलाई
43. समुदाय की कार्ययोजना को सुगम बनाना
44. अनुसरण के लिये समुदायिक मानचित्रीकरण
44. स्कूलों में ट्रिगरिंग

46. अध्याय 4 - ट्रिगरिंग के बाद पश्चवर्तिता
48. तुरन्त बाद की अनुवर्ती गतिविधियाँ और प्रोत्साहन
48. समुदाय के कार्य और अनुवर्ती गतिविधि
51. सहभागी अनुश्रवण और संकेतक
51. प्रक्रिया और प्रगति का अनुश्रवण
52. संभावित स्वाभाविक नेता
52. महिला स्वाभाविक नेता
52. बच्चों और धार्मिक नेताओं की भूमिका को प्रोत्साहन तथा सम्मान
53. समुदाय के निर्धन लोगों को सहायता देने के लिये प्रोत्साहन
54. बच्चों को अभियान से जोड़िये
57. स्वच्छता निर्माण सामग्री की उपलब्धता
59. खुले में शौच से मुक्त स्तर का सत्यापन और प्रमाणीकरण
60. खुले में शौच से मुक्त होने पर उत्सव मनाइये
61. खुले में शौच से मुक्त स्तर का अनुश्रवण एवं बनाये रखना

64. अध्याय 5 - प्रसार एवं समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से आगे
66. प्रशिक्षण और प्रसार के लिये क्या करें और क्या न करें
66. अधिकारियों के कार्मिकों तथा प्रभावी व्यक्तियों के द्वारा स्वाभाविक कार्य
67. गांव के स्तर पर ट्रिगरिंग के लिये सुगमकर्ता दलों का प्रशिक्षण
71. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रशिक्षण की गुणवत्ता के लिये प्रतिबद्धता
71. अभियान
72. चर्चा और प्रतियोगिता को प्रोत्साहन
73. शौचालय निर्माण सामग्री की आपूर्ति और उपलब्धता को बढ़ावा दीजिये
74. अनुदान से सीखना
74. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के पार
77. संस्थागत अभियान का बीजारोपण और सहयोग
83. परिशिष्ट
84. परिशिष्ट क - समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की उत्पत्ति, पृष्ठभूमि, प्रसार और विस्तार
88. परिशिष्ट ख - प्रसार और विस्तार के संदर्भ में खुली चिट्ठी
90. परिशिष्ट ग - विशेष स्थितियों में ट्रिगरिंग
92. परिशिष्ट घ - घृणा पैदा करने के लिये प्रश्नों के नमूने
92. परिशिष्ट ङ - अनुवर्ती गतिविधियों की नमूने की जांच सूची
93. परिशिष्ट च - सफल आन्तरिक आर्थिक स्वच्छता की समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से तुलना
94. परिशिष्ट छ - स्रोत और सम्पर्क सूत्र
95. विभिन्नता और स्थानीय स्तर पर विकसित मॉडल: समुदायों द्वारा अभिनव पहल के अन्तर्गत विकसित किये गये शौचालयों के मॉडल के फोटोग्राफ

परिभाषाएं

प्रमाणीकरण, खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्ति का आधिकारिक पुष्टिकरण और मान्यता है

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता. यह खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त करने तथा उसे बनाये रखने के लिये विकसित की गई एकीकृत कार्यविधि और तरीके हैं. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये आवश्यक है कि सुगमकर्ताओं द्वारा समुदाय को अपनी स्वच्छता की स्थिति को जानने, शौच करने से सम्बन्धित परिपाटियों, आदतों, तथा दुष्प्रभावों को जानने और उनका विश्लेषण करने के कार्य को सुगम बनाया जाये जिससे समुदाय एकजुट होकर कार्य करने के लिये उद्यत हो जाये और खुले में शौच से मुक्त स्तर को प्राप्त कर ले. जिन स्थितियों में बाहर से आये लोग समुदाय के सदस्यों को "सहायें" हैं उन्हें इस हस्तपुस्तिका के आलोक में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता नहीं कहा जा सकता.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रियाएं, पहले संचालित होती हैं और इन प्रक्रियाओं के बाद कई प्रकार के परिवर्तन आ सकते हैं - शौचालयों के डिजाइन में सुधार, व्यवहारगत स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार का अंगीकार किया जाना तथा इसमें सुधार, कूड़े करकट का प्रबन्धन, गन्दे जल की निकासी और निपटान, पीने के पानी के स्रोतों का संरक्षण और रखरखाव तथा पर्यावरण को बेहतर बनाये रखने के लिये उठाये जाने वाले अन्य कदम. कई मामलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के माध्यम से खुले में शौच से मुक्त हुए समुदायों के द्वारा एकजुट होकर कई स्थानीय विकास कार्यों का कार्यान्वयन करने के लिये सकारात्मक पहल की जाती है.

शौचालय और प्रक्षालन: शौचालय का अर्थ है मल के सीधे गड्ढे में जाने की व्यवस्था तथा प्रक्षालन का मतलब है पानी सील के साथ फ्लश करने की व्यवस्था. इस हस्तपुस्तिका में कभी-कभी शौचालय शब्द का प्रयोग इन दोनों के लिये किया गया है. प्रक्षालन शब्द का प्रयोग वहां किया गया है जहां सीधे गड्ढे वाली व्यवस्था के सापेक्ष पानी सील के प्रयोग की अधिक संभावना है.

स्वाभाविक नेता (अंग्रेजी में इन्हें चहुत नेता भी कहा जाता है) वह सक्रियतावादी और उत्साही लोग हैं जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता प्रक्रिया के दौरान उभर कर सामने आते हैं और नेतृत्व प्रदान करते हैं. पुरुष, महिला, युवा और बच्चे, इनमें से कोई भी स्वाभाविक नेता हो सकता है. कुछ स्वाभाविक नेता सामुदायिक परामर्शदाता बन जाते हैं, दौरा करते हैं तथा अपने समुदाय के द्वारा अन्य समुदायों को भी प्रोत्साहित करते हैं तथा सहयोग प्रदान करते हैं.

खुले में शौच का अर्थ है खुले में शौच करना और मल को उसी जगह उसी हालत में छोड़ देना. **खुले में शौच से मुक्त** का अर्थ है समुदाय के द्वारा खुले में शौच करने की आदत को पूरी तरह छोड़ देना और इस विभीषिका से पूरी तरह मुक्त हो जाना. इस स्तर को पा लेने का तात्पर्य है कि गांव में कहीं भी मल बिखरा हुआ पड़ा नहीं होगा और वातावरण इससे होने वाले संदूषण से मुक्त होगा. बिना ढक्कन वाले एक गड्ढे के शौचालय की व्यवस्था भी एक प्रकार से खुले में शौच का ही एक रूप है (खुले में शौच के लिये निश्चित स्थान), परन्तु यदि मक्खियों से बचाव करने वाला ढक्कन लगा दिया जाये (शौच के बाद राख डाल कर मल को ढकने की व्यवस्था के साथ या इसके बिना) तो यह खुले में शौच से मुक्त होने के लिये उपयुक्त माना जायेगा. गड्ढा खोदकर उसमें शौच करना तथा शौच के बाद मल को मिट्टी से ढक देना खुले में शौच की स्थिति से खुले में शौच से मुक्ति की स्थिति की ओर बढ़ता हुआ एक कदम माना जायेगा.

सत्यापन से तात्पर्य है निरीक्षण का जिससे यह पता लग सके कि क्या सम्बन्धित समुदाय के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लिया गया है (प्रमाणीकरण से तुलना करें)

शौचालय के लिये गड्ढा खोदना, होमा बे, केन्या, छायांकन: फिलिस ओडियांबो, प्लान केन्या

संक्षेपाक्षर

सीएलटीएस	कम्यूनिटी लेड टोटल सैनिटेशन
आइआरएसपी	इंटीग्रेटेड रूरल सपोर्ट प्रोग्राम, मरदान, पाकिस्तान
एनजीओ	नॉन-गवर्नमेंटल ऑर्गैनाइजेशन
एनईडब्ल्यूएच	नेपाल वाटर फॉर हैल्थ
एनएल	नेचुरल लीडर्स
एनडब्ल्यूएफपी	नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रॉविन्स, पाकिस्तान
ओडी	ओपन डेफेकेशन
ओडीएफ	ओपन डेफेकेशन फ्री
पीआरए	पार्टिसिपेटरी रूरल एप्रेजल
आरईएसए	प्लान इण्टरनेशनल का रीजनल ईस्टर्न एण्ड सदर्न अफ्रीका ऑफिस
आरटीआई	रिफ्यूजी ट्रस्ट इण्टरनेशनल, इथियोपिया में कार्यरत
	आधारित नॉन-गवर्नमेंटल ऑर्गैनाइजेशन
एसईयू	सोशियल डेवलपमेंट यूनिट
एसएफडी	सोशियल फण्ड फॉर डेवलपमेंट, यमन
एसएनएनपीआर	सदर्न नेशन्स नेशनेलिटीज एण्ड पीपुल्स रीजन, इथियोपिया
सीडटीई	ट्रेनिंग हाउसहोल्ड एबिलिटीज टु रिस्पॉन्ड टु डेवलपमेंट अपार्च्युनिटीज
यूनिसेफ	यूनाइटेड नेशन्स चिल्ड्रन्स फण्ड
वीईआरसी	विलेज एजुकेशन रिसोर्स सेंटर, बांग्लादेश
डब्ल्यूएसएससीसी	वाटर एण्ड सैनिटेशन फॉर ऑल कलैबरेटिव कम्यूनिटीज
डब्ल्यूएसपी-ईएपी	वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - ईस्ट एशिया एण्ड पैसिफिक
डब्ल्यूएसपी-एसए	वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - साउथ एशिया

अध्याय 1

परिचय एवं पृष्ठभूमि

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अवधारणा उत्पत्ति, प्रसार एवं विस्तार

कमल कार द्वारा बांग्लादेश के वाटर एड एवं उसकी सहयोगी स्थानीय संस्था वी.ई.आर.सी. (विलेज एजुकेशन रिसोर्स सेन्टर एक स्थानीय गैर-सरकारी संगठन है) के द्वारा चलाये जा रहे पारम्परिक जल एवं स्वच्छता कार्यक्रम का मूल्यांकन किया गया तथा बाद में उनके द्वारा 1999 के अन्त में तथा वर्ष 2000 में बांग्लादेश में स्वच्छता के क्षेत्र में बहुत काम किया गया. इन गतिविधियों से उनके विचारों एवं अनुभव के आधार पर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अवधारणा का विकास हुआ. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अवधारणा के अन्तर्गत सहभागी ग्रामीण अध्ययन (पीआरए) विधि का उपयोग होने से स्थानीय समुदाय स्वयं अपनी स्वच्छता की स्थिति का विश्लेषण करने तथा खुले में शौच के सार्वजनिक स्वास्थ्य पर तथा आस-पास के पूरे पर्यावरण पर पड़ने वाले भयानक दुष्परिणामों को स्पष्ट रूप से समझ जाता है. (विस्तृत विवेचन के लिये परिशिष्ट क पृष्ठ 84 देखें). जब इस विधि का प्रयोग कुशलतापूर्वक ढंग से किया जाता है तथा सुगमकर्ता द्वारा शौचालय निर्माण की सामग्री पर मिलने वाली आर्थिक सहायता नीति तथा शौचालय निर्माण की विधियों के निर्धारण की बातों को बीच में नहीं लाया जाता है तो समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता विधि के द्वारा समुदाय में इस प्रकार की अन्तःप्रेरणा की चिंगारी जगाई जा सकती है कि वे सब मिल कर समस्या के निदान के लिये तुरत खुले में शौच से पूर्ण तरह मुक्त होने के लिये कार्य करने को उद्यत हो जायें. सुगमकर्ताओं की कार्यनीति की एक नई शैली विकसित हुई है. अपने आदर्श रूप में इसके अन्तर्गत इस बात पर बल दिया जाता है कि "मानव मल" के लिये स्थानीय भाषा में प्रचलित अपरिष्कृत शब्द का ही प्रयोग किया जाये तथा स्थानीय समुदाय को उनकी आदतों के सबसे गन्दे और सबसे अधिक घृणास्पद स्वभाव का ध्यान कराने के लिये प्रोत्साहित किया जाये. जब वे अपनी शौच करने की आदत को इस प्रकार पुनः देखते तथा विश्लेषित करते हैं तो उन्हें गहरा आघात लगता है, घृणा और शर्म महसूस होती है. यह शैली उकसाती है, यह मनोविनोदपूर्ण भी है तथा इसमें सारे निर्णय समुदाय पर ही छोड़ दिये जाते हैं.

''कौन कहां शौच करता है?'' टोरोरो, युगाण्डा के समुदाय सदस्य खुले में शौच के स्थानों का मानचित्रीकरण करते हुए.
छायांकन: फिलिप ओटिएनो, प्लान केन्या

कमल कार द्वारा वर्ष 2000 से दिये जा रहे व्यावहारिक प्रशिक्षणों के कारण तथा कई संगठनों की सहायता तथा विभिन्न देशों में पारस्परिक प्रभाव से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता विधि बांग्लादेश की अन्य संस्थाओं तक तथा दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, और मिडिल ईस्ट के देशों तक भी पहुंच गई. संगठनों के निम्नांकित सदस्यों के द्वारा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया गया. आज बांग्लादेश, भारत, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया और पाकिस्तान में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का व्यापक प्रसार हो गया है. प्रशिक्षणों के माध्यम से इसका प्रसार विभिन्न स्तरों तक चीन, मंगोलिया और नेपाल में भी हो चुका है. हाल ही में इथियोपिया, जाम्बिया, कीन्या और अफ्रीका के अन्य देशों, दक्षिण अमेरिका के बोलीविया तथा मिडिल ईस्ट के यमन में भी इसकी उत्साहवर्धक शुरुआत हो गई है. कमल कार द्वारा प्रदान किये जा रहे इन प्रशिक्षणों के प्रायोजकों में वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - विश्व बैंक, केयर, वाटरएड, सिनर्जिक (वाटर एण्ड सैनिटेशन फॉर दी इकनामिक कम्युनिटीज, इण्डोनेशिया), दि बिल एण्ड मेलिण्डा गेट्स फाउण्डेशन द्वारा पूर्वी जावा में सहायतित सम्पूर्ण स्वच्छता एवं स्वच्छता विस्तार परियोजना, यमन की सोशियल फण्ड फॉर डेवलपमेण्ट, इण्डोनेशिया में कार्यरत आस्ट्रेलिया की गैर-सरकारी संस्था [illegible] इण्टरनेशनल, प्लान इण्टरनेशनल तथा यूनिसेफ आदि सम्मिलित हैं.

इस हस्तपुस्तिका की आवश्यकता क्यों है ?

शुरुआत में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत लोगों में प्रेरणा की चिंगारी जगाने पर ही सारा ध्यान केंद्रित और सीमित था. इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज द्वारा नवम्बर 2005 में कमल कार के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर लिखी गई व्यावहारिक मार्गदर्शिका का प्रकाशन किया गया. इस मार्गदर्शिका का विषय है कि कैसे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को सक्रिय रूप से गतिमान किया जाये. इस मार्गदर्शिका की मांग बहुत रही है और इसका अनुवाद अम्हारिक, अरेबिक, बहासा इण्डोनेशिया, चीनी, बंगाली, हिन्दी, खमेर, मराठी, नेपाली, मंगोलियन, स्वाहिली, उर्दू तथा अन्य भाषाओं में किया जा चुका है. लेकिन समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता में लोगों में चिंगारी जगाने या उन्हें प्रेरित करने के आगे भी बहुत कुछ है यद्यपि यह उसका सबसे महत्वपूर्ण और केन्द्रीय भाग है. एक ऐसी हस्तपुस्तिका की आवश्यकता और मांग महसूस की जा रही थी जो कि उद्दीपन (ट्रिगरिंग) से पहले, उद्दीपन के बाद की महत्वपूर्ण स्थितियों तथा इसके प्रसार तथा इसको आगे विकास करने की स्थितियों के विषय में अनुभवों एवं परामर्शों का स्रोत हो सके. साथ ही उद्दीपन विधि भी अनुभवों के कारण अधिक प्रभावी, परिष्कृत एवं अधिक समृद्ध हो गई है. यह हस्तपुस्तिका अनुभवों, विविध व्यावहारिक सबकों तथा अलग-अलग देशों में विकसित किये गये अभिनव तरीकों को एक साथ लाकर समय की मांग को कुछ हद तक पूरा करने का एक प्रयास है. इस हस्तपुस्तिका में अद्यतन सामग्री का समावेश है इसलिये अब पुरानी मार्गदर्शिकाओं को छोड़कर इसका ही प्रयोग करना चाहिये. स्थानीय स्तर पर या राष्ट्रीय स्तर पर प्रशिक्षकों या कार्यान्वयन से जुड़े व्यक्तियों के द्वारा स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार विकसित मार्गदर्शिकाओं को त्यागने की आवश्यकता नहीं है वरन् इस हस्तपुस्तिका के आधार पर उन्हें, यदि उपयुक्त हो तो, संशोधित परिवर्द्धित किया जा सकता है.

यह हस्तपुस्तिका ऐसे विचारों एवं अनुभवों के संकलन के रूप में विकसित की गई है जिसका उपयोग समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत अभिमुखीकरण कार्यशालाओं, संचालनकर्ताओं हेतु परामर्श, सुगमकर्ताओं, स्वाभाविक नेताओं के प्रशिक्षण और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की गतिविधियों के कार्यान्वयन में एक साधन के रूप में किया जा सकता है. स्थानीय स्तर पर कार्यरत कर्मियों, सुगमकर्ताओं और प्रशिक्षकों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये नियोजन, कार्यान्वयन एवं अनुवर्ती गतिविधियों में यह एक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में सहायक सिद्ध होगी.

इस हस्तपुस्तिका का प्रयोग करने वालों को चाहिये कि वे इसके मार्गदर्शन का उपयोग इस प्रकार करने के लिये अपने को पूर्ण रूप से स्वतंत्र समझें जो उन्हें सबसे अच्छा और उपयुक्त लगता हो. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के क्रियान्वयन के लिये केवल यही विधियां नहीं हैं जो कि इसमें दी गई हैं. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की तैयारी के लिये, ट्रिगरिंग, ट्रिगरिंग के बाद की अनुवर्ती गतिविधियों के लिये तथा गतिविधियों को स्थानीय परिस्थितियों, संस्कृतियों एवं अवसरों के अनुरूप ढालने के लिये भिन्न-भिन्न अभिनव तरीकों का प्रयोग करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है. सुगमकर्ता नये तरीके खोजने और विधियों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल ढालने के लिये पूर्ण रूप से स्वतंत्र हैं और उन्हें अपने अनुभव एवं ज्ञान के आधार पर निर्णय करना चाहिये कि क्या करें और क्या न करें तथा किस तरीके का किस स्थान पर प्रयोग करें. इस हस्तपुस्तिका में दिये गये विचार और परामर्श का कई बार व्यावहारिक रूप से प्रयोग किया जा चुका है तथा इन्हें व्यावहारिक कसौटी पर खरा पाया गया है परन्तु यह सुगमकर्ता को ही तय करना होगा कि उसके कार्य स्थल के संदर्भ में क्या करना उचित होगा. मूल सिद्धान्त है स्थानीय समुदायों का सशक्तिकरण जिससे वे स्वयं अपनी स्थिति का विश्लेषण कर सकें और पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त होने के लिये अपनी कार्य योजना बना कर उसका क्रियान्वयन कर सकें.

एक स्वाभाविक, यमन में खुले में शौच के विरोध में नारे लगाते हुए बच्चों का जुलूस

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता लोगों के स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार में परिवर्तन के लिये आत्म प्रेरणा की चिंगारी जगाने पर ही केंद्रित है न कि शौचालयों के निर्माण पर. स्थानीय अथवा बाहर से आये सुगमकर्ताओं के द्वारा सामाजिक जागृति के माध्यम से व्यवहार परिवर्तन के लिये प्रेरणा जगाने की इस प्रक्रिया का क्रियान्वयन किया जाता है.

इसके अन्तर्गत व्यक्तिगत व्यवहार के स्थान पर पूरे समुदाय के व्यवहार पर ध्यान केंद्रित किया जाता है. खुले में शौच से मुक्त होने का लाभ पूरे समुदाय को प्राप्त होता है और इसीलिये यह बोध हो जाने पर समुदाय की सहभागिता बढ़ जाती है. सभी लोग मिल कर यह निर्णय करते हैं कि सभी के लाभ के लिये किस प्रकार से स्वच्छ एवं आरोग्यपूर्ण वातावरण बना सकते हैं. मूल बात यह है कि इस अवधारणा के अन्तर्गत व्यक्तिगत स्तर पर मिलने वाली आर्थिक सहायता का कोई उल्लेख नहीं किया जाता तथा न ही शौचालयों के किसी मॉडल विशेष को अपनाने की बात कही जाती है. परिवारों के बीच एकता, सहभागिता और परस्पर सहायता की भावना समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की सफलता की कुंजी है. यह भी उल्लेखनीय है कि जैसे-जैसे समुदाय खुले में शौच से मुक्त होने की दिशा में आगे कदम बढ़ाने लगता है तो समुदाय में से ही कुछ स्वाभाविक नेता उभर कर सामने आ जाते हैं, स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री से निर्मित होने वाले कम लागत शौचालयों के मॉडल भी लोगों के द्वारा स्वयं विकसित कर लिये जाते हैं तथा समुदाय द्वारा स्वयं ही पुरस्कार और दण्ड की एक व्यवस्था विकसित करके लागू कर दी जाती है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत समुदाय को सम्पूर्ण स्वच्छता का पूर्ण उत्तरदायित्व लेने तथा अपनी कार्य योजना बना कर क्रियान्वित करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है.

सही अर्थ में सम्पूर्ण स्वच्छता में कई चीजें सम्मिलित हैं जैसे, पूर्ण रूप से खुले में शौच बन्द करना, सुनिश्चित करना कि सभी स्वच्छ शौचालय का ही प्रयोग करें, खाना बनाने से पहले और खाने से पहले, शौच के बाद तथा बच्चों के मल को साफ करने या जानवरों और चिड़ियों के सम्पर्क में आने के बाद हाथों को साबुन से ठीक से धोना, भोजन सामग्री और जल को हमेशा आरोग्यपूर्ण ढंग से लाना और रखना, जानवरों की गन्दगी तथा घरेलू अपशिष्ट का सुरक्षित निपटान जिससे सुरक्षित एवं स्वच्छ वातावरण का निर्माण हो सके. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत महत्वपूर्ण पहले चरण के रूप में खुले में शौच से मुक्ति पर ध्यान केंद्रित किया जाता है जिससे लोगों के स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार परिवर्तन की शुरुआत हो सके. इसके अन्तर्गत सबसे पहले लोगों को इस प्रकार सक्षम बनाने का प्रयास किया जाता है कि वे खुले में शौच की अपनी आदतों के मूल्यांकन, अवलोकन और विश्लेषण तथा इसके दुष्परिणामों के बोध के माध्यम से अपनी स्वच्छता की स्थिति को स्वयं स्पष्ट रूप से समझें. परिणाम होता है सामूहिक रूप से शर्म और घृणा का अनुभव जिसके कारण अक्सर खुले में शौच बन्द कर आस-पड़ोस को स्वच्छ बनाने की तीव्र इच्छा जाग जाती है.

जब समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का क्रियान्वयन ठीक से होता है तो

- यह पूर्ण होता है अर्थात् यह समुदाय के सभी सदस्यों तथा आयुवर्गों को प्रभावित करता है
- यह समुदाय के सभी सदस्यों के द्वारा मिल कर लिये गये निर्णय पर आधारित होता है और इस पर सभी के द्वारा कार्यवाई की जाती है
- यह सभी के द्वारा मिलकर प्राप्त की जाने वाली उपलब्धि की भावना से प्रेरित होता है तथा इस अभिप्रेरणा का स्रोत समुदाय का बोध ही होता है न कि बाहरी आर्थिक सहायता या दबाव

- इस प्रक्रिया के दौरान नये स्वाभाविक नेताओं की पहचान हो जाती है या विद्यमान नेताओं में नई प्रतिबद्धता जाग जाती है जिससे वे अपने ढंग से अपनी स्थिति को बदलने के लिये प्रयासरत हो जाते हैं न कि किसी निर्दिष्ट योजना का अनुसरण करके
- विविध प्रकार के कार्यों के तरीके तथा नये उपाय स्थानीय स्तर पर विकसित हो जाते हैं
- स्वयं सहायता और सहकारिता की पारम्परिक परिपाटी पुनर्जीवित हो जाती है और खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त करने की प्रक्रिया में अमीरों और गरीबों के बीच में सामाजिक सहकारिता एवं एकता के नये उदाहरण उभर जाते हैं
- खुले में शौच को समाप्त करने तथा साफ और साफ सफाई की स्थिति प्राप्त करने के अभियान और स्थानीय कार्रवाई में पुरुष, महिला, किशोर और बच्चे सभी जुड़ जाते हैं
- समुदाय के द्वारा सभी की सहभागिता से चलाये जा रहे अभियान की ओर बहुधा स्थानीय नेता, चुने हुए जन प्रतिनिधि, स्थानीय सरकारी लोग एवं गैर-सरकारी संगठन आकर्षित हो जाते हैं तथा सहायता, समर्थन एवं सहयोग प्रदान करते हैं और विचारों के प्रसार हेतु प्रोत्साहन देते हैं
- खुले में शौच से मुक्त समुदाय स्वच्छता की सीढ़ी में और ऊपर चढ़ने लगते हैं तथा स्वच्छता सम्बन्धी सामग्री के स्थानीय व्यापारियों, विक्रेताओं, मिस्त्रियों से सम्पर्क साथ कर अपने शौचालयों के निर्माण तथा डिजाइन में सुधार करने लगते हैं
- बहुधा खुले में शौच से मुक्त समुदाय इस स्तर को प्राप्त करके चुप नहीं बैठ जाते, वे अब साथ मिल कर अपने समाज को बदलना सीख चुके हैं इसलिये वे अन्य लक्ष्यों को प्राप्त करने की ओर भी उद्यत हो जाते हैं जैसे, "गांव में कोई भूखा न रहे", "कोई बच्चा स्कूली शिक्षा से वंचित न रहे और सभी बच्चे स्कूल जायें", "सभी श्रमिकों को समान मजदूरी मिले और महिलाओं एवं पुरुषों के श्रम को असमानता घटे", इत्यादि.

1990 में जब सहभागी ग्रामीण अध्ययन विधियों का प्रसार हुआ तो लोगों के द्वारा इसकी शब्दावली का तो प्रयोग किया परन्तु विधि की मूल भावना और आत्मा को विस्मृत कर दिया गया. परन्तु हम यह आशा करते हैं कि इस हस्तपुस्तिका के द्वारा प्रशिक्षकों, कार्यान्वयन कर्ताओं, प्रबन्धकों और नीति-निर्माताओं को इस प्रकार प्रेरित किया जा सकेगा कि वे तैयारी, क्रियान्वयन एवं अनुवर्ती गतिविधियों के लिये उच्च स्तर सुविधिकरण कर सकेंगे साथ ही संख्यात्मक लक्ष्य निर्धारण विधि को हतोत्साहित किया जा सकेगा क्योंकि लक्ष्य निर्धारण विधि शौचालयों की संख्या की गिनती करने तथा संख्यात्मक लक्ष्य प्राप्त करने तक ही सीमित रह जाती है और इस बात पर बहुत ध्यान नहीं जाता कि कितने समुदायों के द्वारा खुले में शौच से पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर ली गई है.

दो अति महत्वपूर्ण पूर्वापेक्षाएं

1. सुगमकर्ताओं की अभिवृत्ति एवं व्यवहार

सभी अच्छे सुगमकर्ता नहीं हो सकते. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत सुगमकर्ता के रूप में अच्छा कार्य कर पाने के लिये एक उपयुक्त अभिवृत्ति या व्यवहार की आवश्यकता होती है. यह सीख कर विकसित किया जा सकता है परन्तु कुछ लोगों की अपेक्षा अन्य में यह अधिक स्वाभाविक रूप से और सहज ढंग से विकसित हो जाता है. यह कार्य पारम्परिक सहभागी ग्राम्य अध्ययन जैसी प्रक्रियाओं के संचालन विधि से भिन्न है.

अभिवृत्ति और व्यवहार से जुड़े मुख्य बिन्दु	
क्या अवश्य करना चाहिये	क्या नहीं करना चाहिये
स्थानीय स्वच्छता की अपनी स्थिति का विश्लेषण एवं आकलन करने के लिये समुदाय के कार्य को सुगम बनायें	लोगों को शिक्षित करना, भाषण देना या उन्हें निर्देशित करना कि उन्हें क्या करना है
समुदाय को उन्हीं के द्वारा किये गये विश्लेषण के आधार पर स्थिति को समझने दें	लोगों को बताना कि क्या अच्छा है और क्या बुरा
प्रक्रिया को इस प्रकार सुगम बनाइये कि समुदाय के सदस्य स्वयं एकजुट होकर कार्रवाई करने के लिये तत्पर हो जायें	कार्रवाई के लिये विवश करना या दबाव डालना
अलग खड़े हो जाइये और इसके आगे जो कुछ होना है उसे स्थानीय नेताओं पर छोड़ दीजिये	प्रभारी बनने की चेष्टा करना
जब समुदाय के सदस्यों में अन्त:प्रेरणा जागने का समय आने वाला हो तो शांत बने रहिये और उन्हें आपस में बातचीत करने दीजिये	जब उत्तेजना से भरे समुदाय सदस्य खुले में शौच करने और अन्य स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार के लिये अपने लोगों को शर्मसार कर रहे हों तो उन्हें बीच में टोकना और रोकना
लोगों को खुले में शौच के पक्ष और विपक्ष में खुल कर तर्क बहस करने दीजिये और स्वयं तटस्थ बने रहिये. याद रखिये कि यह अन्त:प्रेरणा जागने की स्थिति के आगमन का सही लक्षण और संकेतक है	समुदाय के सदस्यों को आपस में तर्क-वितर्क करने या एक दूसरे को शर्मसार करने पर हतोत्साहित करना अथवा जल्दी ही यह निष्कर्ष निकाल लेना कि इस प्रकार की छींटाकशी नहीं होनी चाहिये क्योंकि यह सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अस्वीकार्य है
आगे आकर पहल करने तथा प्रक्रिया में पूरे मनोयोग से संलग्न हो जाने वाले लोगों की सराहना कीजिये	उभर रहे स्वाभाविक नेताओं की नजरअन्दाज करना
महिलाओं तथा निर्धन वर्ग के सदस्यों को प्रक्रिया में सहभागिता करने के लिये सदा ही प्रोत्साहित कीजिये	महिलाओं, बच्चों और अन्य जो बहुधा उपेक्षित रह जाते हैं को नजरअन्दाज करना
गरीब सदस्यों की सहायता करने के लिये पहल करने वाले सदस्यों की खुली सराहना कीजिये	लोगों की सहायता के लिये आगे आने वाले लोगों को नजरअन्दाज करना
समुदाय के सदस्यों को सरलता से बन सकने वाले शौचालयों के अभिनव डिजाइन बनाने और प्रस्तुत करने का अवसर दीजिये	शौचालय के किसी मॉडल विशेष को समुदाय पर थोपना
स्थानीय स्तर पर कार्य योजना बनाने और कार्यान्वित करने तथा स्वयं सहायता को प्रोत्साहित कीजिये	शौचालय निर्माण के लिये अनुदान का प्रस्ताव करना
निर्भीक परन्तु सतर्क रहिये	बहुत नम्र रहना, बहुत नम्रता के साथ लोगों को मनाने का प्रयास करना
हर बात को बहुत ध्यान से सुनिये	लोगों को रोकना और टोकना

व्यवहार और अभिवृत्ति बहुत ही महत्वपूर्ण हैं. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रिया को प्रारम्भ करने के लिये निर्भीकता, परानुभूति, मनोविनोद आदि के सम्मिश्रण की आवश्यकता होती है. इसके लिये आवश्यक है कि पढ़ाने या भाषण देने का प्रयास न किया जाये वरन् समुदाय को उनके पर्यावरण के कड़वे सच का सामना करने के लिये सक्षम बनाने के लिये अपना हाथ सुगमकर्ता द्वारा खींच लिया जाये.

2. संस्थाओं का संवेदनशील सहयोग

सभी संस्थाएं समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को आगे बढ़ाने के लिये उपयुक्त नहीं होती हैं. यह आवश्यक है कि संस्थागत सहयोग लचीला हो तथा सदा उपलब्ध हो.

जहां हर निर्देश ऊपर से आता है और कितना अनुदान वितरित कर दिया गया इस पर ही ध्यान केन्द्रित होता है ऐसी संस्था के जुड़ने से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की मूल भावना के ही विलुप्त हो जाने की आशंका हो जाती है. यह भी ठीक है कि सामान्य स्वच्छता अभियान भी प्रभावी हो सकते हैं यदि वे समुदाय के सशक्तिकरण पर आधारित हों न कि निर्देशों के अनुसार: अनुदान तथा संख्यात्मक भौतिक लक्ष्यों की प्राप्ति पर. ये बड़े खतरे हैं बहुत पैसा क्योंकि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये बहुत कम पैसे की आवश्यकता होती है और कर्मियों की त्वरित नियुक्तियां तथा उनका अपर्याप्त अभिमुखीकरण और प्रशिक्षण. इसके लिये एक प्रकार के अंकुश और अनुशासन की आवश्यकता होती है जो कई नौकरशाही व्यवस्थाओं में मुश्किल से मिलता है. (आगे पृष्ठ पर दी गई तालिका देखें, मूल अभिवृत्ति और व्यवहार).

उठाये जाने वाले कदमों का अनुक्रम

उठाये जाने वाले कदमों का अनुक्रम निम्नवत् हो सकता है. साथ ही उन साधनों का भी उल्लेख किया गया है जिनका उपयोग गांव के स्तर पर लोगों को प्रेरित करने तथा अभिप्रेरणा की चिंगारी जगाने के लिये किया जा सकता है. इस कार्य को करने का यही एक मात्र तरीका नहीं है परन्तु इसमें कुछ आवश्यक अवयवों को अवश्य ही रेखांकित किया गया है. स्थानीय स्थिति के अनुसार आप इसमें परिवर्तन करने के लिये स्वतंत्र हैं परन्तु क्या करना चाहिये और क्या नहीं इसका अवश्य ही ध्यान रखें क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है.

ट्रिगरिंग से पूर्व

समुदाय का चयन
परिचय तथा सहजीकरण

ट्रिगरिंग

सहभागी विधि से गांव की स्वच्छता की स्थिति का विश्लेषण
अभिप्रेरणा की चिंगारी जगाने का क्षण

ट्रिगरिंग के बाद

समुदाय के द्वारा कार्य योजना तैयार करना
अनुवर्ती भ्रमण तथा अन्य गतिविधियां

प्रसार एवं समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के आगे की यात्रा

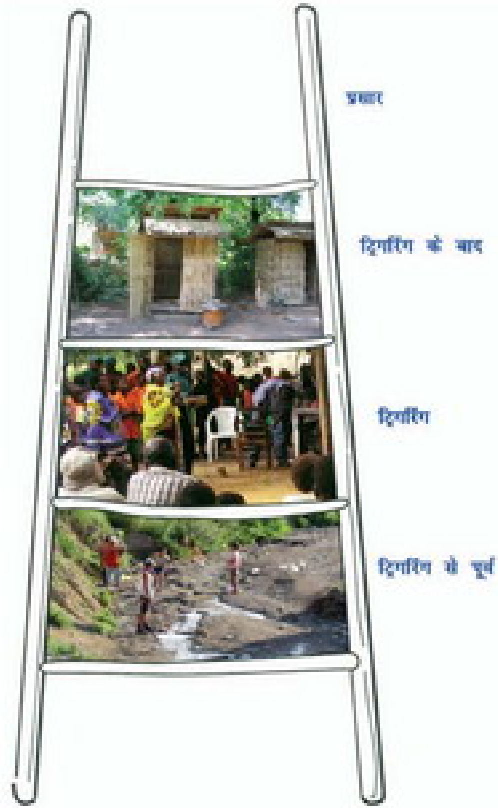

अध्याय 2
ट्रिगरिंग से पहले

समुदाय का चयन

यह एक निर्णायक चरण है

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता प्रक्रिया पर भिन्न-भिन्न समुदायों की प्रतिक्रिया अलग-अलग होती है. कुछ समुदाय तो परिवर्तन लाने के लिये तत्काल ही प्रेरित हो जाते हैं जबकि अन्य प्रारम्भ में तैयार नहीं होते या अनिर्णय की स्थिति में रहते हैं परन्तु जब उनके सामने आसपास के गांवों में आये परिवर्तन की जानकारी आती है तो उनमें भी परिवर्तन लाने के प्रति तत्परता जागने लगती है. मोटे तौर पर यह देखा गया है कि जिन गांवों में अधिक सफलता प्राप्त हुई है उनमें अधिक जोशीले नेताओं का नेतृत्व था. ऐसे नेता परम्परा की देन भी हो सकते हैं परन्तु बहुधा देखा गया है कि प्रक्रिया के दौरान नये स्वाभाविक नेता उभर कर सामने आते हैं. यह नेता किसी भी वर्ग के हो सकते हैं. गरीब, अमीर, महिला, पुरुष, युवा, समुदाय के सम्मानित सदस्य, जो कि अपने विशिष्ट कौशल से समुदाय को विभिन्न प्रकार से सेवाएं प्रदान करते हैं, जैसे दाई, धार्मिक नेता या शिक्षक आदि, इनमें से कोई भी इस प्रकार का स्वाभाविक नेता हो सकता है.

समुदाय में प्रेरणा की स्थिति को जगाने के लिये अच्छे नेतृत्व के अतिरिक्त स्थानीय सामाजिक, भौतिक एवं संस्थागत स्थितियों का अनुकूल होना भी आवश्यक होता है. अभियान संचालन के प्रति समुदायों की प्रतिक्रियाओं में बहुत अन्तर होता है (पृष्ठ 40-42 देखें). "पेट्रोल पम्प में माचिस" जैसी विस्फोटक स्थिति से लेकर "सोती हुई निष्क्रियता" की सी निराशाजनक स्थितियों तक. कहाँ शुरू करना चाहिये? इस प्रश्न का सही उत्तर ढूँढने के लिये कई लोगों एवं स्रोतों के द्वारा अनुकूल एवं चुनौतीपूर्ण स्थितियों की निम्नांकित सूची तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान किया गया है. उन जगहों में भी अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हो सकती है जिनके विषय में पहले यह समझा गया हो कि वहां तो सफलता की कोई संभावना ही नहीं है. परन्तु यह उचित ही होगा कि आप पहले उन जगहों से शुरू करें जिनमें सफलता की संभावना अधिक हो. इस प्रकार सफलता के कुछ दृष्टान्त सामने आ जायेंगे, आपको अनुभव मिल जायेगा और आपका आत्मविश्वास बढ़ जायेगा. इसके बाद इन उदाहरणों एवं स्वाभाविक नेताओं की सहायता से अभियान को अधिक कठिन स्थानों तक फैलाने का प्रयास कीजिये. यह सूची स्थानों का चुनाव करने में आपके लिये सहायक हो सकती है परन्तु हमेशा की तरह यहाँ भी आप अपने विवेक से ही निर्णय कीजिये.

खुले में शौच से मुक्त समुदायों द्वारा प्रयोग किये गये तालाब
लोमबोक के आयालेन, लाबाकन, पश्चिमी इण्डोनेशिया

उलानबातर, मंगोलिया शहर के बाहरी भाग में स्थित बस्ती - ऐसे स्थान जहाँ खनन कार्य के कारण घर और भीड़ संकुचित हो जाते हैं यहाँ खुले में शौच के स्थानों के अनुकूल स्थान के सीमित अवसर हो सकते चाहिये और समुदाय के परिवर्तन की जानी चाहिये

क. अधिक अनुकूल

- छोटी बस्ती (बड़े गाँव के बजाय छोटा पुरवा या टोला)
- शहरों और बड़ी सड़कों से दूरस्थ स्थित बस्ती
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से समरूप
- आस-पड़ोस में जंगल का न होना
- नम वातावरण जिससे मल इधर-उधर फैल कर बदबू फैलाता है
- प्रदूषित एवं असुरक्षित जलापूर्ति, जैसा कि कुछ पहाड़ी स्थानों पर पाया जाता है
- जहाँ परिवारों को शौचालय निर्माण के लिये आर्थिक सहायता की कोई योजना न तो वर्तमान में है, न ही पहले थी और न ही पास में या कोई राष्ट्रीय कार्यक्रम चल रहा है
- जहाँ फैली हुई गन्दगी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही हो
- जहाँ डायरिया का प्रकोप और बाल मृत्यु दर अधिक हो
- युवा और प्रगतिशील नेतृत्व हो
- समुदाय में सक्रिय समूह अस्तित्व में हो

कार्यक्रम नीति वातावरण

- जब परिवारों को शौचालय निर्माण की सामग्री पर आर्थिक सहायता का कोई कार्यक्रम न हो और न ही प्रस्तावित हो
- जहाँ समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान को सफलतापूर्वक चलाने के लिये सुगमकर्ता पूर्ण रूप से अभिप्रेरित, ठीक से प्रशिक्षित और उपयुक्त अभिवृत्ति और व्यवहार वाले हों और उन्हें अपने संगठन से लचीला सहयोग मिल रहा हो
- जहाँ समुदाय को प्रेरित करने के बाद अनुवर्ती प्रोत्साहन और सहयोग की व्यवस्था हो
- दिखावटी राजनैतिक नेतृत्व और मददगार स्थानीय सरकारी तंत्र

वर्तमान स्थितियां एवं परिपाटियां

- घृणा पैदा करने वाली दिखाई दे रही गन्दगी जहां मल के द्वारा फैला प्रदूषण विचलित करने वाला हो
- जहाँ एकान्तता के अभाव के कारण शौच करने में कठिनाई आती हो
- जहाँ शौच करने के लिये निजी, सुरक्षित और सुविधाजनक जगहें न हों अथवा कम हों
- जहाँ मल का कोई आर्थिक मूल्य न हो या बहुत कम मूल्य हो
- जहां स्थितियां एवं परिपाटियां अभियान क्रियान्वयन के प्रारम्भ करने तथा प्रक्रिया को आगे ले जाने के लिये अच्छे अवसर प्रदान करती हो यथा: लोग इस बात का विश्लेषण कर सकते हैं कि किस प्रकार वे अपना ही मल खाते हैं और दूसरों के मल से भरे पानी में नहाते हैं
- जहाँ वर्षा होने पर या रात के समय लोग आस पास ही मल विसर्जित कर देते हैं

भौतिक स्थितियां

- मिट्टी स्थिर है और आसानी से खोदी जा सकती है
- जल स्तर काफी नीचा है और समय-समय पर बाढ़ या भूस्खलन की आशंका नहीं है
- बस्ती की बनावट ऐसी है कि उसमें पर्याप्त जगह उपलब्ध है
- आसपास के कुएं प्रदूषित नहीं होंगे
- जलापूर्ति असुरक्षित है और उसके विषाक्त होने की आशंका है

सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियां

- बीमारियों की भयावह स्थिति, विशेष रूप से डायरिया और बाल मृत्यु
- बस्ती और समुदाय का छोटा आकार (बड़े गांव के स्थान पर टोला या पुरवा)
- सामाजिक दृष्टि से समरूप समुदाय और गहरा आपसी मेलजोल
- महिलाओं की परिस्थितियों पर गंभीर अंकुश और पर्दा जहाँ महिलाओं को अपने घर के अन्दर ही चारदिवारी में मल विसर्जन करना पड़ता है जिसका निस्तारण वे रात के अंधेरे में घर से बाहर ले जाकर और फेंक कर करती हैं
- एकजुट होकर काम करने की सुदृढ़ परम्परा
- महिलाओं की बात सुनी जाती है
- प्रगतिशील स्थानीय नेतृत्व

> **सर्वेक्षण के माध्यम से लोगों से सम्पर्क करने और परिस्थिता बढ़ाने की विविधतापूर्ण प्रक्रिया - पानीपत का तरीका**
>
> भारत के हरियाणा राज्य के पानीपत जनपद में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के 6-7 सुगमकर्ताओं के द्वारा एक गांव में सर्वेक्षण की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई. उनके द्वारा प्रत्येक परिवार से भेंट की गई और एक छोटे से प्रारूप पर उनके विवरण को अंकित किया गया. इससे बुनियादी जानकारी तो प्राप्त होती ही है साथ ही सुगमकर्ताओं को समुदाय के विषय में जानने और उनसे परिस्थिता बढ़ाने का अवसर भी मिल जाता है. सर्वेक्षण के अन्त में उन्हें पहुंचे से ही स्वच्छता के साथ पानी निकालने के लिये प्लास्टिक के बने डण्डी वाले लोटे देने से एक सद्भाव का वातावरण भी बन जाता है. इसकी सहायता से पीने का पानी निकालते समय गन्दे हाथों के उसमें डूबने से पानी के प्रदूषित होने की आशंका समाप्त हो जाती है. सर्वेक्षण के लिये दिये गये समय और सहयोग के लिये आभार के रूप में हर परिवार को यह बाल्टी भेंट की जाती है. इसके बाद समुदाय के सदस्यों को एक बैठक में भाग लेने के लिये आमंत्रित किया जाता है जो कि सामान्यतया अगले दिन के लिये निर्धारित की जाती है जब कि ट्रिगरिंग की जाती है. तीसरे दिन गांव की जल एवं स्वच्छता समिति की बैठक आयोजित की जाती है जिसमें नियोजन और कार्ययोजना तैयार करने पर विचार किया जाता है.
>
> स्रोत: डॉ. अनिल अग्रवाल, आई.ए.एस.

ख. अधिक चुनौतीपूर्ण

जहाँ निम्नांकित बातें पाई जाती हैं वहां स्थितियां अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं, विशेषकर उस समय जब इनमें से कई एक साथ होती हैं. यहाँ यह विचार करने की आवश्यकता होती है कि क्या इन स्थितियों के एक साथ होने के कारण यह समुदाय या उस स्थान को ट्रिगरिंग के लिये कम उपयुक्त बना देती है और इसलिये यहां बाद में काम करने की आवश्यकता होगी.

- बड़ी बस्ती
- मुख्य सड़कों एवं शहरों के पास
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विविधतापूर्ण
- आसपास घना जंगल
- हवादार की स्थिति जिससे मल सूख कर विघटित हो जाता है
- शुद्ध पानी के लिये अच्छी तरह सुरक्षित किये गये जल स्रोत
- परिवारों को शौचालय निर्माण की सामग्री पर आर्थिक सहायता का चल रहे, वर्तमान में या कुछ समय पहले आसपास में चल रहा राष्ट्रीय कार्यक्रम जिसमें शौचालय निर्माण के लिये परिवारों को अनुदान देने की व्यवस्था हो
- मोटे तौर पर साफ सफाई की अच्छी स्थिति
- डायरिया, रोग का कम प्रकोप और न्यून बाल-मृत्यु दर
- बूढ़े और प्रतिक्रियावादी स्थानीय नेतृत्व
- समुदाय में सक्रिय समूहों का अभाव

कार्यक्रम नीति वातावरण

- जहाँ हाल ही में या वर्तमान में शौचालय निर्माण हेतु अनुदान प्रदान करने का कार्यक्रम चल रहा है या लोगों की जानकारी के अनुसार प्रस्तावित है
- ऐसी संस्थाओं की उपलब्धता जिनके पास अनुदान देने के बड़े बजट हैं तथा शौचालय निर्माण के निर्धारित लक्ष्य एवं भौतिक रूप से निर्मित शौचालयों की संख्या के आधार पर प्रगति का मूल्यांकन करने की व्यवस्था
- ऐसी संस्थाओं के कर्मियों के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान का विरोध
- ट्रिगरिंग के बाद अनुवर्ती कार्रवाई और प्रोत्साहन के लिये संसाधन का अभाव
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता चला रही संस्था और उसके कर्मियों में पदानुक्रम आधारित कार्य संस्कृति कि केवल ऊपर से कहा जायेगा वही किया जायेगा
- बड़े कार्यक्रम जिनमें निर्माण सामग्री पर व्यय करने के लिये बहुत धन उपलब्ध है और वे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अंगीकार करने के लिये उत्सुक हैं परन्तु आर्थिक सहायता प्रदान करने के क्रम और तरीके को बदल कर अधिक लचीला बनाने के लिये तैयार नहीं है.

कारक स्थितियाँ एवं परिस्थितियाँ

- पूर्वकालिक सहायती जिस पर खुले में शौच से मुक्त होने के कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा
- मल के जल स्रोत का उपयोग जो कि मल को आगे बहा ले जाता है (नदियाँ, नदी या समुद्र में ज्वार भाटा)
- मछली पालन के लिये मल का आर्थिक उपयोग, मल का फसल और सब्जी उगाने के लिये उपयोग
- मल विसर्जन के लिये मिट्टी, सुरक्षा एवं सुविधाजनक स्थानों का होना (उदाहरण के लिये हर समय उपलब्ध जल के साथ लटकते हुए शौचालय)
- बहुत सी झाड़ियाँ, वृक्ष और ऐसी भूआकृति कि मल विसर्जन के लिये अच्छी ओट मिल सके

भौतिक स्थितियाँ

- ठोस पथरीली जमीन जिसमें खुदाई करना कठिन
- बहुत ही भुरभुरी और ढह जाने वाली भूतल
- बस्तियों की इस प्रकार की संरचना कि उसमें खाली जगह ढूँढ़ना कठिन और शौचालय के गड्ढे के शीघ्र ही भर जाने की आशंका
- शौचालयों के कारण पास के कुँओं के प्रदूषित हो जाने का जोखिम
- शुष्क क्षेत्र जिसमें मल जल्दी सूख कर पाउडरीकृत और हानिरहित हो जाता है, उदाहरण के लिये गोबी रेगिस्तान
- जहाँ बिना दिखाई दिये नियमित रूप से शौच करने के अवसर उपलब्ध हैं, जैसे कि जब पानी लाने के लिये लोग दूर जाते हैं, या स्कूल जाते हैं
- जहाँ खेत बस्ती से काफी दूर होते हैं

सामाजिक स्थितियाँ

- जहाँ लोग बहुत सम्पन्न हों तथा सामूहिकता बहुत कम हो
- सामाजिक रूप से बँटा हुआ समाज जिसमें बहुत कम एका हो
- जहाँ एकजुट होकर काम करने की परम्परा बहुत कमजोर हो
- जहाँ महिलाओं की बात शायद ही कभी सुनी जाती हो
- जहाँ एक ही शौचालय का परिवार के सभी सदस्यों के द्वारा उपयोग वर्जित हो
- जहाँ अलग-अलग मौसम में बाहर से लोगों का आना-जाना लगा रहता हो और जनसंख्या अस्थिर हो उदाहरण के लिये ऋतु विशेष में बाहर से मजदूरी का आना, खानाबदोश जनजाति, गरीब सीमान्त किसान जो वर्ष में कभी-कभी मजदूरी करने के लिये बाहर चले जाते हैं
- जहाँ काश्तकारों का अनुपात अधिक हो और भू-स्वामी कम

ग. अधिक अनुकूल या चुनौतीपूर्ण स्थितियों पर निर्भर होना

- नयी बस्तियाँ
- सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्य एवं आस्था और विश्वास

यदि चयन करने का अवसर हो तो यह अच्छा होगा कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान को ऐसे गाँवों से प्रारम्भ किया जाये जिनमें अधिक अनुकूल स्थितियाँ विद्यमान हों. यद्यपि ऐसे कई उदाहरण सामने हैं जिनमें चुनौतीपूर्ण स्थितियों के क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त हुई है. ऐसे गाँवों में भी जहाँ कार्यक्रम के तहत शौचालय निर्माण के लिये आर्थिक सहायता प्रदान करने की व्यवस्था थी. चुनौतीपूर्ण स्थितियाँ तो बस ऐसी स्थितियाँ हैं जिनमें चुनौती छिपी हुई है. चुनौतियों का सामना किया जा सकता है और उन्हें पार पाया जा सकता है. कई सामग्री का उल्लेख तो बाद में किया जायेगा परन्तु पाठक की सुविधा के लिये कुछ मुख्य सुझाव यहाँ तालिका में दिये जा रहे हैं (पृष्ठ 20-21).

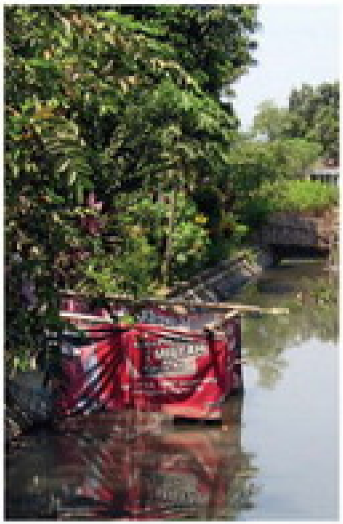

इण्डोनेशिया में नदी या नहर में शौच करना सामान्य परिपाटी है. उसी पानी का इस्तेमाल नहाने और बर्तन धोने के लिये भी किया जाता है

ट्रिगरिंग के लिये स्थिति मूल्यांकन से पहले परिचय और मेल-जोल बढ़ाकर घनिष्ठता स्थापित करना

ट्रिगरिंग के लिये तैयारी करने के कई तरीके हैं और विभिन्न प्रकार के अनुभव परन्तु विभिन्न अवस्थाओं गये तरीकों और अनुभवों को अपेक्षित मात्रा में अभिलेखीकृत नहीं किया गया है. इस पर गंभीरता से विचार करने और समीक्षा करने की आवश्यकता है. कुछ साधारण बातें भी हैं जिन पर विचार करना होता है जैसे बैठक के लिये उपयुक्त तिथि, स्थानों और समय का चयन. जहाँ प्रायोजक गैर-सरकारी संस्था पहले से ही समुदाय के साथ कार्यरत है वहाँ परिचय और घनिष्ठता स्थापित करने के लिये अधिक समय लगाने की आवश्यकता नहीं होगी. यदि कोई गैर-सरकारी संस्था पहले से कार्यरत नहीं है तो समुदाय के सदस्यों को अपने भ्रमण का कारण बताने के लिये आपको अधिक समय लगाना पड़ सकता है.

सावधानी से की गई तैयारी यह सुनिश्चित करने के लिये बहुत आवश्यक है कि ट्रिगरिंग की बैठक में समुदाय के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व हो सके. ऐसा हो सकता है कि इस प्रकार की बैठकों में केवल विशेष या महिलाएं और बच्चे अथवा बस्ती के किसी मोहल्ले विशेष से ही लोग भाग लेने आयें. ऐसा हो सकता है कि ट्रिगरिंग बैठक में अलग-अलग बस्तियों से पुरुष, मध्य/उच्च वर्ग के लोग और समुदाय के अधिक प्रभावशाली सदस्य उपस्थित हों या न हों. यदि समाज के सभी वर्गों के लोग बैठक में उपस्थित नहीं होंगे तो ट्रिगरिंग के परिणामस्वरूप सबके द्वारा एकजुट होकर कार्ययोजना को कार्यान्वित करने की संभावना कम हो जायेगी.

सीएलटीएस के विभिन्न चरणों के लिये एक प्रतीकात्मक समय सारणी

(शौच की अनुभवी गतिविधियों को समझ से सम्बन्ध करना हमेशा महत्त्वपूर्ण होता है. स्थानीय स्थितियों पर बहुत कुछ निर्भर होता है तथा एक स्थान के लिये जो उपयुक्त है और दूसरे स्थानों के लिये जो उपयुक्त पाया जायेगा उसमें बहुत अन्तर हो सकता है)

चरण	सुझावात्मक समयावधि	स्टाफ तथा अन्य बातें	अतिरिक्त टिप्पणियाँ
ट्रिगरिंग से पहले तैयारी	जिन गाँवों में गैर-सरकारी संस्थाएँ/ सरकारी संस्थाओं के द्वारा कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं उसमें आधे दिन से लेकर एक सप्ताह तक का समय लग सकता है. एक या दो बार गाँव का भ्रमण करना होगा चाहिये	सामान्यतया कम से कम एक या दो कर्मियों या कार्यक्रम से पहले गाँव का भ्रमण करना जरूरी है ताकि सुगमकर्ताओं के भ्रमण की तिथियों एवं बैठक के स्थान का निर्धारण किया जा सके और समुदाय को भ्रमण के उद्देश्य से अवगत कराया जा सके	स्थानीय नेताओं, गाँव के मुखिया से मिलें गाँव के सभी गुटों का भ्रमण करें जिससे गाँव के आकार, जनसंख्या, सबसे गन्दे क्षेत्र और आर्थिक सहायता की उपलब्धता, यदि कोई हो, की जानकारी हो सके. देखें कि क्या गाँव समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये अनुकूल है अथवा चुनौतीपूर्ण. जिस दिन गाँव का हाट हो या कहीं शादी हो या कोई शोक हो उस दिन बैठक नहीं रखनी चाहिये.
ट्रिगरिंग	पूरी प्रक्रिया एक ही दिन में सम्पन्न होनी चाहिये (3 से 5 घण्टों में).	कम से कम 3-4 और अधिकतम 5 सुगमकर्ताओं के दल के द्वारा ट्रिगरिंग सम्पन्न की जानी चाहिये परन्तु समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रशिक्षण कार्यशाला में अधिक सुगमकर्ता हो सकते हैं	खुले दिमाग से प्रक्रिया को शुरू करने का प्रयास कीजिये और पहले से निर्धारित विशिष्ट धारणा या कार्यविधि अथवा अपेक्षित परिणाम को लेकर न चलिये. यदि किसी कारण से समुदाय में प्रेरणा की चिंगारी न जागे तो भी वहाँ से प्रसन्नता के साथ ही विदा लीजिये.
ट्रिगरिंग के बाद	तीन सप्ताह से लेकर तीन माह की अवधि के अन्दर किसी भी समय गाँव को खुले में शौच से मुक्त हो जाना चाहिये. 6 माह से 1 वर्ष की अवधि बहुत लम्बी है. जो सबसे महत्त्वपूर्ण बात लोगों के मन में डाल जानी चाहिये वह यह है कि "हम अब एक दूसरे का मल नहीं खायेंगे". सभी इस घातक स्थिति से बाहर निकलने का प्रयास करें	ट्रिगर किये गये गाँव में स्थानीय स्थिति को देखते हुए पहले सप्ताह में 1 या 2 बार भ्रमण एक या दो कर्मियों द्वारा किया जायेगा. इसके बाद कई अवसरों पर भ्रमण इस प्रकार किया जायेगा कि समुदाय को प्रोत्साहित किया जा सके और उसकी सहायता की जा सके. लेकिन भ्रमण बहुत जल्दी- जल्दी नहीं किये जाने चाहिये. याद रहे कि समुदाय को ही आगे आना है और बाहरी सहायता पर निर्भर नहीं रहना है	सहयोग कीजिये, प्रोत्साहित कीजिये परन्तु उन्हें दबाइये नहीं. यदि आवश्यक हो तो स्वाभाविक नेताओं, समुदाय के सदस्यों को समीप गाँवों या स्थानीय बाजारों का भ्रमण करने की व्यवस्था कीजिये जहाँ स्वच्छता की सफलता दिखती हो. खुले में शौच से मुक्त हो गये गाँवों के स्वाभाविक नेताओं को अतिरिक्त सुगमकर्ताओं के रूप में काम लायक शौचालयों का प्रसार करने के लिये आमंत्रित कीजिये.

चुनौतीपूर्ण स्थितियों से कैसे निपटा जाये
कुछ सुझाव

चुनौतीपूर्ण या अनुकूल न होने का अर्थ यह नहीं है कि इस प्रकार के गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का कार्यान्वयन करने का प्रयास नहीं करना चाहिये. वास्तव में कम्बोडिया, नेपाल, मंगोलिया, इथियोपिया, बोलीविया के जिन गांवों में पहली बार या प्रशिक्षण कार्यशालाओं के दौरान समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को क्रियान्वित कर सफलतापूर्वक ट्रिगरिंग की गई वे सभी "अधिक चुनौतीपूर्ण" गांव थे. दूसरे शब्दों में इन गांवों में 'सरकार' के द्वारा संचालित स्वच्छता की पारम्परिक विधि के अन्तर्गत शौचालयों के निर्माण के लिये परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान की गई थी. परन्तु फिर भी इनमें से कई गांवों में खुले में शौच की प्रथा व्यापक रूप से फैली हुई थी और कई शौचालयों का उपयोग नहीं किया जा रहा था. दिलचस्प बात यह है कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के क्रियान्वयन के बाद इनमें से अधिकतर गांवों के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लिया गया. ट्रिगरिंग के लिये सुगमकर्ता का अच्छा कौशल और स्थानीय परिस्थिति को रखते हुए स्वविवेक से निर्णय लेना अत्यन्त महत्वपूर्ण है.

इस प्रकार के गांवों में ट्रिगरिंग के लिये कुछ सुझाव इस प्रकार हैं:

- समुदाय के सदस्यों को अपना और अपने दल के सदस्यों का परिचय इस प्रकार दीजिये कि आप सब सीखने आये हैं (स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार, खुले में शौच के कारणों एवं प्रथा का अध्ययन करने) न कि स्वच्छता के अधिकारियों के रूप में शौचालयों के आर्थिक सहायता के साथ या इसके बिना शौचालय निर्माण को बढ़ावा देने के लिये.

- समुदाय को बिल्कुल स्पष्ट कर दीजिये कि आप लोगों से खुले में शौच करना बन्द करने के लिये या उनके स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार को बदलने के लिये अनुरोध करने के लिये नहीं आये हैं. यह भी पूरी तरह स्पष्ट कर दीजिये कि आप आर्थिक सहायता प्रदान करने वाली किसी भी संस्था से जुड़े नहीं हैं और न ही किसी प्रकार विशेष के शौचालय निर्माण को बढ़ावा देने के लिये हैं.

- ट्रिगरिंग की प्रक्रिया के दौरान (विशेष रूप से जब घरेलू शौचालय निर्माण के लिये आर्थिक सहायता के विषय में पूछें) उन्हें नम्रतापूर्वक बता दीजिये कि आप न तो स्वच्छता की सामग्री बेचने वाले हैं और न ही उनकी आदतों को बदलने के लिये प्रयास करने वाले हैं. वे अगर चाहें तो खुले में शौच करना जारी रख सकते हैं. कुछ खास स्थितियों में अन्य संस्थाओं द्वारा पिछले वर्षों में मुफ्त में दिये गये ऐसे शौचालय उन्हें दिखा सकते हैं जिनका कभी उपयोग ही नहीं किया गया. उन्हें यह बता दीजिये कि आप को स्पष्ट है कि शौचालयों का प्रयोग न करने तथा खुले में शौच जारी रखने का निर्णय उनका था और इस स्थानीय निर्णय में आप कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहते. वे खुले में शौच करते रहने के लिये स्वतंत्र हैं. आप तो केवल समुदाय के द्वारा खुले में शौच करते रहने के निर्णय के कारणों को समझना चाहते हैं. और यही आप उनसे समझ कर सीखना चाहते हैं.

- यदि ट्रिगरिंग की प्रक्रिया समाप्त होने के बाद आप यह पाते हैं कि समुदाय में एकजुट होकर खुले में शौच से मुक्त होने के लिये कुछ करने का जोश नहीं आया है तो उनसे पूछिये कि क्या आप उनकी एक फोटो खींच सकते हैं, या उनके गांव के नाम को अपनी रिपोर्ट में इस टिप्पणी के साथ लिख सकते हैं कि गांव के लोगों ने यह फैसला किया है कि वे एक दूसरे का मल खाते रहेंगे और खुले में शौच करते रहेंगे. यह अच्छा ही है. वे क्यों अपनी सदियों पुरानी खुले में शौच करने की आदत को बदलने का प्रयास करें? हो सकता है कि वे कहें कि वे शीघ्र ही खुले में शौच करना बन्द कर देंगे. उन्हें बता दीजिये कि वे खुले में शौच करते रहने के लिये स्वतंत्र हैं और वे आपको गलत न समझें तथा किसी दबाव में न आयें.

- समुदाय को ही अपने निर्णय करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये. उनका सशक्तीकरण कीजिये. उन्हें तय करने दीजिये कि क्या अच्छा है और क्या बुरा. बाहर से आने वालों से उन्हें प्रभावित नहीं होना चाहिये चाहे बाहरी व्यक्तियों के द्वारा नकद राशि या मुफ्त सामग्री ही क्यों न दी जा रही हो. गांव के संदर्भ में उचित निर्णय लेने के लिये स्थानीय लोगों का विवेक ही सबसे उपयुक्त होता है.

- अधिकतर मामलों में आपको समुदाय के तात्कालिक प्रतिरोध का सामना करना पड़ेगा. जो लोग अगले दिन खुले में शौच करने जायेंगे उनसे अपने हाथ खड़े करने को कहिये. अगर कोई हाथ खड़ा न करे तो पूछिये कि अगर वे खुले में शौच नहीं करेंगे तो क्या करेंगे. कुछ लोग कहेंगे कि उन्हें सरल गड्ढे वाले शौचालय बनाने में कुछ समय लगेगा. हो सकता है कि कुछ लोग कहें कि जब अगली बार वे बाहर जायेंगे तो अपने साथ बेल्चा ले जायेंगे तथा छोटा गड्ढा खोद कर उसमें शौच करेंगे तथा उसके बाद उसे मिट्टी से ढक देंगे. पूछिये कि क्या सभी लोग ऐसा करेंगे? अगर अगले दिन से सभी ऐसा करने लगेंगे तो उसका क्या तात्कालिक प्रभाव होगा? उन्हें प्रोत्साहित कीजिये और उनके द्वारा उत्तर देने के लिये ताली बजा कर उनका अभिवादन कीजिये.

- हर बार जब समुदाय के किसी सदस्य के द्वारा खुले में शौच मुक्त होने के लिये किसी नई पहल का उल्लेख किया जाता है तो सभी को उस समय ताली बजाने के लिये कहिये. जोर से ताली बजाइये और समुदाय के सदस्यों को भी जोर से ताली बजाने के लिये प्रोत्साहित कीजिये. हो सकता है कि पहल करने वालों के बाद कुछ और लोग भी उत्साहित हो जायें और अपने हाथ उठा दें. ताली बजा कर उनका भी अभिवादन कीजिये. पूछिये कि क्या समुदाय के और कुछ लोग कुछ अलग तरीके से करने के बारे में सोच रहे हैं?

- इसकी संभावना बहुत अधिक है कि भीड़ में से कोई निकल कर सामने आये और कहे कि वह एक सरल गड्ढे वाला शौचालय बनायेगा. पूछिये कि वह कब ऐसा करेगा. पूछिये कि क्या कोई सरल गड्ढे वाले शौचालय के निर्माण की प्रक्रिया को देखने के लिये आना चाहेगा? खूब जोर से ताली बजाइये और प्रोत्साहित कीजिये.

- जिनके द्वारा शौच पहल करने का साहसपूर्ण निर्णय लिया गया है उन सभी को सामने आकर खड़े होने के लिये कहिये. उनसे पूछिये कि क्या खुले में शौच बन्द करने और तत्काल कार्यवाई करने के लिये तत्पर हुए लोगों के समूह की आप फोटो खींच सकते हैं? उन्हें हाथ खड़ा करने को कहिये और उनकी एक फोटो खींचिये. इसके बाद पूरे समुदाय की फोटो खींचने की अनुमति लीजिये जिसमें शेष बचे अधिक संख्या वाले लोग भी हों जिन्होंने खुले में शौच करते रहने का निर्णय लिया है और वह छोटा समूह भी जिसके द्वारा खुले में शौच बन्द करने का निर्णय लिया गया है. बीच में हस्तक्षेप मत कीजिये. उन्हें इस बात को स्वयं सुलझाने दीजिये.

- हो सकता है कि प्रक्रिया के दौरान इस समय आपका सामना किसी ऐसे व्यक्ति से हो जाये जो कि किसी स्थानीय राजनीतिक दल या दाता या आर्थिक सहायता अथवा शौचालय निर्माण की सामग्री के वितरण कार्यक्रम को लागू करने वाले किसी सरकारी/गैर-सरकारी संगठन से जुड़ा रहा हो और समुदाय को स्व-अभिप्रेरित होने से रोक रहा हो. सामान्यतया ऐसे लोगों के निजी स्वार्थ होते हैं और समुदाय को अपने वश में करना चाहते हैं जिसके लिये वे मुफ्त की सामग्री आदि का लालच देकर उन्हें अपनी ओर खींचते हैं. ऐसे लोगों से सावधानी के साथ व्यवहार कीजिये. उन्हें अलग ले जाइये और गंभीर परिचर्चा में उलझा दीजिये. उनसे कहिये कि उनके पास बहुत मूल्यवान जानकारी है और वे आपको गांव की स्वच्छता की स्थिति तथा स्थानीय परिस्थितियों को समझने में बहुत सहायक हो सकते हैं. ट्रिगरिंग के स्थान से दूर उनसे चाय, सिगरेट पीने के लिये कहिये और उनके द्वारा जो कुछ भी कहा जाये उसे ध्यान से सुनिये तथा उसे कागज पर लिखते भी जाइये.

- सबसे सरल तरीकों में से एक तो यह हो सकता है कि इस प्रकार के चुनौतीपूर्ण गांवों के पास के किसी ऐसे गांव में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान को चलाइये जहाँ आर्थिक सहायता के कारण लोगों की मानसिकता प्रभावित नहीं हुई है. एक बार जब यह गांव खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त हो जायेगा तो अधिक चुनौतीपूर्ण गांव को भी उसी राह पर चलाना सरल हो जायेगा.

- अपने विवेक का प्रयोग करते हुए बहुत सी अन्य अभिनव बातों का प्रयोग स्वतंत्रता से कीजिये. यह बहुत कठिन नहीं होगा.

अध्याय 3
ट्रिगरिंग

कई देशों में सैकड़ों गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत समुदायों को सफलतापूर्वक प्रेरित करने के लिये ट्रिगरिंग की जा चुकी है. यह अच्छा होगा कि ऐसे गांवों में ट्रिगरिंग की पहल की जाये जहाँ स्वच्छता की स्थिति में सुधार लाने के लिये पहले कोई प्रयास नहीं किये गये हैं. इस प्रकार के अनछुए गांवों में अनुभवी सुगमकर्ताओं के द्वारा ट्रिगरिंग का काम अच्छे ढंग से सफलतापूर्वक किया जा सकता है.

समुदाय द्वारा स्वच्छता स्थिति मूल्यांकन और विश्लेषण को सुगम बनाना समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की चिंगारी जगाने के लिये आधार

जब समुदाय के द्वारा खुले में शौच की सच्चाई और इसके प्रतिकूल प्रभावों का प्रत्यक्ष सामना किया जाता है तो उनमें घृणा और शर्म के तीव्र भाव जागते हैं. यही ट्रिगरिंग का आधार है. आधारभूत सिद्धान्त यह है कि कोई भी लोग यह जानने के बाद कि खुले में शौच के कारण वे एक दूसरे का मल खा रहे हैं बिना विचलित हुए नहीं रह सकते. सुगमकर्ता का लक्ष्य है समुदाय की इस प्रकार सहायता करना कि वह स्वयं यह समझ सके कि खुले में शौच के कितने भयानक दुष्परिणाम होते हैं और एक दूषित वातावरण बनता है. इसके बाद यह समुदाय पर ही निर्भर है कि वह निर्णय करे कि इस समस्या से कैसे निपटना है और क्या कार्यवाही करनी है.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर संबंधित में आयोजित एक
व्यवहारिक प्रशिक्षण के दौरान मवान केन्या के विलिंग ओलियाने समुदाय
को पीने के पानी को पीने के लिये प्रस्तुत करने से पहले उसे मल से
संदूषित करते हुए.
छायांकन: सैमुअल मुसियामी, प्लान केन्या

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की चिंगारी जगाने के लिये पृष्ठभूमि और कुछ मूल बातें

समाज के कुछ वर्ग ऐसे होंगे जो अपने ही विशेष कारणों से परिस्थिति को बदलना चाहेंगे. उदाहरण के लिये,

- शौचालय वाले परिवार जिन्हें जब यह स्पष्ट हो जाता है कि बिना शौचालय वाले अन्य लोगों की खुले में शौच की आदत से उन्हें भी संक्रमण का खतरा है
- भूमिहीन लोगों को बहुधा दूसरों की भूमि पर खुले में शौच करने का दोषी माना जाता है और उन्हें गाली दी जाती है
- खुले में शौच की प्रथा होने पर एकान्तता न मिलने से सबसे अधिक कष्ट महिलाओं एवं जवान बालिकाओं को उठाना पड़ता है. बहुधा पौ फटने से पहले या रात का अंधेरा हो जाने पर ही निपटने के लिये उन्हें बाध्य होना पड़ता है.
- धार्मिक नेताओं को स्पष्ट हो जाता है कि साफ कपड़े पहनने का कोई लाभ ही नहीं हो सकता यदि मानव मल पर बैठी मक्खियाँ उनके वस्त्र गंदे कर रही हों.

समुदाय के इन वर्गों की प्रबल भावनाएं पूरे गाँव को खुले में शौच से मुक्त करने के लिये एकजुट होकर उपयुक्त कार्यवाही करने हेतु महत्वपूर्ण उत्प्रेरक हो सकती हैं. इन लोगों को इकट्ठा करके एक प्रभावशाली समूह बनाया जा सकता है जो कि अन्य लोगों को भी व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है.

विशेष सुझाव

सुगमकर्ता की अभिवृत्ति और कार्यविधि ही सफलता की कुंजी है. सुगमकर्ता में यह भी कुशलता होनी चाहिये कि वह समुदाय को स्पष्ट कर सके कि जो अभ्यास कराया जा रहा है उसका उद्देश्य यह नहीं है कि कोई बाहरी व्यक्ति खुले में शौच बन्द कराने का प्रयास कर रहा है वरन् यह है कि समुदाय के सदस्य स्वयं ही अपनी स्वच्छता की स्थिति का विश्लेषण करें और अपने आप उचित निर्णय लें. समुदाय के सदस्य खुले में शौच करते रहने और एक दूसरे के मल का सेवन करते रहने का निर्णय भी यदि लेते हैं, तो वह भी सुगमकर्ता को स्वीकार है. परन्तु यदि समुदाय के सदस्य सहमत हों तो उनके गाँव का नाम रिपोर्ट में दर्ज कर लिया जायेगा तथा जो नई सीख मिलती है उसे भी लिख लिया जायेगा.

नीचे दी गई विधियों के अलावा नई विधियों को विकसित करने और प्रयोग में लाने के लिये अपने को स्वतंत्र समझिये

यद्यपि प्रयोग की जाने वाली विधियों का अनुक्रम महत्वपूर्ण नहीं है परन्तु फिर भी गाँव के अनुप्रस्थ भ्रमण से शुरू करना बहुत उपयोगी सिद्ध होता है.

यमन और कोई सोशियल फण्ड फॉर डेवलपमेंट की महिला सुगमकर्ता यमन के इब्ब गवर्नरेट के गाँवों की महिलाओं के बीच समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग करती हुईं

सारे यमन, अफगानिस्तान और अन्य मुस्लिम देशों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रत्येक ट्रिगरिंग टीम में महिला सुगमकर्ता का होना आवश्यक है. यदि अनुकूल वातावरण सुनिश्चित किया जाता है तथा ट्रिगरिंग की बैठक घरों में या उन स्थानों में आयोजित की जाती है जहाँ पुरुष उन्हें न देख सकें तो महिलाएं खुल कर बहुत सक्रिय रूप से प्रतिभाग करती हैं, अपने विचार व्यक्त करती हैं और खुले में शौच के विरुद्ध एकजुट होकर कार्यवाही करने की पहल भी करती हैं

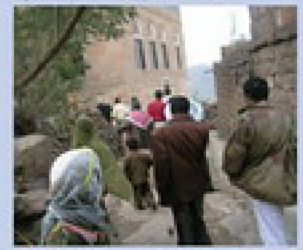

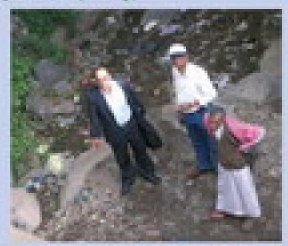

अभी मल को ढूँढने की खोज में झाड़ियों में भी चलना? अथवा ट्रिगरिंग के बाद समुदायी खुले में शौच के स्थानों के अनुक्रम भ्रमण के लिये पैदल चलते हुए

छात्र बच्चों को खुले में शौच के सभी स्थान बहुत ठीक से पता है. इस एकत्रित भाव में खुले में शौच की जगहों का अनुक्रम भ्रमण करते हुए बच्चे

शुरुआत करने के लिये ऐसे प्रश्नों के प्रत्युत्तर में उनसे हाथ खड़ा करने का अनुरोध कीजिये: "आज किसने खुले में शौच किया?", "क्या आज आपने अपने गाँव में मानव मल को देखा और उसकी बदबू को महसूस किया?"

हिमाचल प्रदेश के एक गाँव में ट्रिगरिंग के दौरान लोग सच्चाई को छिपाना चाहते थे और उन्होंने कहा कि यहां कोई भी खुले में शौच नहीं करता. जब उनसे पूछा गया कि क्या वे खुले में शौच करते हैं तो कोई हाथ खड़ा नहीं हुआ. तब उनसे कहा गया कि वे अपनी आँखें बन्द कर लें और अपने बच्चों के बारे में सोचें. उनसे यह चिंतन करने के लिये कहा गया कि क्या उनमें से कोई ऐसा है जिसे लगता है कि खुले में शौच से उनके बच्चों पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है. उनसे फिर एक बार पूछा गया कि क्या उनके गाँव में खुले में शौच करने की परिपाटी है. यदि ऐसा है तो उनसे हाथ खड़ा करने के लिये कहा गया. तब 50 में से 30 ने हाथ खड़े कर लिये.

स्रोत: सतीश भूषण पाण्डे, नॉलेज लिंक्स

वाहन चालक और उनके सहायक भी ट्रिगरिंग में मददगार हो सकते हैं. हिमाचल प्रदेश के एक गाँव में समुदाय ने यह दावा किया वे खुले में शौच से मुक्त हैं, यद्यपि खुले में शौच करना सभी की सामान्य आदत थी. वाहन चालक के युवा सहायक को एक सुगमकर्ता द्वारा यह कहने के लिये प्रेरित किया कि उसे तुरन्त मल विसर्जन की आवश्यकता हो गई है. तब उसने एक ग्रामवासी से पूछा कि गाँव में खुली जगह कहाँ है जहाँ वह निवृत हो सकता है. ग्रामवासी ने चुपचाप एक जगह की ओर इशारा किया और उससे कहा कि वह वहाँ जाकर शौच कर सकता है. उसने वाहन चालक से अनुरोध किया कि वह इस बात का जिक्र किसी से न करे. वाहन चालक का सहायक वहाँ गया और उसने जगह-जगह मल बिखरा हुआ देखा तथा इस बात की जानकारी सुगमकर्ता को दे दी. सुगमकर्ता अनुक्रम भ्रमण के लिये उसी स्थान की ओर चल पड़ा. एक युवा महिला ने ही उसके साथ जाना स्वीकार किया तथा अन्य सभी ने साथ जाने से मना कर दिया. इस महिला की हाल ही में शादी हुई थी और एक सप्ताह पहले ही वह गाँव में आई थी. जो कुछ उसने देखा उससे वह भयभीत हो गई - खड़ी ढलान वाली जमीन पर मल के विशाल ढेर. देखते ही वह उल्टी करने लगी और घृणा से भर गई. मल के ढेर के पास ही पानी का स्रोत था जिससे पानी पम्प के द्वारा टैंक में भेजा जाता था जहाँ से वह गुरुत्व आधारित वितरण प्रणाली की सहायता से घरों को वितरित किया जाता था. उसने कहा कि जो भी लड़कियाँ गाँव में शादी करके आयेंगी उन्हें वह प्रेरित करेगी कि वे इस बात पर जोर दें कि उनके लिये शौचालय बनवाये जायें. उसने समुदाय के लोगों को इस सच्चाई को छिपाने लिये दोषी कहा.

स्रोत: के.पी. शुक्ला, नॉलेज लिंक्स

खुले में शौच के स्थानों का अनुक्रम भ्रमण

अनुक्रम भ्रमण प्रोत्साहित करने के लिये सबसे प्रभावी साधनों में से एक है. अनुक्रम भ्रमण के दौरान समुदाय के सदस्यों को घोर घृणा और शर्म का जो अनुभव होता है उसके कारण उनमें तत्काल खुले में शौच जाना बन्द करने और गन्दी जगहों की सफाई करने की तीव्र इच्छा पैदा हो सकती है. यद्यपि गन्दगी और मल को लोग रोज ही देखते हैं परन्तु वे समस्या के प्रति उसी समय जागते दिखाई देते हैं जब किन्हीं बाहरी व्यक्तियों के द्वारा उन्हें वैसी गन्दगी को देखने और स्वच्छता की स्थिति का स्वयं विश्लेषण करने के लिये प्रेरित किया जाता है.

अनुक्रम भ्रमण का अर्थ है समुदाय के सदस्यों के साथ गाँव के एक छोर से दूसरे छोर तक टहलना, हर चीज का बारीकी से साथ अवलोकन करना, प्रश्न पूछते रहना और समुदाय के सदस्यों को ध्यान से सुनना. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये अनुक्रम भ्रमण के दौरान आप उन जगहों को पहचान कर सकते हैं जिनका प्रयोग खुले में शौच के लिये किया जाता है. साथ ही रास्ते में पड़ने वाले विभिन्न प्रकार के शौचालयों को भी आप देख सकते हैं. समुदाय के साथ यह समझने का प्रयास कीजिये कि "असफल शौचालय" किसे कहा जायेगा. उन शौचालयों को देखिये जिनके गड्ढे ढके नहीं हैं या जिनसे मल बह कर बाहर चला आता है. खुले गड्ढे वाले शौचालय के छेद में टॉर्च से रोशनी करके समुदाय के कुछ सदस्यों को उसमें झाँक कर देखने और जो देखा उसका वर्णन करने के लिये कहिये. पूछिये कि क्या वहाँ मक्खियाँ पैदा हो रही हैं. और यदि ऐसा है तो क्या गड्ढे को खुला रखना सुरक्षित है.

कुछ समय तक खुले में शौच की जगह पर खड़े रहना, बदबू भरी हवा में सांस लेना तथा मक्खी और सूखे मल के अधिक ढेरों को देखना. यदि लोग आपको वहाँ से हटा कर आगे कहीं और ले जाना चाहें तो उनके शर्मिंदा हो जाने के बावजूद वहीं पर रुकने पर बल दीजिये. समुदाय के सदस्यों में एक साथ घृणास्पद दृश्य और असह्य बदबू की अनुभूति तथा बाहरी व्यक्तियों के सामने उनकी व्यक्तिगत गन्दी आदत का सामने आना इतना बड़ा आघात होता है कि इससे समुदाय एकजुट होकर तत्काल कुछ करने के लिये उद्यत हो जाता है.

सुझाव

अनुक्रम भ्रमण में:

- ऐसे प्रश्न पूछिये: कौन से परिवार शौच के लिये किस जगह का प्रयोग करते हैं? महिलाएं शौच के लिये कहाँ जाती हैं? रात को या डायरिया के प्रकोप के चलते आपातकालीन स्थिति में क्या होता है? आदि. कभी-कभी लोग यह भी बता देते हैं कि कौन सा मल किसका है.
- खुले में शौच की जगहों में रुक कर यह दिखाइये, बदबू वहाँ जितनी अधिक देर तक रह सकें रहिये. प्रश्न पूछते रहिये और समुदाय के सदस्यों को अपने ही मल की बदबू भरी हवा में सांस लेने दीजिये. उन्हें किसी बाहरी आदमी को वहाँ लेकर आने के लिये घोर शर्म का अनुभव भी करने दीजिये. इससे उनके मन में घृणा और शर्म के प्रबल भाव जागेंगे और इससे उनमें इस समस्या से निपटने के लिये तत्काल कुछ करने की प्रबल इच्छा पैदा हो जायेगी. यदि वहाँ मल के ढेर नहीं दिखाई दे रहे हैं तो हो सकता है कि डायरिया फैला हो जिसके कारण मल पानी जैसा हो जाता है और मिट्टी उसे सोख लेती है या वर्षा के कारण मल पानी के साथ बह गया हो.
- मल पर मंडराती मक्खियों की ओर ध्यान आकर्षित कीजिये. दिखाइये कि किस प्रकार मुर्गियाँ मल पर चोंच मार कर उसे खा रही हैं. पूछिये कि कितनी बार उनके और उनके बच्चों के भोजन पर मक्खियाँ बैठती हुई पाई जाती हैं और क्या वे इस प्रकार मल खाने वाली मुर्गियों को खाना चाहेंगे?
- ठोस और तरल मल की पहचान कीजिये. पूछिये कि सभी मल का आकार और स्वरूप क्यों नहीं होता? तरल मल पानी के आसपास अधिक पाया जाता है जहां बच्चों और बड़ों दोनों में संक्रमक रोगों के फैलने का अधिक खतरा होता है.

पाकिस्तान के नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रोविन्स के सवात जिले के एक गाँव में अनुक्रम भ्रमण के दौरान एक समूह ने घरों के बहुत पास ही बहुत से ठोस और तरल मल को बिखरा हुआ पाया. बाद में भ्रमण कर रहे समुदाय के एक सदस्य ने बताया कि गाँव में डायरिया व्यापक रूप से फैला हुआ है जिसके कारण बच्चे और युवा शौच के लिये दूर स्थित जगहों पर नहीं जा पा रहे हैं और इस आपातकालीन स्थिति में घरों के पास बैठ कर ही शौच करने को विवश हो गये हैं. इससे साफ तौर पर पता चला कि गाँव में आधे से अधिक लोग डायरिया से पीड़ित थे.

बाएँ: डेरेडा, नेपाल के ग्रामीण समुदाय ने गरीब, मध्यम और अमीर परिवारों को दर्शाने के लिये रंगीन कार्डों का प्रयोग किया. ध्यान देने योग्य है कि गरीबों द्वारा बताये गये कार्ड गांव की बाहरी सीमा के पास ही ज्यादा संख्या में हैं. उनकी बातों इससे बताते लोग इस सुरक्षा नहीं शौच के लिये जाते हैं. पहले का गरीबों तथा निम्न जातियों के लोगों ने बताया कि उनके घरों के आसपास का इलाका इतना गन्दा रहता है. उन्होंने यह भी बताया कि उच्च जातियों के लोग उन क्षेत्रों में क्यों जाते हैं जहाँ लोग शुरू करते हैं. गरीबों ने समूहों को चेतावनी दी कि वे अपने निज से उनके आवासन के इलाकों में खुले में शौच करना बन्द कर दें या परिणाम के लिये तैयार रहें

बाएँ: समुदायजनों और इथियोपिया के अवाशा के पास के डेंबाडीरा गांव में कार्डों के द्वारा मानचित्रीकरण अभ्यास चलाने पर, इसके समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग हो गई जिसका मुख्य रूप से नेतृत्व बच्चों ने किया और इस अभ्यास के दौरान बहुत ही व्यवहारिक मुद्दा स्वाभाविक रूप उभर कर सामने आये

बाएँ: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अच्छी तरह शुरुआत करायी गई. ट्रिगरिंग प्रक्रिया में बहुत से लोग मानचित्रीकरण में एक साथ काम करते हैं और अपने घरों, खुले में शौच के स्थानों को इंगित करते हैं तथा सम्बन्धित परिवारों से उत्पादित मल का आकलन करते हैं. यमन के हज्जा गवर्नरेट में मानचित्रीकरण प्रगति पर

खुले में शौच की जगहों का मानचित्रीकरण

समुदाय के सदस्यों से अनुरोध कीजिये कि वे जमीन पर गांव का एक सरल मानचित्र बनायें जिसमें घर, संसाधन, शौच की जगहें, जल स्रोत और समस्याओं को दर्शाया जाये जिससे परिचर्चा शुरू करने का आधार मिल सके. इस कार्य को उनके लिये यथासम्भव सुगम बनाने का प्रयास कीजिये. इस कार्य के लिये उनसे एक उपयुक्त खुले और बड़े स्थान को चुनने के लिये कहिये. मानचित्रीकरण की प्रक्रिया में सभी समुदाय सदस्यों का ध्यान लग जाता है और वे समुदाय की स्वच्छता की स्थिति का व्यावहारिक विश्लेषण करने में जुट जाते हैं.

मानचित्रीकरण करते समय गांव के सभी भागों के लोगों को बुलाया जाना चाहिये और उनसे कहना चाहिये कि वे जमीन पर बनाये जाने वाले मानचित्र में दर्शायें कि उनके घर कहां स्थित हैं. इसके लिये वे एक पर्ची का अथवा पत्थर के टुकड़े का उपयोग कर सकते हैं. साथ ही उन्हें यह भी दर्शाना है कि उनके पास अपना शौचालय है या नहीं. खुले में शौच के स्थानों को किसी रंगीन पाउडर से दर्शाया जा सकता है और उन्हें रेखाओं की सहायता से उन घरों के साथ जोड़ा जा सकता है जो कि उनका शौच के लिये उपयोग करते हैं. मानचित्र में कई चीजों को प्रमुखता के साथ दर्शाया जा सकता है. लोगों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित कीजिये कि कुछ लोगों को शौच के लिये कितनी दूर जाना

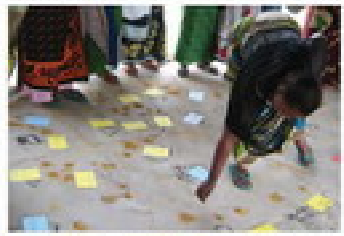

पड़ता है और दिन में किस समय जाना पड़ता है. क्या सुरक्षा से जुड़े कोई मुद्दे हैं? लोगों से कहिये कि वे यह दर्शायें कि किस प्रकार खुले में शौच के स्थानों से मल बह कर जलाशयों और अन्य जलस्रोतों तक पहुंच जाता है जिसके कारण जल स्रोत संदूषित हो जाते हैं.

ऊपर और बाएँ: इथियोपिया और तंजानिया में महिलाएं आवासस्थलीय स्थानों सहित शौच के स्थानों का मानचित्रीकरण करते हुए. तंजानिया, पेम्बा आदि के उपयोग के लिये विभिन्न रंग की पर्ची को भी प्रत्येक परिवार के नाम के कार्ड पर अंकित किया गया है

नीचे: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के सुगमकर्ताओं के द्वारा जब आवासस्थलीय शौच के स्थानों तथा मल के स्थानों से सम्बन्धित शौच के स्थानों के विषय में पूछा गया तो गांव का मानचित्र पहले दर्शायी गई सीमारेखा से बाहर जाने तक बढ़ा दिया गया. तंजानिया (मुफिंदी जिले) में इस प्रकार शौच से जुड़ी गतिविधियों की नई जगहें सामने आईं

ऊपर: बोलीविया के एण्डीज पहाड़ों के एक गांव में महिलायें शौच के स्थानों का मानचित्रीकरण करती हुई. "कौन कहां शौच करता है?"

दायें: बोलीविया में जमीन पर गांव के मानचित्रीकरण करने तथा खुले में शौच के स्थानों को दर्शाने के लिये ऊनी धागे का प्रयोग करती हुई महिलायें

ऊपर और दायें: मानचित्र पर पीला पाउडर खुले में शौच के स्थानों को दर्शाता है. जैसे-जैसे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता ट्रिगरिंग की प्रक्रिया आगे बढ़ती है और समुदाय के द्वारा आपातकालीन शौच के स्थानों को इंगित किया जाता है, मानचित्र पर पीले पाउडर से ऐसे स्थानों का आकार और संख्या बढ़ते जाते हैं. बोलीविया के एक गांव में मानचित्र देखते हुए विस्मित समुदाय सदस्य. पूरा की सहज टिप्पणियाँ तथा इस तरह को बन्द करने के लिये उठायी हो रही कार्यवाहियों पर सहयोग से नजर रखिये

मानचित्रीकरण को सुगम बनाना जिससे यह स्पष्ट हो, जल्दी बने और प्रक्रिया में लोगों को मजा आये

कभी-कभी एक आदर्श मानचित्रीकरण के लिये बहुत समय की आवश्यकता हो जाती है. जब लोग अपने गांव का मानचित्र बनाने में संलग्न हो जाते हैं तो उनमें बारीकियों में उलझ जाने की प्रवृत्ति दिखाई देती है. जैसे वह हर परिवार के सदस्यों की संख्या, पुरुष, महिला, बच्चे या गलियां और उप-गलियां भी दिखाने की कोशिश करने लगते हैं. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के ट्रिगरिंग के लिये बहुत विस्तृत सूचनाओं जैसे, सामाजिक-राजनीतिक पक्ष, जातियों, आवासस्थानों और संपदाओं से जुड़ी सूचनाओं की आवश्यकता नहीं होती. समय प्रबन्धन के विषय में सतर्क रहना चाहिये. शुरुआत में ही अनावश्यक सूचनाओं को एकत्र करने में खर्च किये गये समय के कारण ट्रिगरिंग के निर्णायक चरण में समय संकट की स्थिति आ सकती है.

युक्तियुक्त समय (3 से 4 घण्टे के भीतर) में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की क्रिया जगाने के उद्देश्य से खुले में शौच की जगहों के मानचित्रीकरण के लिये मैंने अपेक्षाकृत अतिशीघ्र सम्पन्न होने वाली विधि का प्रयोग किया है. गांव के परिवारों की संख्या के आधार पर यह प्रक्रिया आधे घण्टे से लेकर एक घण्टे तक में पूरी की जा सकती है.

शीघ्र सम्पन्न होने वाली विधि

- गांव के लोगों से कहिये कि वे बाहर आकर एक खुले स्थान के चारों ओर खड़े हो जायें (अच्छा होगा यदि यह स्थान साफ और सूखा हो जिससे कांकड़, पत्थर और घास न हों).
- अपनी इच्छा से जो आगे आना चाहें ऐसे कुछ लोगों को आमंत्रित करके उनसे कहा जाता है कि वे रस्सियां, डण्डियां, रंगीन पाउडर इत्यादि का प्रयोग करके गांव की बाहरी सीमा को जमीन पर दर्शायें. एण्डीज पर्वतमाला में स्थित बोलीविया के गांवों में महिलाओं ने ऊन के गोले (जिन्हें वे सामान्यतया साथ लेकर चलती हैं) के उसी धागे का प्रयोग गांव की सीमा दर्शाने के लिये किया था. (बायें पृष्ठ पर ऊपर प्रदर्शित चित्र).
- किसी से इस रूपरेखा के अन्दर गांव की कुछ खास चीजों को दर्शाने के लिये कहिये (जैसे स्कूल, सड़क का मुख्य चौराहा, पूजा के स्थान इत्यादि).
- उनमें से किसी से आगे आकर सीमारेखा के अन्दर उस स्थान पर खड़े होने के लिये कहिये जो गांव के उस स्थान को दर्शाता हो जहां उस समय सब इकट्ठे हुए हैं.
- एक युवक या युवती को पहचान कीजिये और उनसे कहिये कि वह यह बताये कि उसका घर इस मानचित्र में कहां पर होगा.
- समुदाय से पूछिये कि क्या युवक/युवती ने सही स्थान दर्शाया है. यदि सही है तो सभी से कहिये कि वे उसके लिये जोर से ताली बजायें. इस तरह बाकी के सभी उपस्थित लोग मानचित्र से परिचित हो जाते हैं.
- हरेक को निम्नलिखित बहुत सावधानी के साथ स्पष्ट कीजिये.

क. हर परिवार से केवल एक ही सदस्य के द्वारा एक कार्ड उठाया जायेगा (कार्डों के ढेरों को मानचित्र के बाहर रखा जाना चाहिये) और उसके बाद वह सदस्य घर का मानचित्र के अन्दर ठीक उसी स्थान पर खड़े हो जायेगा जहां उसका घर है.

ख. लोगों को इस प्रक्रिया को ठीक से पूर्ण करने के लिये कुछ समय दीजिये.

ग. अब उनसे कहिये कि वे अपने हाथ में लिये हुए कार्ड पर घर के मुखिया का नाम लिखें और कार्ड को अपने घर के स्थान पर रख दें (जहां वे खड़े हैं वहीं अपने पैरों के पास).

घ. उन्हें बताइये कि ये कार्ड उनके घर को दर्शाते हैं. अब उनसे कहिये कि वे अपने घर से एक रेखा उस स्थान तक खींचे जहां वे शौच करने जाते हैं. उनसे कहिये कि वे चॉक से अपने घरों और खुले में शौच के स्थान को जोड़ने वाली रेखा बना दें. लोगों को ढेरों आ जायेंगे और गतिविधियाँ शुरू हो जायेंगी, इसे चलने दीजिये. यह देखिये कि अब कार्ड और चॉक अपने हाथ से लोगों को नहीं मिलें. सामग्रियों को मानचित्र के एक कोने में रख दीजिये और उनसे कहिये कि वे स्वयं जाकर उठा लें. लोगों को इधर उधर आने जाने के लिये प्रोत्साहित करें और उन्हें आवश्यकता के साथ आनन्द उठाने दें.

ङ. मानचित्र के बीच में रखे पीले पाउडर की ओर संकेत कीजिये और उनसे कहिये कि वे इस पाउडर को लेकर उन स्थानों को दर्शायें जहां वे खुले में शौच करते हैं. जहां ज्यादा मल होता है वहां अधिक पाउडर डालें और जहां कम मल होता है वहां कम पाउडर डालें. इस समय खूब हँसी ठट्ठा होगा. यह देखिये कि पीले पाउडर के थैले को आप न उठायें बल्कि लोगों को स्वयं पीला पाउडर निकालने दें. लोग जल्दी से पाउडर डालने का प्रयास करते हुए दिखाई देंगे. इस समय बच्चे कुछ ऐसे स्थानों पर भी पीला पाउडर फैलायेंगे जिनका पता उनके अभिभावकों को भी नहीं होगा.

च. इस काम को पूरा करने के लिये लोगों को कुछ समय दीजिये.

छ. इसके बाद सबसे कहिये कि वे पुनः अपने घरों के स्थान पर खड़े हो जायें. उनसे पूछिये कि आपातकालीन स्थिति में वे शौच करने कहां जाते हैं? अर्थात वर्षा के दौरान, रात को, दस्तरोग से पीड़ित होने पर या किसी बीमारी की स्थिति आदि में. उनसे पीले पाउडर डालकर आपातकालीन शौच की जगहों को दर्शाने के लिये कहिये. फिर खूब हँसी के फौव्वारे छूटेंगे और उनके घरों के आसपास ही पीले पाउडर के ढेर पर ढेर लग जायेंगे. हो सकता है कि लोग बतायें कि आपातकालीन स्थितियों में वे अपने पड़ोसी के पिछवाड़े जाते हैं और पड़ोसी कह सकता है कि बारी में वह उनके परिसर का प्रयोग करता है. लोगों को दिखाई देने लग जायेगा कि मानचित्र पीले रंग से भरता जा रहा है. आप उनसे पूछ सकते हैं कि क्या पूरा गांव मल से भरा हुआ नहीं दिखाई दे रहा है.

ज. आप उसी मानचित्र की सहायता से यह भी आंकलन कर सकते हैं कि प्रत्येक परिवार से कितना मल निकलता है और उस परिवार की पहचान भी कर सकते हैं जो कि गांव के वातावरण में प्रतिदिन सबसे अधिक मल फैलाने के लिये जिम्मेदार है. सभी से कहिये कि वे जोर से ताली बजा कर उस परिवार को बधाई दें.

झ. उनसे बिना कार्डों को छोड़े मानचित्र के बाहर खड़े हो जाने को कहिये. ऐसे गांव के घरों का मानचित्र तैयार हो जाता है.

विकल्पः रंगीन कार्ड जमीन पर रख दीजिये. अलग-अलग रंग के कार्ड समाज के अलग-अलग वर्गो को दर्शाने के लिये प्रयोग में लाये जा सकते हैं. उदाहरणस्वरूप धनी, मध्यम वर्ग, निर्धन और कभी-कभी बहुत ही गरीब वर्गो को दर्शाया जा सकता है. लोगों से इसी हिसाब से कार्ड को उठाने, उस पर घर के मुखिया का नाम लिखने और फिर मानचित्र में घर के स्थान पर रखने के लिये कहा जा सकता है. इससे बहुधा यह दिखाई देता है कि गरीब लोग बाहर की ओर शौच के स्थानों के पास ही रहते हैं और यह भी पता चलता है कि धनी लोग गरीबों के घरों के पास ही शौच के लिये जाते हैं.

समुदाय पर रौब जमाने की गलती. खुले या किसी ढंग से, कभी यह कीजिये. उदाहरण के लिये कार्डों तथा तीलियों को एक स्थान पर रख कर उनसे अपने आप इन्हें उठाने को कहने के बजाय समुदाय के सदस्यों को एक-एक करके वितरित करना.

सुझाव

- जमीन पर बनाये गये मानचित्र को कागज पर भी उतारा जा सकता है जिससे यह दर्शाया जा सकता है कि किन घरों में शौचालय है और किनमें नहीं. इस मानचित्र का उपयोग अनुश्रवण के लिये किया जा सकता है. (नीचे देखें)
- एक मानचित्र बनाने के लिये आपको बहुत सी सामग्री की आवश्यकता नहीं है. समुदाय के सदस्यों को पत्तियों, चॉक, टहनियों, तिनकों आदि आसानी से मिल जाने वाली वस्तुओं से अलग-अलग चीजों को दर्शाने के लिये प्रोत्साहित किया जा सकता है. परिचय ठीक से दीजिये. लोगों की सृजनात्मकता को प्रोत्साहित कीजिये और पूरी प्रक्रिया को मनोविनोदपूर्ण बनाइये.
- यदि अलग-अलग रंगों के द्वारा विभिन्न वस्तुओं को दर्शाया जाता है तो निर्णय करने में अधिक समय न लगने दें कि प्रक्रिया छिछली चली जाये.
- यदि आपके पास पीला पाउडर है जो कि खुले में शौच के स्थानों को दर्शाता है तो कुछ पीला पाउडर अपने हाथ पर मल लीजिये और लोगों से कहिये कि वे आप से हाथ मिलायें, तब उनसे पूछिये कि हाथ मिलाने से उनके हाथों में क्या लग गया?
- "मानचित्र का साक्षात्कार लीजिये" इसका मतलब है प्रश्न पूछना और मानचित्र में जो कुछ दर्शाया गया है उसके प्रभाव को समझने का प्रयास करना. यह मानचित्र एक ऐसा साधन है जिसकी सहायता से समुदाय अपने गांव की स्वच्छता की स्थिति को बेहतर तरीके से समझ सकता है. यह मानचित्र अपने आप में एक साधन नहीं है.

सबसे गन्दी जगहों की पहचान

मानचित्रीकरण के दौरान समुदाय के सदस्यों से कहिये कि वे मुहल्लेवार छोटे-छोटे समूह बनाकर खड़े हो जायें. उनसे कहिये कि अपने समूहों में परिचर्चा करके पता लगायें कि गांव का सबसे गंदा स्थान कौन सा है और दूसरे नम्बर पर गन्दा कौन सा इत्यादि और परिचर्चा के परिणामों को कागज के छोटे टुकड़ों पर लिख दें. इसके बाद इन टुकड़ों को इकट्ठा कर लीजिये और एक-एक करके खुले स्वर में पढ़िये. अधिकतर मामलों में आप पायेंगे कि जिस जगह को किसी एक समूह के द्वारा सबसे गन्दा बताया गया है उसी जगह को अन्य समूहों के द्वारा भी सबसे गन्दा पाया गया.

इसके बाद लोगों से कहिये कि वे लिखें कि वे कहां शौच के लिये जाते हैं. इस अभ्यास के माध्यम से, शायद पहली बार, सबसे गन्दी जगह के पास रहने वाले लोगों को भान होता है कि अन्य जगहों के लोग भी उनके इलाके में आकर शौच करते हैं और फिर उन्हीं के इलाके को सबसे अधिक गन्दा भी बताते हैं. इस जानकारी के मिलने पर लोगों को तत्काल आगन्तुकों को अपने इलाके में शौच करने से रोकने के लिये कुछ कार्यवाई करने की आवश्यकता अनुभव होने लगती है. अधिकतर गांवों में देखा गया है कि इस बोध के होने पर गरीब और छोटे कहे जाने वाले लोग गांव में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता लाने में सबसे अधिक सक्रिय भूमिका अख्तियार कर लेते हैं. उन्हें ही सबसे अधिक लाभ भी होता है क्योंकि वे डायरिया और अन्य बीमारियों पर होने वाले खर्चों को बचा पाते हैं.

समुदाय के साथ खुले में शौच के स्थानों के मानचित्र का निर्धारण, प्रति परिवार उत्पादित मल का आकलन, मल से मुंह तक संदूषण मार्गों के चार्ट पर परिचर्चा बहुत विचारोत्तेजक होते हैं. यमन के एक गांव में प्रति परिवार उत्पादित मल का आकलन प्रगति पर है

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अच्छी तरह से सूचना प्रदान नहीं दिलाये के दौरान तंजानिया में ग्रामवासी प्रति परिवार उत्पादित मल का आकलन करते हुए. बहुधा उत्साहजनक पल इस प्रकार के आकलन के समय आ जाता है

मल की मात्रा और चिकित्सा पर व्यय का आकलन

उत्पन्न किये जा रहे मल का आकलन स्वच्छता की समस्या की गंभीरता को उजागर करने में बहुत सहायक सिद्ध होता है. प्रति दिन प्रति व्यक्ति या प्रति परिवार कितना मल उत्पन्न किया जा रहा है? परिवार अपनी ही विधियों एवं माप करने की स्थानीय इकाइयों के अनुसार आकलन कर सकते हैं कि प्रतिदिन इस समस्या में वे कितना योगदान कर रहे हैं. सभी परिवारों के द्वारा दिये गये आंकड़ों को जोड़ने से यह पता चल जाता है कि पूरे समुदाय द्वारा कितना मल उत्पन्न किया जा रहा है. दैनिक उत्पादन के आंकड़े को गुणा करके यह अनुमान लगाया जाता है कि प्रति सप्ताह, प्रति माह और प्रति वर्ष समुदाय द्वारा कितना मल पुंजित किया जाता है. इस प्रकार यह मात्रा टनों में आ जाती है और इसे देख कर समुदाय आश्चर्यचकित हो सकता है.

पूछिये कि कौन सा परिवार सबसे अधिक मल उत्पन्न करता है. सभी से ताली बजा कर उस परिवार को बधाई देने के लिये कहिये जो गांव को सबसे अधिक मल का उपहार देता है. इसी प्रकार से दूसरे, तीसरे, चौथे आदि स्थानों पर आने वाले परिवारों की पहचान कर लीजिये और उनके योगदान की सराहना कीजिये. उस परिवार की पहचान भी कर लीजिये जो सबसे कम मल का उत्पादन करता है. उनसे पूछिये कि उनका मल इतना कम क्यों होता है? उनसे कहिये वे ठीक से खायें जिससे उनका मल भी अधिक हो सके. यह सबकुछ बहुत हंसी-मजाक होता है परन्तु सच्चाई चुपचाप घर कर जाती है.

लोगों से पूछिये कि वे स्वास्थ्य के लिये इलाज पर कितना व्यय करते हैं. मानचित्र के चारों ओर खड़े हो जाइये. साधारणत: प्रभावक समुदाय को इस समय चुप करा देते हैं. कार्ड्स की ओर इशारा कीजिये और पूछिये कि उनके द्वारा डायरिया, पेचिश, कॉलरा आदि खुले में शौच के कारण होने वाले रोगों के इलाज पर खर्च किया जाता है. उनसे जानिये कि क्या वे साहूकार या पर्याप्त आकलन करना चाहेंगे और इसके बाद उनके द्वारा खर्च की बताई गई राशि को अपने कार्ड पर मार्कर से लिखने को कहें.

जैसा कि मल के आकलन में किया गया था यहाँ भी पूछिये कि बीमारियों के इलाज पर सबसे अधिक खर्च किस परिवार के द्वारा किया जाता है. उन्हें दिखाइये कि क्या वे खुले में शौच की जगहों के पास रहते हैं या सबसे गन्दे इलाके में रहते हैं. क्या वे गरीब हैं या अमीर? किसे सबसे ज्यादा कष्ट उठाना पड़ता है - अमीर, मध्यवर्गीय या गरीब को?

फ्लिप चार्ट को बोर्ड पर लगा कर आकलन करने के लिये कहें कि पूरे समुदाय द्वारा रोगों के इलाज पर एक माह, एक वर्ष में और दस वर्ष में कितना व्यय किया जाता है. माह, वर्ष और 10 वर्ष में उत्पन्न मल के आकलन के चार्ट के बगल में इस चार्ट को भी लगा दीजिये.

उनसे कहिये कि वे तो वास्तव में बहुत धनी हैं तभी तो यह इतना पैसा खर्च कर पाते हैं. जानने का प्रयास कीजिये कि क्या आपातकालीन स्थिति में किसी गरीब परिवार के किसी सदस्य को हो गये डायरिया के इलाज के लिये उसे

पैसा उधार लेना पड़ा है? किससे और कहाँ? क्या उधार लेना और फिर उसको लौटाना आसान था? आपातकालीन इलाज के लिये कौन पैसा उधार देता है और ब्याज की दर क्या रहती है? गैर-सरकारी संगठन, [illegible]? उन्हें खुले में शौच बन्द करने और शौचालय बनाने के लिये कभी सुझाव मत दीजिये. आप वहां सुझाव देने और आदेश देने के लिये नहीं गये हैं.

मल जनित संदूषण मार्ग और और घृणा जगाना

खुले में बिखरे मल का मुँह तक पहुंचना

लोगों से पूछिये यह सारा मल कहां जाता है. जैसे लोग जब बताने लगें कि वर्षा के पानी के साथ बह जाता है या जमीन के अन्दर चला जाता है तो मल के ढेर का एक चित्र बनाकर जमीन पर रख दीजिये. इसके पास ही कार्ड और मार्कर रख दीजिये. लोगों से कहिये कि वे कार्ड उठायें और उनमें लिखें कि किन चीजों के माध्यम से और किन मार्गों से मल उनके घरों तक पहुंचता है. उदाहरण के लिये;

- मक्खियाँ
- वर्षा का जल
- हवा
- पालतू जानवरों के खुर
- मुर्गियां जो मल को खाती हैं और जिनके पैरों और पंखों पर मल लगा रहता है
- कुत्ते जो कि मल को खाते हैं और जिनके पंजों तथा शरीर पर मल लगा रहता है
- मल लगी रस्सियां (उदाहरण के लिये जानवरों को बांधने के लिये प्रयोग में लाई जाने वाली रस्सियां)
- साइकिल के टायर
- जूते
- बच्चों के खिलौने, फुटबॉल इत्यादि
- हवा द्वारा उड़ाई गई प्लास्टिक की वस्तुएं
- संदूषित जल

इसके बाद पूछिये कि मल किस प्रकार मुंह तक पहुंच जाता है. उदाहरण के लिये

- हाथ, नाखून
- भोजन पर मंडराती मक्खियां
- फल और सब्जियां जो कि मल पर गिर पड़ी हों या उनके सम्पर्क में आई हों और जिन्हें ठीक से धोया नहीं गया हो (जैसा गाँव में होता है)
- संदूषित पानी से धोये गये बर्तन
- लोगों को चाटते हुए कुत्ते

आपको चाहिये आप किसी भी दशा में यह मार्ग समुदाय को न सुझायें. उन्हें स्वयं परिचर्चा करने, पहचान करने और लिखने-चित्र बनाने का अवसर दें.

पानी का गिलास!

एक गिलास पीने का पानी मांगिये. जब पानी का गिलास आपके पास आ जाये तो उनसे पूछिये कि क्या कोई इस गिलास से पानी को पीने के लिये तैयार है. जब कोई हां कहे तो अन्य लोगों से यही सवाल कीजिये. इस प्रकार समुदाय के सभी लोग गिलास से पानी पीने को तैयार हो जायेंगे. तब अपने सिर से एक बाल तोड़िये और उनसे पूछिये कि क्या वे इसे देख सकते हैं और क्या वो जानते हैं कि यह क्या है. इसके बाद बाल को जमीन पर बिखरे मल पर इस प्रकार छुआइये कि सभी देख सकें. अब उस बाल को गिलास के पानी में डुबाइये और पूछिये कि क्या उन्हें पानी में कुछ दिखाई दे रहा है. इसके बाद पास खड़े व्यक्तियों को वह गिलास पकड़ा कर उस पानी को पीने के लिये कहिये. (पृष्ठ 22 भी देखिये). वे तुरन्त मना कर देंगे. अब लोगों से पूछिये कि क्या वे उस पानी को पी सकते हैं. कोई भी उस पानी को पीने के लिये तैयार नहीं होगा. उनसे पूछिये कि वे मना क्यों कर रहे हैं. उनका उत्तर होगा कि क्योंकि इसमें मल मिला है. इसके बाद पूछिये कि मक्खी की कितनी टांगें होती हैं. हो सकता है कि वह सही जवाब दे दें. यदि नहीं तो उन्हें बता दीजिये कि मक्खी की 6 टांगें होती हैं और वे बालदार आरी की तरह लगती होती हैं. पूछिये कि क्या मक्खी की टांग में उससे अधिक मल लग सकता है जितना आपके पानी में डुबाये बाल में लगा था. उत्तर होना चाहिये "हाँ". अब उनसे पूछिये कि जब मक्खियां उनके या उनके बच्चों के भोजन और थाली पर बैठती हैं तो क्या होता है. जहां खुले में शौच की परिपाटी है वहां मक्खियां अपने साथ क्या लाती हैं? अन्त में उनसे पूछिये कि वे अपने भोजन के साथ और क्या खा रहे हैं.

उत्तरी पाकिस्तान के नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रोविंस के मर्दान के एक गांव में एक समुदाय के सदस्य खुले में शौच बन्द करने के लिये हाथ खड़ा करके पूर्ण सहमति देते हुए

नीचे "मल, रोटी और मक्खियाँ" प्रदर्शन, दोंदोरे, युगान्डा
छायांकन: फिलिप ओटियानो, प्लान केन्या

प्रज्वलन क्षण। फिरोज़ शाहीनोव, प्लान बोलीविया के एक सामुदायिक सुगमकर्ता, मल से संदूषित पानी का गिलास एक महिला को पीने के लिये प्रस्तुत करते हुए जो कि घृणा से अपना मुंह और नाक बन्द करती हुई दिखाई दे रही है. इस प्रज्वलन क्षण का अभिप्राय कि सभी व्यक्ति एक दूसरे के मल का सेवन कर रहे हैं प्रक्रिया की सफलता का आधार है. यह बहुत ही निर्णायक क्षण है जो कि ट्रिगरिंग प्रक्रिया को तेज कर देते हैं.

जब कोई कहता है कि वे एक दूसरे का मल खा रहे हैं तो उसे सामने लाइये और सभी को यह बात बताने के लिये कहिये

सच्चाई यह है कि गांव में सभी एक दूसरे का मल खा रहे हैं. जब एक बार समुदाय के किसी सदस्य के द्वारा यह सार्वजनिक रूप से कह दिया जाये तो आप भी इसे बार-बार कह सकते हैं. उनके कहने से पहले ऐसा मत कहिये. यह उनके द्वारा किये गये विश्लेषण के आधार पर उन्हीं के द्वारा कही गई बात होनी चाहिये न कि वह जो कि आप उन्हें बताने गये हैं.

उनसे कहिये कि वे आकलन करें कि उनके द्वारा कितना मल प्रतिदिन खाया जा रहा है. उनसे पूछिये कि खुले में शौच के कारण एक दूसरे के मल को खाने के लिये बाध्य हैं तो उन्हें कैसा लग रहा है? इस समय कोई सुझाव मत दीजिये. उन्हें इस पर मनन करने दीजिये और इसकी याद उन्हें उस समय दिलाइये जब समुदाय द्वारा विश्लेषण की प्रक्रिया पूर्ण की जा रही हो.

प्रज्वलन क्षण

प्रज्वलन क्षण के लिये बहुत सतर्क रहिये. यह वह समय है जब पूरे समुदाय को एक साथ समझ में आ जाता है कि खुले में शौच के कारण समुदाय का प्रत्येक सदस्य किसी दूसरे सदस्य के मल का सेवन कर रहा है और यह तब तक चलता रहेगा जब तक पूरा समुदाय खुले में शौच से मुक्त नहीं हो जाता. जब ऐसा हो जाये तो अन्य गतिविधियों को चलाते रहने की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाती है.

साधारणतया इस स्थिति तक पहुंचने पर लोगों में जोश बहुत बढ़ जाता है और जोरदार बहस शुरू हो जाती है कि किस प्रकार खुले में शौच को बन्द किया जाये. उन्हें न तो बीच में टोकिये और न कोई सुझाव ही दीजिये. चुपचाप उनकी बहस को ध्यान से सुनिये.

कुछ सुझाव और विचार

- **एक बच्चे को उठाइये.** चारों ओर देखिये और कोई ऐसी चीज़ ढूंढ लें तो बच्चे को उठाइये जिसके कारण बच्चे के मुंह पर मक्खियां मंडरा रही हों. लोगों से पूछिये कि यह किसका बच्चा है? इसके बच्चे का क्या दोष है कि यह गू और मल का सेवन कर रहा है? किसका दोष है कि बच्चे को इतने गन्दे वातावरण में जीना पड़ रहा है? जो अभिभावक अपने बच्चों को इस तरह से देखना पसन्द नहीं करते वे कृपया अपना हाथ खड़ा करें.

- **मक्खियों से घिरे मल को ढक दीजिये.** यदि वहां मल के ऊपर मक्खियां मंडराती दिखाई दें तो मल को मिट्टी से ढक दीजिये. आप देखेंगे कि मक्खियां वहां से चली जायेंगी.

- **दर्पण.** जब समुदाय के सदस्यों को समझ में आ जाता है कि वे एक दूसरे के मल का सेवन कर रहे हैं और अपनी भावनाओं को भी एक दूसरे के सामने व्यक्त कर रहे हैं तो उनके चेहरों पर घृणा और अपमान के भाव उभर आते हैं. जब ऐसी स्थिति आये तो ठीक-ठाक पहनावे वाली महिलाओं से कहिये कि वे दर्पण में अपना चेहरा देखें. उनसे ये पूछ लें तो दर्पण देखने से ही मना कर देंगी.

- **मल, भोजन और मक्खियां.** मई 2006 में हिमाचल प्रदेश, भारत के सोलन जिले के एक गांव में खुले में शौच के प्रभावों के अनुभव भ्रमण के दौरान ओबरी चौक गुरा, एक सहयोगी महिला प्रतिभागी, द्वारा एक पत्ता के टुकड़े पर ताज़ा खाना चावल उठा कर मानचित्र के स्थान के पास आयोजित बैठक में लाया गया. अनुभव भ्रमण में उनके साथ चल रहे लोग साथ रह गये और उनके पीछे-पीछे बैठक के स्थान तक चले आये. महिला ने एक थाली में चावल रोटियां और उसे मल से सने पत्थर के टुकड़े को पास में रख दिया. देखते ही देखते मक्खियां इकट्ठा हो गईं और चावल तथा मल के बीच आवागमन करने लगीं. लोग उसे ये चुपचाप देखते रह गये और दो महिलाओं ने तो उल्टी भी कर दी. एक गली का झूठा मल की बू से घिरा हुआ वहां चला आया. इसके बाद किसी व्याख्या की आवश्यकता ही नहीं रह गई. लोगों ने समझ लिया और स्वीकार कर लिया कि वे एक दूसरे के मल का सेवन कर रहे हैं. इस घटना के बाद से लोगों में प्रेरणा जगाने के लिये इस युक्ति का प्रयोग निरन्तर किया जाने लगा.

- **हंसी, मजाक कीजिये.** उदाहरण के लिये

- प्रक्रिया के दौरान कई बार कहा जाइये, दोनों हाथ जोड़ कर खड़े रहिये. उनसे अनुरोध कीजिये कि वे आपको शौचालय की सब्सिडी देने वाला या सरकारी अधिकारी या किसी गैर-सरकारी संगठन के सुगम एजेन्ट न समझें जो उन्हें समझाने आया हो.... "हम यहां आपको खुले में शौच बन्द करने के लिये कहने या शौचालय का निर्माण करने के लिये अनुरोध करने नहीं आये हैं. जैसा आप पीढ़ियों से करते आ रहे हैं उसी प्रकार खुले में शौच करते रहने के लिये आप स्वतंत्र हैं."

- यदि इस पर लोग आपसे पूछें कि फिर आप यहां किस लिये आये हैं तो कहिये "हम यहां सीखने आये हैं." कुछ अभ्यासों के बाद कहिये "हमने बहुत कुछ सीखा..."और जो सीखा उसे संक्षेप में बताइये. कितना मल निकलता है, बीमारियों के इलाज पर कितना खर्च होता है. ठोस सहभागी अभ्यास के बाद निकले निष्कर्षों को अभिलेखित करना बहुत आवश्यक है. (उदाहरण के लिये एक दिन, एक माह, एक वर्ष में खुले में विसर्जित किये गये मल की मात्रा, गांव से वर्ष भर में बाहर जाने वाला पैसा इत्यादि). इन सूचनाओं को वहां इकट्ठा लोगों के सामने एक बड़े चार्ट पर लिख देना चाहिये. बहुत अच्छा होगा यदि समुदाय से ही किसी व्यक्ति के द्वारा इन्हें लिखा गया हो और सबको जोर से पढ़ कर सुनाया गया हो. चूंकि कि यह विश्लेषण किसने किया और निष्कर्ष किसके द्वारा निकाले गये.

- मल, भोजन और मक्खियों के बाद जब मक्खियां भोजन और मल के बीच मंडरा रही हों तब कहिये "चिन्ता मत कीजिये. मक्खियां दो प्रकार की होती हैं. जो मक्खियां खाली मल पर बैठने वाली होती हैं वह भोजन और पानी के पास भी नहीं फटकतीं". हो सकता है कि आपकी इस बात को लोग स्वीकार न करें.

- जब लोगों को ठीक से समझ में आ जाये कि वे क्या कर रहे हैं तो कहिये "अच्छा, जाने दीजिये, एक दूसरे के मल का सेवन करते रहिये."

- कोई हास्यपूर्ण कहानी सुनाइये. हिन्दी की एक कथा इसका अच्छा उदाहरण है. एक ब्राह्मण को पृथ्वी पर उसके द्वारा किये गये अच्छे कर्मों के कारण स्वर्ग में स्थान प्राप्त हो गया जहां उसे हर प्रकार का स्वादिष्ट भोजन दिया जाने लगा. परन्तु उसने अनुरोध किया कि उसे उसका मनपसन्द भोजन अर्थात् मल परोसा जाये. बेचारा भूखा बहुत दुखी हुआ क्योंकि स्वर्ग में मल तो उपलब्ध था ही नहीं.

- अपने विचारों, अनुभवों, हास्य कथाओं को विकसित कीजिये और सुझाइये.

अगर प्रश्न पूछे जायें तो उन्हें बताइये कि चूंकि आप बाहर से आये हैं आपको स्थानीय स्थितियों का बहुत कम ज्ञान है और स्थानीय परिस्थितियों में क्या करना चाहिये इस विषय में समुदाय के लोग ही अधिक समझते और जानते हैं.

- उन्हें बताइये कि निर्णय करने के लिये वे स्वतंत्र हैं. वे चाहें तो खुले में शौच करते रह सकते हैं. यह उन्हीं का निर्णय होगा.
- उन्हें बताइये कि आप समझ गये हैं कि स्थानीय समुदाय के सदस्य किस प्रकार खुले में शौच करते हैं. लोग एक दूसरे के मल का सेवन करते हैं, जबकि उसी मल से मुंह तक के कार्य और शिकार परिवारों को पूरी जानकारी है.
- उनसे कहिये वे यह न समझें तो कि आप उनसे खुले में शौच को बन्द करने के लिये कहने आये हैं या किसी प्रकार के शौचालय निर्माण को बढ़ावा देने के लिये आये हैं. यदि वे चाहें तो खुले में शौच की परिपाटी को जारी रख सकते हैं.
- हो सकता है कि इस समय उनमें से कोई कहे कि वे इसे और आगे जारी नहीं रखना चाहते हैं. चूंकि कभी सामान्य रूप से उत्तर होगा कि शौचालय बहुत मंहगे होते हैं. चूंकि कि सामान्य शौचालय की लागत कितनी होनी चाहिये और कम-से-कम लागत क्या होनी चाहिये? सामान्य उत्तर होता है रु. 5000/- से रु. 10000/- या अधिक. अन्य स्थानों पर बनाये गये कम लागत शौचालयों के बारे में बताइये और यह भी कि रु. 150/- से रु. 200/- में भी शौचालय बन सकता है. अधिकतर लोग इस पर विश्वास नहीं करेंगे. उनसे कहिये कि यदि वे वास्तव में जानना चाहते हैं तो हाथ खड़े करें.
- यदि वे सहमति जताते हैं तो चार्ट पेपर पर वैज्ञानिक रूप का गोबर पर ठोस दीजिये और चित्र की सहायता से व्याख्या कीजिये. उसका एक मसौदा बनाने शौचालय का चित्र चार्ट पेपर पर जानी से बनाइये. (पहले से बनाया चित्र अपने साथ मत ले जाइये बल्कि वहीं उनके सामने बनाइये). पूछिये कि इस प्रकार के शौचालय की क्या लागत होगी और इसे बनाने में कितनी कठिनाई आयेगी? उन्हें यह भी बता दीजिये कि यह डिज़ाइन आपके द्वारा विकसित नहीं किया गया है बल्कि दुनिया के गरीबतम देश के एक गांव के गरीब लोगों के द्वारा ही विकसित किया गया है. अन्य समुदायों के द्वारा किस प्रकार सफलतापूर्वक स्वच्छता की स्थिति प्राप्त की गई है यह भी उन्हें बता सकते हैं और इसी प्रकार के अन्य अनुभवों का उल्लेख भी कर सकते हैं. (नीचे दिये गये चित्र को देखें)
- उनसे इसकी लागत पूछिये. हो सकता है कि वे आपके द्वारा बताई गई लागत से भी कम लागत बतायें और कहें कि ऐसे शौचालय बनायें. जो लोग ऐसा करने के लिये कहें उनसे हाथ खड़ा करने को कहें तथा उनके नाम लिख लें.

शौचालय के किसी मॉडल विशेष को ही बनाने के लिये मत कहिये. याद रखिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का लक्ष्य सबसे अच्छे और टिकाऊ शौचालय के मॉडल को समुदाय पर लादना नहीं है, वरन् स्थानीय सोच को इस प्रकार जगाना है कि स्थानीय स्तर पर ही लोग अपने हिसाब से खुले में शौच के निवारण ढूंढें.

चिन्ता मत कीजिये यदि कोई भी स्थानीय स्तर पर किसी भी प्रकार की तात्कालिक कार्यवाई करने के विषय में उन्हें सलाह नहीं करता है. उन्हें धन्यवाद दीजिये और उन्हें बताइये कि अपनी रिपोर्ट में आप उनके गांव को ऐसे गांव के रूप में दर्ज करेंगे कि जहां लोग खुले में शौच करते रहना और एक दूसरे के मल का सेवन करते रहना चाहते हैं. (आगे भीती प्रतिक्रियाएं देखिये). सामान्यतया आपने वैचारिक स्तर पर प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है.

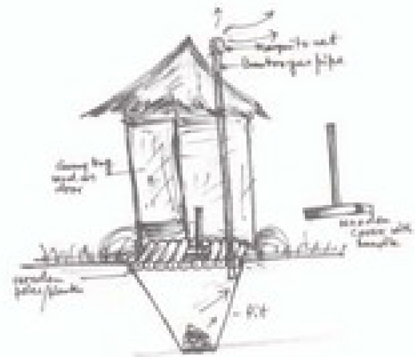

Drawing of a simple pit latrine

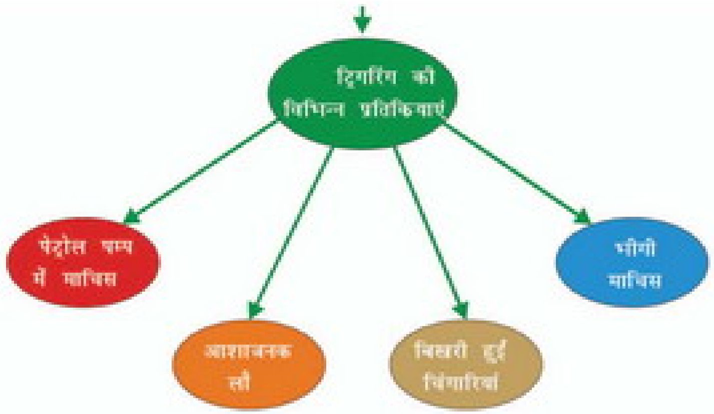

प्रतिक्रियाओं के सापेक्ष रणनीति

उपर्युक्त चित्र में कुछ सामान्य प्रतिक्रियाएं दर्शायी गई हैं, परन्तु समुदायों की प्रतिक्रियाएं बहुत ही अलग-अलग प्रकार की होती हैं. विभिन्न प्रतिक्रियाओं के अनुरूप आप अपनी कार्यविधि और योजना को अनुकूल बना सकते हैं. अतः को सीखने की दृष्टि से इन्हें चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है.

सुझाव

विभिन्न स्थितियों के अनुसार आपकी कार्यवाई में भी परिवर्तन हो सकता है. कुछ सुझाव निम्नवत् हैं.

ट्रिगरिंग के बाद उसी दिन संचालित की जाने वाली गतिविधियां

कुछ काम तो दो या अधिक स्थितियों में किये जाते हैं और कुछ और किये जा सकने वाले कामों का उल्लेख ट्रिगरिंग के बाद वाले भाग में किया गया है. जब स्वाभाविक नेता "समुदाय के परामर्शदाता" के रूप में किसी अन्य गांव में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रेरणा जगाने में संलग्न होते तो समय की जाने वाली गतिविधियां साधारणतया सुगमकर्ताओं के द्वारा संचालित की जाने वाली गतिविधियों से भिन्न हो सकती हैं. कई मामलों में पाया गया है कि स्वाभाविक नेता समुदाय के परामर्शदाता के रूप में खुले में शौच की आदत वाले गांव में आकर एक सप्ताह या उस समय तक के लिये वहीं ठहर जाते हैं जब तक गांव खुले में शौच से मुक्त नहीं हो जाता या इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति नहीं कर लेता. कुछ उल्लेखनीय उदाहरण भी सामने आये हैं. समुदाय के परामर्शदाता के रूप में गांव में आये स्वाभाविक नेता - महिला/पुरुष - के द्वारा जब पाया गया कि गांव में मल के विशाल ढेर इकट्ठा हैं तो उन्होंने घोषणा कर दी कि वे तब तक भोजन नहीं करेंगे जब तक वह अपने लिये एक गड्ढे वाला सस्ता शौचालय बना कर सभी ग्रामवासियों को नहीं दिखा देंगे. ऐसे मामलों में बहुत कुछ सहज ही हो सकता है क्योंकि स्वाभाविक नेता भी उसी गांव में ठहर कर ग्रामवासियों के साथ ही निवास करते हैं.

पेट्रोल पम्प में माचिस

जब सम्पूर्ण समुदाय पूरी तरह से प्रेरित हो जाता है और खुले में शौच को तत्काल समाप्त करने के लिये स्थानीय स्तर पर एकजुट होकर कार्ययोजना क्रियान्वयन के लिये तैयार हो जाता है तब यह स्थिति होती है.

- कम लागत और सस्ता लागत शौचालयों के विकल्पों पर विस्तार से चर्चा कीजिये और यह भी जानकारी दीजिये कि निर्माण के लिये सामग्री कहां से और कैसे प्राप्त की जा सकती है.
- पूर्ण होने की तिथि सहित कार्ययोजना बनाने तथा सामुदायिक समितियों के गठन की प्रक्रिया को सुगम बनाइये.
- समुदाय के उन सदस्यों की सूची तैयार करने में समुदाय की सहायता कीजिये जो शीघ्र ही शौचालय बनाने के इच्छुक हैं. शौचालय कब तक बन जायेंगे? तिथि और सप्ताह भी सूची में अंकित करने को कहें.
- अनुवर्ती भ्रमण के लिये आपसी सहमति से एक तिथि निर्धारित करवाइये.
- समुदाय के द्वारा बनाये गये मानचित्र की सहायता से समुदाय के द्वारा प्रगति का अनुश्रवण प्रारम्भ करवाइये. (जमीन पर बनाये गये मानचित्र को एक बड़े चार्ट पेपर पर उतारने की आवश्यकता होगी. इसे ऐसे स्थान पर टांग दीजिये कि सभी लोग इसे देख सकें.)
- समुदाय के किसी सदस्य की पहचान कीजिये जो कि स्वच्छता सामग्री और पैन इत्यादि की आपूर्ति करने वालों के साथ सम्पर्क साध सके. दूसरा बैठकों में लोगों से ही पूछना चाहिये कि किस प्रकार बाजार से सम्पर्क साधा जाये और किस प्रकार से कम लागत और पूर्ण प्रकार की स्वच्छता सामग्री प्राप्त की जा सकती है?
- जल के संतुलन का परीक्षण करने के लिये साथ लाई गई हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को वहीं छोड़ दीजिये.
- लक्ष्य होना चाहिये गांव को आत्मनिर्भर बनाना. इसके लिये स्थानीय सम्पर्क सूत्र और नेतृत्व को आगे लाइये जिससे आप गांव से शीघ्र ही विदा हो सकें. अपनी उपस्थिति को ऐसा न बनाइये कि वे आप पर निर्भर होने लगें या स्थानीय अभिनव पहल व गतिविधियां अवरुद्ध हो जायें.

आशाजनक लौ

जब समुदाय के अधिकांश सदस्य सहमत हो गये हों परन्तु फिर भी काफी लोग संशय और अनिर्णय की स्थिति में बने हों.

- गांव की स्वच्छता की स्थिति के विस्तृत विश्लेषण के लिये समुदाय का धन्यवाद कीजिये और विदा होने के लिये अनुमति चाहिये.
- यदि समुदाय में से कोई व्यक्ति स्थानीय स्तर पर पहल प्रारम्भ करने के लिये तत्पर हो तो उसे सामने लाइये और प्रोत्साहित कीजिये कि वह समुदाय को बताये कि वह शौचालय निर्माण की दिशा में किस तरह पहल करने का विचार कर रहा है.
- सभी से पूछिये कि क्या वे जानना चाहेंगे कि अन्य समुदायों के द्वारा किस प्रकार कम लागत शौचालयों का निर्माण किया गया है.
- यदि सभी हाथ उठा कर सहमति व्यक्त करें तो एक निर्माण वाले सस्ता शौचालय का चित्र बनाकर उन्हें बताइये कि किस प्रकार स्थानीय सामग्री का उपयोग करके कम लागत का शौचालय बनाया जा सकता है.
- सामुदायिक कार्य योजना तैयार करने की प्रक्रिया को सुगम बनाइये. कार्ययोजना में प्रति सप्ताह बनाये जाने वाले प्रस्तावित शौचालयों की संख्या कार्ययोजना के पूर्ण होने की तिथि भी अंकित करवाइये.
- अनुवर्ती भ्रमण के लिये सबकी सहमति से तिथियों का निर्धारण करवाइये.
- समुदाय के द्वारा बनाये गये मानचित्र की सहायता से समुदाय के द्वारा प्रगति का अनुश्रवण प्रारम्भ करवाइये.
- समुदाय के किसी सदस्य की पहचान कीजिये जो कि स्वच्छता सामग्री और पैन इत्यादि की आपूर्ति करने वालों के साथ सम्पर्क साध सके. दूसरा बैठकों में लोगों से ही पूछना चाहिये कि किस प्रकार बाजार से सम्पर्क साधा जाये और किस प्रकार से कम लागत और पूर्ण प्रकार की स्वच्छता सामग्री प्राप्त की जा सकती है?
- जल के संतुलन का परीक्षण करने के लिये साथ लाई गई हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को वहीं छोड़ दीजिये.
- लक्ष्य होना चाहिये गांव को आत्मनिर्भर बनाना. इसके लिये स्थानीय सम्पर्क सूत्र और नेतृत्व को आगे लाइये जिससे आप गांव से शीघ्र ही विदा हो सकें. अपनी उपस्थिति को ऐसा न बनाइये कि वे आप पर निर्भर होने लगें या स्थानीय अभिनव पहल और गतिविधियां अवरुद्ध हो जायें.

बिखरी हुई चिंगारियां

जब मिल कर काम करने के संदर्भ में समुदाय के अधिकांश सदस्य संशय और अनिर्णय की स्थिति में हों और केवल कुछ ही लोगों के द्वारा ही आगे बढ़ने और समस्या से निपटने के लिये कुछ कर गुजरने का निर्णय लिया गया हो.

- गांव की स्वच्छता की स्थिति के विस्तृत विश्लेषण के लिये समुदाय का धन्यवाद कीजिये और उनसे कहिये कि वे आपको शौचालयों की सामग्री का विक्रेता या बहाना देने वाला न समझें. उनसे कहिये कि वे खेतों में चली आ रही परिपाटी को जारी रखें.
- उनसे कहिये कि वे हाथ खड़ा करके बतायें कि उनमें से कितने लोग अगले दिन सुबह खुले में शौच के लिये जायेंगे.
- उन्हें बताइये कि आप इस जानकारी के साथ गांव को छोड़ कर जा रहे हैं कि यह ऐसा गांव है जहां के लोगों ने एक दूसरे का मल खाते रहने का निर्णय लिया है.
- जिन्होंने यह बताने के लिये हाथ खड़ा किया है कि वे खुले में शौच करते रहेंगे उनका एक समूह बनाकर उनकी फोटो खींचने की अनुमति चाहिये. अगर कोई असहमत होता है तो परिवर्तन और आपसी बातचीत शुरू करने के लिये समय दीजिये. साधारणतया थोड़ी देर बाद ही उन लोगों से हाथ खड़े करने के लिये कहा जा सकता है जो कि खुले में शौच

खुले में शौच के कारण सबसे ज्यादा नुकसान किशोरियों का होता है. यदि प्रक्रिया को उनके लिये ठीक से सुगम बनाया जाये तो वे खुले में शौच को बन्द करने के लिये तुरंत कार्रवाई करती हैं. तंजानिया के एक गांव में किशोरियां समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता ट्रिगरिंग के दौरान गतिविधियों में संलग्न. ओमवोनेरा की सचिव स्कूली लड़कियों ने कहा कि क्योंकि उनके पास शौचालय हो गये हैं इसलिये अब उन्हें स्कूल पहुंचने में देरी नहीं होती. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से पहले उन्हें झाड़ियों के आसपास उस समय का इंतजार करना पड़ता था जब कोई पुरुष आसपास न हो. लड़कियों को राह में सुबह उठने से पहले नहीं जाना पड़ता थी.

बन्द करना चाहते हैं. उनके प्रभाव में अन्य लोग भी हाथ उठा देते हैं. उनसे फिर पूछिये कि क्या आप उन सभी का फोटो खींच सकते हैं जिन्होंने खुले में शौच बन्द करने के पक्ष में सहमति के रूप में हाथ खड़े किये हैं.

- इस समय किन्हीं ऐसे व्यक्तियों को पहचान कीजिये जिन्होंने खुले में शौच को बन्द करने के लिये स्थानीय स्तर पर पहल करने की इच्छा जताई हो. उन्हें सबके सामने लाइये और सभी से कहिये कि उन्हें सराहने के लिये ताली बजायें.
- दूसरी बार ट्रिगरिंग के लिये यहां आने की तारीख समुदाय की सहमति से तय कीजिये जिससे वे लोग भी भाग ले सकें जो इस बार किसी कारण उपस्थित नहीं हो सके थे.
- जल के संदूषण का परीक्षण करने के लिये साथ लाई गई हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को वहीं छोड़ दीजिये.

भीगी दियासलाई

जहां पूरा समुदाय ही खुले में शौच बन्द करने के लिये कुछ भी करने को तैयार नहीं है.

- उन्हें धन्यवाद दीजिये और वहीं से प्रस्थान कीजिये. उन पर कोई दबाव मत डालिये.
- उन्हें बताइये कि आपको आश्चर्य है कि समुदाय के सदस्य यह जानने के बाद भी कि खुले में शौच की परिपाटी के कारण वे सभी एक दूसरे का मल खा रहे हैं, वे खुले में शौच की परिपाटी को चलाये रखते जा रहे हैं.
- अन्दाज़ कीजिये कि क्या उनसे उनकी फोटो लेने के लिये अनुमति मांगना ठीक होगा.
- जल के संदूषण का परीक्षण करने के लिये साथ लाई गई हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को वहीं छोड़ दीजिये.

- वहां से जाने से ठीक पहले उनसे पूछिये कि क्या वे पास के गांव का भ्रमण करना चाहेंगे जहां समुदाय ने अपने ही बलबूते पर खुले में शौच की परिपाटी को इतिहास की चीज बना दिया है.
- अन्त में, उनसे क्षमा याचना करते हुए, आप उन्हें सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त हिला डालने वाली परन्तु मनोविनोदपूर्ण कथा सुना सकते हैं यदि ऐसी कोई कथा आपके पास हो.

संदूषण के लिये परीक्षण

चाहे समुदाय की जो भी प्रतिक्रिया रही हो हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशियों को वहीं छोड़ दीजिये. यह बाज़ार में आसानी से मिल जाती हैं. भारत के कुछ भागों में यह एक्वाचेक नाम से मिल जाती हैं और इसकी कीमत लगभग 50 सेंट (यू.एस डॉलर) के बराबर होती है. अलग-अलग देशों में ये भिन्न-भिन्न नामों से मिलती हैं. इसकी उपलब्धता के विषय में जानकारी जल परीक्षण प्रयोगशालाओं या दवा विक्रेताओं से मिल सकती है. ट्रिगरिंग के अन्त में समुदाय के सदस्यों से कहिये कि वे इन शीशियों में पीने के पानी के स्रोतों से लिये गये पानी को भर दें - शीशियों पर अंकित निशानों का पालन करते हुए. इसके बाद इन्हें तत्काल ठीक से बन्द कर दें और कागज़ पर पानी भरने के समय को अंकित करते हुए उसे चिपकाने वाले टेप की सहायता से शीशी पर चिपका दें. उन्हें बताइये कि इन शीशियों को सूरज की धूप से दूर रखना है और कमरे के सामान्य तापक्रम पर - 25-35 डिग्री सेल्सियस, 24 से 48 घण्टे तक रखना है. ठंडी जगहों में इन्हें कपड़े में लपेट कर रखना चाहिये. यदि पानी पीने योग्य नहीं है तो वह काला हो जायेगा जिससे यह पता चलेगा कि उसमें मलजनित संदूषण है. समुदाय इन शीशियों को अपने पास रख सकता है. इस्तेमाल के बाद इन शीशियों को तोड़ कर गड्ढों में दबा दिया जाना चाहिये.

समुदाय की कार्य योजना का निर्माण (ट्रिगरिंग के दिन)

नियोजन की प्रक्रिया में तात्कालिक सकारात्मक कार्य योजनाओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये. गतिविधियों में निम्नांकित को सम्मिलित किया जा सकता है:

- एक फ्लिप चार्ट को टांगिये और जो लोग सबसे पहले पहल करने के लिये इच्छुक थे उन्हें आगे आने के लिये कहिये.
- उनके सामने आ जाने पर उनका स्वागत ज़ोर से ताली बजा कर कीजिये और कहिये कि वे स्वच्छ भविष्य के लिये समुदाय का नेतृत्व करने वाले नेता हैं.
- उनके जीवन स्तर के विषय में जानकारी कीजिये और उनकी सराहना कीजिये विशेषकर यदि वे गरीब हैं.
- उपस्थित लोगों के सामने उन्हें खड़ा रहने दीजिये.

- जो लोग एकजुटता सहायता करने के इच्छुक हैं उन्हें भी आगे बुला लीजिये और उनका भी जोरदार ढंग से स्वागत कीजिये.
- जो लोग इस प्रकार समुदाय के वातावरण को बदलने जा रहे हैं उनकी एक समूह फोटो खींचिये.

समुदाय की सहायता कीजिये जिससे समिति का गठन हो सके. समिति के सदस्यों के नाम लिख लीजिये.

उनसे पूछिये कि गांव को पूरी तरह खुले में शौच से मुक्त करने में कितना समय लगेगा. यदि वे कहते हैं 2-3 माह, तो उनसे पूछिये कि क्या उन्हें 60-90 दिनों तक एक दूसरे के मल का सेवन करते रहना स्वीकार है. उनका उत्तर हो सकता है कि वे एक दूसरे के शौचालय का उपयोग करेंगे और गड्ढे खोदेंगे तथा मल को मिट्टी से ढक देंगे. ऐसा वे तत्काल करना शुरू कर देंगे.

इस प्रक्रिया के दौरान 2-4 स्वाभाविक नेताओं की पहचान कीजिये जिनमें नेतृत्व क्षमता की अच्छी सम्भावना है.

यदि अनुभवों को बांटने के लिये अनुवर्ती प्रशिक्षण कार्यशाला प्रस्तावित है तो इसकी सूचना समुदाय को दीजिये और यह भी बताइये कि इसके लिये उन्हें क्या तैयारियां करनी हैं - ज़मीन पर बनाये गये मानचित्र को चार्ट पेपर पर उतारना, समुदाय के उन सदस्यों के नाम सूची में अंकित करना जो तत्काल कार्रवाई करने के लिये उद्यत हैं, स्थानीय सामग्री का उपयोग करके बनाये जा सकने वाले कम लागत शौचालय के उनके द्वारा ही बनाये गये डिज़ाइन का खाका, ट्रिगरिंग के बाद से की गई प्रगति का विवरण. कार्यशाला में भाग लेने के लिये महिलाओं, पुरुषों एवं बच्चों और स्वाभाविक नेताओं को आमंत्रित कीजिये.

वहां से जाने से पहले स्वाभाविक नेताओं से उन नारों का पूर्वाभ्यास करने के लिये कहिये जो कि खुले में शौच के विरोध में बच्चों के द्वारा लगाये जाते हैं. बच्चों के द्वारा की जाने वाली गतिविधियों को तुरन्त शुरू कराइये. जब बाहर से आये लोग वहां से जाने लगें तो बच्चे नारे लगाते हुए जुलूस बनाकर कुछ दूर तक उनके साथ जायें.

लोगों को पास-पड़ौस के समुदायों द्वारा किये जा रहे कार्यों के विषय में बताइये. यदि यह उस क्षेत्र का पहला ही गांव हो तो उन्हें बताइये कि उन्हें कितना मान सम्मान मिलेगा और यदि वे पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त हो गये तो उन्हें उत्सव मनाने का एक अच्छा अवसर प्राप्त हो जायेगा.

किसी भी प्रकार के लाभ के विषय में कोई वादा न कीजिये और न ही आश्वासन ही दीजिये.

स्कूलों में ट्रिगरिंग और छात्रों की गतिविधियां

भारत के हरियाणा राज्य के पानीपत ज़िला के स्कूलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम की शुरुआत सितम्बर 2007 में हुई. छात्र जागरूक दलों का गठन किया गया. पहले चरण सफलता से पूर्वकालिक सुगमकर्ताओं के दलों द्वारा लगभग 125 स्कूलों में यह कार्यक्रम शुरू किया गया - ज़िले के कुल स्कूलों के आधे से अधिक स्कूलों में. छात्रों के द्वारा मानचित्रीकरण तथा अन्य गतिविधियों को सम्पन्न किया गया. जब वे अनुप्रम भ्रमण पर गये तो गांव के बच्चे उत्सुकतावश उनके पीछे हो लिये. कभी-कभी उत्पादित मल की मात्रा का आकलन खुले में शौच के स्थान पर ही खड़े रह कर किया गया जिसमें मल की ढेरियों को देखकर मल की मात्रा का अनुमान लगाया गया. घोर घृणा और शर्म से भरे छात्र सक्रियतावादी बन गये. जो बहुत ही जल्द से उन्हें संगठित करके स्वाभाविक नेताओं का समूह गठित कर लिया गया और सदस्यों को टोपियां, सीटियां और लिखित सामग्री दी गई. उन्हें सामाजिक और पर्यावरणीय उपयोगी कार्यों के लिये पुरस्कृत भी किया जाता है जिसके लिये उन्हें अंक मिलेंगे. शिक्षकों को भी सहयोग के लिये उनके साथ संलग्न कर लिया गया है.

एक 12 वर्षीय बालक अन्य छात्रों का नेतृत्व कर रहा था. इसका कार्य था खुले में शौच करते दिखाई देने वाले लोगों को देख कर ज़ोर-ज़ोर से सीटी बजाना. इस बालक पर शौच का आक्रमण हुआ परन्तु उसके अभिभावक भी उसे सीटी बजाने से रोक नहीं सके. उसने कहा, "मैं क्यों सीटी बजाना बन्द करूं. मैं कोई गलत काम नहीं कर रहा हूं." जब उस पर तीसरी बार आक्रमण हुआ तो गांव में एक विशेष बैठक बुलाई गई और निर्णय किया गया कि बहुत हुआ. खुले में शौच से मुक्त होने के लिये त्वरित कार्रवाई शुरू हो गई. एक रैली आयोजित की गई जिसमें सबसे अधिक सक्रिय छात्रों में से 300 छात्रों को आमंत्रित किया गया. लगभग 50 छात्रों ने भाग लिया. सहायक ज़िला आयुक्त के द्वारा सभी को उपहार स्वरूप घड़ियां भेंट की गईं.

सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान में संलग्न सरकारी परियोजना अधिकारी ने कहा, "यह आश्चर्यजनक है, छात्र इतने जोश से भरे हैं. वे तो महान स्वाभाविक नेता सिद्ध हो रहे हैं. मैंने तो कभी नहीं सोचा था कि छात्र इतने उत्साही होंगे. कभी-कभी हम सोचते हैं कि यह विचार पहले हमारे मन में क्यों नहीं आया."

स्रोत: राजेश कौशिक, ज़िला ग्राम्य विकास अभिकरण, पानीपत, हरियाणा, भारत

अनुश्रवण के लिये सामुदायिक मानचित्रीकरण

जब ट्रिगरिंग के परिणामस्वरूप समुदाय प्रज्वलित क्षण में पहुँचे या आवश्यक ली की स्थिति में आ जाये तो वहां बड़े चार्ट पेपर, मार्कर पेन और टेप छोड़ दीजिये जिससे ज़मीन पर बनाये गये मानचित्र को कागज पर उतारा जा सके, नई गठित समिति के नाम लिखे जा सकें, खुले में शौच से मुक्त होने के लिये बनाई गई कार्ययोजना अंकित की जा सके, उन सभी लोगों के नाम लिखे जा सकें जिन्होंने तत्काल या अगले सप्ताह गड्ढे खोदने का निर्णय लिया है. समुदाय के सदस्यों को ज़मीन पर बनाये गये मानचित्र को कागज पर उतारने के लिये उत्साहित कीजिये. यह बड़े कागजों में बनेगा और उन्हें टेप से जोड़ा जायेगा जिससे सभी उसे साफ-साफ देख सकें. मानचित्र को सार्वजनिक स्थान पर लगाया जाये और इस प्रकार सुरक्षित किया जाये कि वर्षा आदि से यह खराब न होने पाये. इसमें प्रत्येक परिवार की स्वच्छता की स्थिति को दर्शाया जायेगा या अद्यतन किया जायेगा जिससे प्रगति का पता चलता रहे.

स्कूलों में ट्रिगरिंग

स्कूलों में ट्रिगरिंग का अनुभव भारत और ज़ाम्बिया में प्राप्त हुआ है. हो सकता है अन्य स्थानों पर भी ऐसे ही प्रयास किये गये हों. सभी विधियों का प्रयोग किया जा सकता है. स्कूली बच्चे बहुत जल्दी नई बातें सीखते हैं और बहुधा सामाजिक परिवर्तन के सक्रिय माध्यम या अभिकर्ता भी बन जाते हैं. आवश्यकता के प्रसार के प्रारम्भिक चरण में ही स्कूलों में ट्रिगरिंग होती है. यह समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये मुख्य और प्रमुख कारक हो सकता है जिसकी सामुदायिक ट्रिगरिंग के समानान्तर एवं अनुपूरक के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है. स्कूलों में ट्रिगरिंग से अभिभावक, शिक्षक और विद्यार्थियों में एक सहक्रिया पैदा हो सकती है. छात्र जल्दी सीखते हैं और सक्रिय हो जाते हैं. नई पीढ़ी के रूप में छात्रों को इससे जोड़ना और उन्हें स्वयं स्वच्छता की स्थिति का मूल्यांकन तथा विश्लेषण करने का अवसर प्रदान करना खुले में शौच से मुक्ति की ओर बढ़ने समाज को स्वच्छ बने रहने के लिये एक मजबूत आधार प्रदान करेगा. यह भविष्य के लिये एक बड़ी और महत्वपूर्ण लहर सिद्ध हो सकती है.

स्कूल में ट्रिगरिंग और फिर गांवों में छात्र, अभिभावक और शिक्षकों के साथ ट्रिगरिंग

ज़ाम्बिया के चोमा ज़िले में अक्टूबर 2007 में यूनिसेफ के कर्मियों के लिये एक व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया. इसमें यूनिसेफ के सहयोगी संगठन और पूर्वी तथा दक्षिणी अफ्रीका के संचालन अधिकारियों एवं सरकारी स्टाफ के द्वारा भी प्रतिभाग किया गया. एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में ट्रिगरिंग शुरू की गई जिसमें मानचित्रीकरण तथा अन्य साधनों का उपयोग किया गया. तीन गांवों के छात्रों, शिक्षकों एवं अभिभावकों के द्वारा इसमें प्रतिभाग किया गया. छात्रों को पता चला कि खुले में शौच की आदत उनके तीनों गांवों में व्यापक रूप से फैली हुई है. सभी तीनों गांवों में ट्रिगरिंग एक साथ चलायी रखी गई. उस, घर और बच्चों के अन्दर मिल गये. बच्चे, अभिभावक और शिक्षक सभी एक साथ अभियान में जुट गये. बहुत घृणा, हंसी-मजाक और उछल-कूद के बाद बच्चों ने एक जुलूस बना लिया और नारे लगाने लगे. अगले दिन प्रधानाध्यापक ने एक बैठक में घोषणा की कि उनका स्कूल ज़ाम्बिया का पहला स्कूल होगा जहां के हर छात्र के घर में शौचालय होगा और हर छात्र गर्व से खुले में शौच से मुक्त गांव से स्कूल आयेगा.

अध्याय 4

ट्रिगरिंग के बाद मार्गदर्शिका

ट्रिगरिंग वह समय है जब या तो समुदाय के सदस्य एकजुट होकर खुले में शौच बन्द करने के लिये कार्यवाई करने को तत्पर हो जाते हैं या संशय, विवाद, असहमति या अनिर्णय की स्थिति में होते हैं. ट्रिगरिंग के बाद का चरण बहुत महत्वपूर्ण होता है. सामुदायिक गतिविधियाँ बहुत तेज़ी से बदल सकती हैं और समुदाय को विभिन्न दिशाओं की ओर ले जा सकती हैं. संवेदनशील बाह्य प्रोत्साहन और सहयोग निर्णायक सिद्ध हो सकते हैं.

सुगमकर्ता तथा अन्य लोग जो कि समुदाय की सहायता करने की भूमिका का निर्वहन करने में संलग्न होते हैं उन्हें जो कुछ हो रहा होता है उसके प्रति बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता होती है. ठीक समय पर उपयुक्त हस्तक्षेप से बहुत अन्तर पड़ सकता है.

जब प्रशिक्षण कार्यशाला के अंत के रूप में संचालित ट्रिगरिंग के बाद कोई अनुवर्ती कार्यवाई नहीं होती तो कोई परिणाम भी सामने नहीं आता. बिना अनुवर्ती कार्यवाई के ट्रिगरिंग करना खतरनाक बात है. इसलिये पहले से योजना बना लेनी चाहिये और उन व्यक्तियों एवं संस्थाओं के साथ सम्पर्क स्थापित कर लेना चाहिये जिनके द्वारा अनुवर्ती कार्यवाई की जानी प्रस्तावित है.

तरावागुआ, बोलीविया के राष्ट्रीय पर्वत क्षेत्र में एक ग्रामीण महिला मिट्टी, ईंट और पत्थर से बने अपने नव निर्मित शौचालय को गर्व से दिखाती हुई. छायांकन: पेतरा बाइकन, यूनिसेफ, बोलीविया

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की अनुवर्ती गतिविधि के रूप में इण्डोनेशिया में समुदाय के सामाजिक मानचित्र का प्रयोग स्वच्छता प्रगति का अनुश्रवण के लिये करते थे. ट्रिगरिंग के बाद नारंगी, नीले, हरे और पीले कागजों में परिवारों द्वारा निर्मित तथा उपयोग में लाये गये शौचालयों को अलग-अलग रंग से दर्शाया गया.

तुरन्त बाद की अनुवर्ती गतिविधियां और प्रोत्साहन

जहां लोगों की प्रतिक्रिया सकारात्मक और प्रबल इच्छा की द्योतक रही है वहां सबसे पहले अनुवर्ती गतिविधियों के लिये जाइये और जहां प्रतिक्रिया सबसे मन्द रही है वहां सबसे बाद में जाइये. जिन समुदायों की स्थिति "प्रेरित क्षण में ज्वलित" या "आवश्यक रोष" की दिखाई दी है वहां अनुवर्ती भ्रमण के लिये कुछ ही दिन बाद की तिथियां तय कीजिये. समय और प्रयोजन भी निश्चित कर लीजिये. जहां समुदाय "बिखरी हुई चिनगारियों" की स्थिति में पाया गया था वहां एक या दो सप्ताह के बाद जाइये. "धीमी दियासलाई" वाली स्थिति दर्शाने वाले गांव के अनुवर्ती भ्रमण के लिये साधारणतः कोई तिथि निर्धारित मत कीजिये जब तक कि कई लोग या समूह और अधिक जानने की इच्छा व्यक्त न करें. ऐसी स्थिति होने पर पास के किसी ऐसे गांव के भ्रमण की योजना बनाइये जहां खुले में शौच से मुक्ति प्राप्त कर ली गई है या जो सम्पूर्ण स्वच्छता की दिशा में सक्रिय रूप से प्रगति के पथ पर है.

शीघ्र ही पुनः भ्रमण का एक प्रयोजन हो सकता है हाइड्रोजन सल्फाइड शीशियों के द्वारा जल संदूषण परीक्षण के परिणाम को जानना. इस अवसर पर समुदाय के साथ उन जल स्रोतों की पहचान भी कर लीजिये जिनका जल सबसे अधिक संदूषित पाया गया (शीशियां जिनमें जल स्रोत से पानी के नमूने लिये गये थे और जो शीघ्र ही काला हो गया).

प्रोत्साहन का एक तरीका यह भी हो सकता है कि मोबाइल फोन पर स्वाभाविक नेताओं से बात कीजिये यदि उनके पास ऐसे फोन हों.

जहां समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत सकारात्मक कार्य शुरू हो गया हो वहां लोगों की सहायता कीजिये और उनके कार्यों की सावधानी से सूचना बनाइये. उनके जोश को यह बता कर बढ़ा दीजिये कि यदि वे 100 प्रतिशत स्वच्छता प्राप्त कर लेते हैं तथा खुले में शौच बन्द कर देते हैं तो पास के गांवों से तथा बाहर से कई लोग उनके गांव को देखने के लिये आयेंगे. यदि यह क्षेत्र में ऐसा करने वाला पहला गांव है तो वह तहसील, जिले और राज्य में प्रसिद्ध हो जायेगा.

निर्धारित तिथियों की याद दिलाइये

कोई ऐसा काम न कीजिये जिससे समुदाय की आप पर निर्भरता बढ़े. समुदाय के द्वारा स्वयं के निर्णयों के आधार पर किये जा रहे कार्यों में उनकी सहायता कीजिये. जितनी जल्दी हो सके वहां से विदा हो जाइये.

सरकारी कार्मिकों और अन्य बाहरी लोगों को गांवों का भ्रमण करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये जिससे उनकी दिलचस्पी बढ़ सके और जो कुछ किया जा रहा है उसे देखकर उसकी सराहना कर सकें. इससे समुदाय की भावनाओं को बल मिलेगा और उनकी कार्यवाई को मजबूती मिलेगी.

ट्रिगरिंग के दौरान किसी के द्वारा सबसे पहले शौचालय बनाने की पहल की गई होगी. इसे देखने के लिये सम्पर्क कीजिये. एक समय निर्धारित करवाइये जब इस शौचालय को अन्य लोगों को भी दिखाया जा सके. सबसे पहले शौचालय बनाने वाले व्यक्ति को ही समुदाय के अन्य सदस्यों को इसे देखने के लिये आमंत्रित करने दीजिये. गांव के नेताओं को आमंत्रित कीजिये और आप स्वयं भी उपस्थित रहिये. यदि तकनीकी कार्मिक वहां उपस्थित हों तो उनके द्वारा न तो टोका जाना चाहिये और न भाषण ही दिया जाना चाहिये वरन् चुपचाप देखा जाना चाहिये. प्रदर्शन का यह समय विकल्पों पर परिचर्चा करने के लिये भी बहुत उपयुक्त हो सकता है.

समुदाय के कार्य और अनुवर्ती गतिविधि

पहले दिन किये गये कार्यों को आधार बनाते हुए निम्नांकित गतिविधियों के लिये प्रोत्साहित कीजिये तथा कार्यों को सुगम बनाइये:

- स्वच्छता कार्य समिति का गठन और गतिविधियां (गांव के सभी भागों और समूहों से प्रतिनिधियों को सम्मिलित करके)
- मानचित्र का प्रयोग करके स्वच्छता की स्थिति और प्रगति दर्शाना
- खुले में शौच बन्द करने के लिये परिवारों के द्वारा बनाई गई योजनाओं का विकास, शुरुआत में सम्बन्धित परिवार संयुक्त शौचालय बना लेते हैं जिसका उपयोग वे मिल कर कर लेते हैं.
- गड्ढे खोदना और उनका उपयोग लघु अवधि शौचालयों के रूप में करना.
- अपेक्षाकृत सम्पन्न परिवारों से वचन लेना कि वे अतिरिक्त ही शौचालयों का निर्माण करायेंगे.
- शौचालय निर्माण की सामग्री की आपूर्ति की व्यवस्था का पता लगाना. कई काम किये जा सकते हैं. सबसे पहले तो यह पता लगाना बहुत आवश्यक होता कि गांव में ही क्या सामग्री उपलब्ध है. कम्बोडिया के कम्पोंग प्रांत के एक गांव में (नोम पेन्ह के पास) एक व्यक्ति ने, जो कि वर्षा के जल संचय के लिये जार बनाता था, बैठने का चबूतरा, पैन और रिंग बनाना शुरू कर दिया क्योंकि गांव के खुले में शौच से मुक्त हो जाने के बाद से स्वच्छता की सामग्री की मांग बहुत बढ़ गई थी. स्थानीय रूप से बनाई गई यह स्वच्छता की सामग्री बहुत ही अभिनव डिजाइन की थी और बाजार में उपलब्ध सामग्री से बहुत भिन्न भी थी.
- खुले में शौच से मुक्त गांवों के इस मामले में दिलचस्पी रखने वाले सदस्यों को ऐसे गांवों में भ्रमण के लिये ले जाया जा सकता है जहां स्वच्छता से जुड़ी सामग्री का निर्माण करने की अभिनव पहल की गई हो.

सम्पन्न लोगों को प्रोत्साहित कीजिये कि वे सामने आयें और गरीब लोगों की सहायता करें जिससे खुले में शौच को पूर्ण रूप से बन्द करने के लिये कोई रास्ता निकल सके. उन्हें बताइये कि उन्हें भी इसका लाभ होगा क्योंकि वे भी उसी वातावरण में जी रहे हैं. सम्पन्न लोग जमीन दे सकते हैं, लकड़ी और बांस निःशुल्क दे सकते हैं या कोई समय के लिये गरीब लोगों को अपने शौचालयों का प्रयोग करने की अनुमति दे सकते हैं. इस प्रकार के उदार लोगों की पहचान कीजिये उन्हें एकत्र जनसमूह के सामने लाइये और उनके द्वारा प्रस्तावित सहायता की सार्वजनिक रूप से घोषणा कीजिये. इस प्रकार की घोषणाएं बहुधा अन्य लोगों को भी प्रोत्साहित करती हैं और वे भी आगे आ कर सहायता करते हैं. चूंकि खुले में शौच मुक्त होने से पूरे समुदाय को लाभ होता है इसलिये इस आधार पर सभी को परस्पर एक दूसरे की सहायता करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये.

यह जरूरी है कि स्वाभाविक नेताओं की पहचान की जाये और उन्हें कार्ययोजना के क्रियान्वयन का उत्तरदायित्व उठाने के लिये प्रोत्साहित कीजिये. स्वाभाविक नेता ही यह सुनिश्चित करेंगे कि लोगों के व्यवहार में आया परिवर्तन बना रहे.

हमेशा याद रखिये कि आप वहां खुले में शौच को बन्द करने की दिशा में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की पहल के लिये प्रेरणा जगाने के लिये गये हैं. आपका काम इसे स्वयं करना नहीं वरन् लोगों को प्रेरित करना है जिससे उनके व्यवहार में स्थायी परिवर्तन आ सके.

मुन्शीगंज के सभी गांवों के इस नक्शे को [illegible] मुन्शीगंज, जिला [illegible], बांग्लादेश के स्थानीय समुदायों के द्वारा बनाया गया. बांग्लादेश के "निर्मल ग्राम मिशन" या "100 प्रतिशत स्वच्छता" कार्यक्रम के अन्तर्गत खुले में शौच से मुक्त होने के प्रयास के दौरान प्रगति के लिये बनाया गया. प्रत्येक कार्ड एक पूरे ग्राम तथा उसकी स्वच्छता की स्थिति को दर्शाता है. आसपास की यूनियनों और उपजिलों से 2000 से अधिक लोगों के द्वारा प्रयास और प्रगति का अवलोकन किया गया

ट्रिगरिंग के बाद सतर्क रहिये

जहां समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता समुदाय में एकजुट होकर तत्काल कार्यवाई करने की प्रेरणा जगा देती है वहां खुले में शौच की घटनाओं में तीव्रता से कमी होने लगती है और खुले में शौच की परिपाटी शीघ्र ही पूरी तरह समाप्त हो सकती है. कुछ ही दिनों, सप्ताह या महीनों में खुले में शौच से शतप्रतिशत मुक्ति की स्थिति प्राप्त हो सकती है. कितना समय लगेगा यह समुदाय की स्थिति और आकार पर निर्भर होता है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के परिणामों को दीर्घकालीन बनाने के लिये अनुवर्ती गतिविधियां और भ्रमण महत्वपूर्ण हैं. इनका महत्व इसलिये भी है क्योंकि शौचालयों और आदतों में सुधार होने में काफी समय लगता है.

सकारात्मक परिवर्तनों के लिये सजग रहिये

- ऐसे लोग जिनके पास शौचालय है और वे अन्य लोगों को भी शौचालय बनाने के लिये मनाना चाहते हैं.
- लोग जो तुरन्त कार्यवाई करने लगते हैं.
- सम्पन्न लोग जो कि गरीबों की सहायता करने के लिये तैयार हैं.
- औपचारिक या अनौपचारिक मेल जिनके द्वारा बैठकें आयोजित की जाती हैं (जैसे धार्मिक मेल)
- लोग जिनके पास स्वच्छता की सामग्री है परन्तु उसका उपयोग नहीं किया गया था और अब उसे लगाकर उपयोग करने की शुरुआत की जा रही है.
- प्रक्रिया के दौरान उभर कर सामने आये स्वाभाविक नेता.
- प्रबल स्थानीय पुट के साथ विकसित किये गये शौचालयों के नये मॉडल और डिजाइन.
- सामुदायिक पुरस्कार, अनुबन्धन, दण्ड और प्रकार की उभर कर सामने आई अभिनव प्रणालियां और व्यवस्थाएं.

समुदाय को प्रोत्साहित तथा सहयोग करते समय संवेदनशील रहना आवश्यक है. किसी भी दशा में कार्यवाई मत कीजिये और सबकुछ अपने हाथ में लेने का प्रयास मत कीजिये. किसी भी प्रकार दबाव मत डालिये जिससे उनके मनोबल और जोश पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो और उन्होंने स्वयं यह सब किया है ऐसा उनका बोध घटने न पाये. याद रखिये कि यह उनकी प्रक्रिया है, आपकी नहीं.

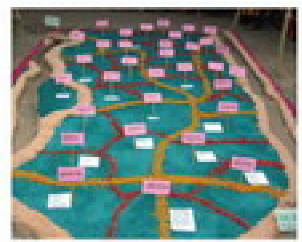

बायें: [illegible] के खुले में शौच से मुक्त समुदाय के द्वारा सभी घरों को तथा उनमें की विभिन्न प्रकार के शौचालयों को मानचित्र में दर्शाया गया. उन घरों को भी इंगित किया गया जिन्होंने शुरू में या बाद में पड़ोसी के शौचालय नहीं बनाये. इससे पड़ोसियों के बीच में एक प्रतियोगिता शुरू हो गई

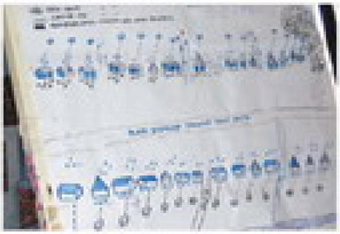

क्रमश: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग से उत्साहित इण्डोनेशिया में एक समुदाय के द्वारा प्रगति के अनुश्रवण के लिये मानचित्र का प्रयोग

नकारात्मक बातों के लिये सतर्क रहिये

- पूर्व में शौचालय निर्माण की सामग्री पर मिलने वाली आर्थिक सहायता की व्यवस्था से जुड़े नेता जो कि समुदाय को अपनी स्वयं की सहायता नहीं करने देना चाहते.
- राजनीतिक नेता और अफवाह फैलाने वाले जो कि प्रचार कर सकते हैं कि आर्थिक सहायता की शीघ्र घोषणा होने वाली है.
- आर्थिक सहायता कार्यक्रमों से जुड़े अन्य संगठन जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करते हैं या लोगों का ध्यान हटाते हैं.
- तकनीकी या अन्य बातों के आधार पर संदेह व्यक्त करने वाले बाहरी लोग.
- गांव के स्तर पर काम करने वाले कर्मियों को यह महसूस होना कि उनका महत्व घट रहा है और उन्हें इस बात की आशंका भी हो सकती है कि भविष्य में उन्हें हटा दिया जायेगा.

इन बातों को प्रभावहीन करने के लिये:

- अपनी बात बलपूर्वक रखने के लिये स्वाभाविक नेताओं को प्रोत्साहित कीजिये.
- लोगों से पूछिये कि क्या विगत वर्षों में प्रदान की जा रही आर्थिक सहायता से अपेक्षित परिणाम प्राप्त हुए.
- उन्हें स्पष्ट कीजिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता एक प्रक्रिया है और तकनीकी तथा अन्य समस्याओं का निराकरण यथासमय किया जा सकता है. उदाहरण के लिये स्वच्छता की सीढ़ी चढ़ते हुए.
- तकनीकी या किसी अन्य प्रकार के व्यक्त किये गये संदेहों की वैधता की पूरी पड़ताल कीजिये.
- गांव के स्तर पर काम करने वाले कर्मियों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लाभ बताइये और उन्हें प्रक्रिया का हिस्सा बनाइये.
- जिन समुदायों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ज्योति जलाई गई है उनके साथ बैठक कीजिये जिससे अनुभवों, योजनाओं और किये गये कार्यों की जानकारी हो सके.

जब कई समुदायों में एक साथ ट्रिगरिंग की गई हो (जैसा कि बहुधा सुगमकर्ताओं के प्रशिक्षण के दौरान होता है) उनमें ट्रिगरिंग के बाद पश्चातवर्ती बैठक आयोजित कीजिये. स्वाभाविक नेताओं से पूछिये कि ट्रिगरिंग की प्रक्रिया के बाद क्या कार्यवाही हुई. समुदाय के द्वारा क्या निर्णय लिये गये, काम जो पहले ही पूरे किये जा चुके हैं, उनकी कार्ययोजनाएं क्या हैं, और पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्ति की प्रस्तावित तिथि क्या है. जो अधिक जोशीले हैं वे "बिखरी हुई चिंगारियों" और "धीमी सिगड़ियों" की स्थितियों वाले समुदायों को प्रोत्साहित कर सकते हैं, यदि वे वहां हों.

क्रमश: सियरा लियोन के ओगो फार्म के समुदाय के सदस्य बाहर बोर्ड दिखाते हुए जिस पर घोषणा अंकित है कि उनका गांव सत्यापित खुले में शौच से मुक्त हो गया है

शुरुआत में समुदाय के सदस्यों के द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर जो निर्णय लिये गये और प्रतिबद्धता व्यक्त की गई उनके वीडियो बना लेना बाद में अन्य लोगों को प्रेरित करने के लिये बहुत असरदार सिद्ध हो सकता है. कम लागत शौचालय के निर्माण की वीडियो फिल्म बनाने से लोगों को स्पष्ट हो सकता है कि वे क्या कर सकते हैं.

सहभागी अनुश्रवण और संकेतक

जमीन पर बनाये गये मानचित्र को जब कागज पर उतारा जाता है तो उसमें दर्शाया जा सकता है कि किन घरों में शौचालय हैं और किनमें नहीं. बैठक की सार्वजनिक जगह पर इस मानचित्र को लगाने से, जहां सभी इसे देख सकें, लोगों को उनके द्वारा कार्यवाही करने के लिये किये गये वायदों को याद दिलाने में मदद मिल सकती है. जैसे-जैसे लोगों को शौचालय उपलब्ध होने लगते हैं (अपने या किसी और के) और लोग खुले में शौच करना बन्द करने लगते हैं तो अद्यतन स्थिति को दर्शाने के लिये समय-समय पर मानचित्र में भी संशोधन किया जा सकता है. यह काम नियमित रूप से स्वाभाविक नेताओं के द्वारा किया जा सकता है. कुछ लोगों के द्वारा कार्यान्वयन के अलग-अलग चरणों के लिये तथा पड़ोसियों के शौचालयों के उपयोग के लिये भिन्न-भिन्न रंगों का प्रयोग किया गया है. इस प्रकार यह मानचित्र अनुश्रवण का एक साधन बन जाता है और समुदाय के सदस्यों में शौचालय निर्माण के लिये एक प्रतियोगिता पैदा कर देता है. यह मानचित्र उस समय तक जीवन्त रहना चाहिये जब तक सभी परिवारों को शौचालय का उपयोग करते हुए नहीं पाया जाता और गांव को पूरी तरह खुले में शौच से मुक्त घोषित नहीं कर दिया जाता.

बायें: सुन्दर और आकर्षक कम लागत शौचालय का मॉडल जिसे [illegible] के एक स्वाभाविक नेता और सामुदायिक परामर्शदाता द्वारा अभिनव पहल के रूप में विकसित किया गया. स्वाभाविक नेता अपने द्वारा विकसित इस सुन्दर शौचालय को [illegible] साथ ले जाता है. यह समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के विषय में लोगों को बताने का एक भी अवसर नहीं खोता तथा अपने मॉडल का विवरण भी देता है. ध्यान दीजिये कि किस प्रकार [illegible] के तौर के बांस, लकड़ी, पुराने [illegible], प्लास्टिक शीट, मिट्टी और प्लास्टिक की [illegible] का इस मॉडल को बनाने में प्रयोग किया गया है.

समुदाय के सदस्यों और स्वाभाविक नेताओं से पूछिये कि वे प्रगति का अनुश्रवण करने के लिये और किन संकेतकों का प्रयोग करना चाहेंगे. उन्हें उनके द्वारा सोचे गये संकेतकों का उपयोग करने तथा उन्हें सार्वजनिक करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये.

प्रक्रिया और प्रगति का अनुश्रवण

प्रक्रिया और प्रगति को दर्शाने के लिये निम्नांकित संकेतकों पर ध्यान दीजिये:

- महिलाओं, पुरुषों, युवाओं और अन्य वर्गों से उभर कर सामने आये स्वाभाविक नेताओं की संख्या
- संयुक्त रूप से शौचालयों का निर्माण कर रहे परिवार
- पड़ोसियों, सम्बन्धियों या पारस्परिक या अन्य समूहों द्वारा एक दूसरे के शौचालयों का उपयोग किया जाना
- नये समूहों का अस्तित्व में आना
- अच्छी माली हालत वाले लोगों का निर्धन वर्ग के लोगों की सहायता करने के लिये आगे आना
- पारम्परिक सामुदायिक सहकारिता समूहों का फिर से सक्रिय हो जाना (जैसा जावा में गोटोंग रोयोंग और इण्डोनेशिया में [illegible])
- स्वयंसेवियों, पारम्परिक दाइयों और अन्य लोगों का सक्रिय हो जाना
- नये नारे, गीत और कविताएं
- बाजारों में स्वच्छता सामग्री की बिक्री में वृद्धि
- शौचालयों के विविध मॉडलों का सामने आना
- शौचालयों के निर्माण के लिये गैर-पारम्परिक सामग्री का उपयोग
- खुले में शौच पर समुदाय द्वारा दण्ड देने की व्यवस्था का विकास
- कठिनाइयों का सामना कर रहे लोगों का पूरे समुदाय द्वारा एकजुट हो कर सहायता प्रदान करना
- स्वच्छता की सामग्री को उधार स्वीकार देना (उदाहरण के लिये नव विवाहित दम्पतियों को)
- डायरिया आदि बीमारियों में कमी तथा इसकी दवाओं की बिक्री में कमी
- स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च में कमी और झोलाछाप चिकित्सकों की आमदनी में कमी

सम्मानित स्वाभाविक नेता

ट्रिगरिंग की प्रक्रिया से ही स्वाभाविक नेता उभर कर सामने आने लगते हैं. महिला, पुरुष, युवा, वयोवृद्ध, या/तथा विशेष भूमिका निभाने वाले लोग जैसे नाई, गांव के मुखिया या अन्य कोई भी स्वाभाविक नेता हो सकते हैं. निर्माण, अभियान चलाने, अनुसरण, सामुदायिक मामलों एवं नियमों के निर्धारण और कार्यान्वयन, निर्माण तथा आदतों में बदलाव को, समाज के अन्दर और बाहर भी, बहुधा ऐसे की प्रक्रियाओं में स्वाभाविक नेता सक्रिय रहते हैं. सभी चरणों में उनकी भूमिका निर्णायक होती है. स्वाभाविक नेताओं की निरन्तर खोज करना, उनकी सराहना और उन्हें प्रोत्साहित करना हर भ्रमण की गतिविधियों का महत्वपूर्ण भाग होना चाहिये. स्वाभाविक नेताओं को एकत्रित समूह को सम्बोधित करने का अवसर प्रदान करना चाहिये. इण्डोनेशिया में स्वाभाविक नेताओं को विशेष रूप से सम्मानित करने के लिये हैट और टी-शर्ट प्रदान किये गये हैं. उन्हें बैठकों में आमंत्रित कीजिये. अन्य स्थानों पर आयोजित ट्रिगरिंग प्रक्रिया के दौरान उन्हें वार्ताकार और सूत्रधारों के रूप में योगदान करने के लिये बुलाइये. उन्हें व चयनित लोगों को सूत्रधारों और प्रशिक्षक के रूप में अभियान से जोड़िये. इन कार्यों के माध्यम से उनका सम्मान कीजिये और उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाइये.

महिला स्वाभाविक नेताओं की खोज में रहिये, उनका उत्साहवर्द्धन और सहयोग कीजिये

शौचालय निर्माण के मामले में तो महिला स्वाभाविक नेता पुरुष स्वाभाविक नेताओं की अपेक्षा कम ही सामने आती हैं परन्तु वे शौचालयों के रखरखाव, उनके प्रयोग के मामलों के निर्धारण और आरोग्यपूर्ण स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार को सम्पोषित बनाये रखने के मामले में अधिक सक्रिय और उत्तरदायी होती हैं. परिणामस्वरूप बचत, सामूहिक उधार देने, ऋण चुकाने, और पारस्परिक आदान-प्रदान के अभिनव तरीके सामने आ सकते हैं. वास्तव में जैसे ही शौचालय बन कर तैयार हो जाते हैं महिलाएं इसकी व्यवस्था अपने हाथ में ले लेती हैं. वे शौचालयों का उपयोग सफाई के साथ करने के लिये बच्चों को प्रोत्साहित भी करती हैं.

धर्म और धार्मिक नेताओं की भूमिका का सम्मान कीजिये

खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त होने का स्तर प्राप्त करने की दिशा में प्रगति को गति देने के लिये धार्मिक नेताओं की भूमिका बहुत प्रभावी और सहायक सिद्ध होती है. गिरजाघरों, पैगोडाओं, मस्जिदों के परिसरों को अनुवर्ती भ्रमण में सम्मिलित किया जा सकता है या स्थानीय समुदाय के पादरियों से इन्हें बातचीत में शामिल किया जा सकता है. ऐसा करने से समुदाय को प्रार्थना-पूजा के स्थानों की सफाई और वातावरण को देखने में मदद मिलती है और यह पता चलता है कि धार्मिक नेता भी एक गन्दे वातावरण में जीने को विवश हैं. क्या यह लोगों को स्वीकार होगा कि उनके धार्मिक गुरु और पूज्य लोग भी उनके मल को खाने के लिये बाध्य हों, या यह कि लोग प्रार्थना-पूजा के लिये उन कपड़ों में जायें जिनपर मक्खियों के द्वारा मल लगा दिया गया है या मुर्गियों के द्वारा मल लगा दिया गया हो जब कपड़े सूखने के लिये धूप में डाले गये हों? इस प्रकार की बातें पर परिचर्चा बहुधा धार्मिक नेताओं को भी कुछ करने के लिये अभिप्रेरित कर देती हैं.

इण्डोनेशिया में अचाला के पास एम्लाम्लाटोआर में एक ट्रिगरिंग अभ्यास के दौरान अनुवर्ती भ्रमण दल को एक चर्च के पास घास में मानव मल का एक ढेर मिला. जबकि कुछ लोग इसे सूखी मिट्टी से ढकने का प्रयास कर रहे थे कि जिससे लोग इसे न देख लें बहुत से लोगों ने इसे देख लिया था और वे चिल्ला पड़े कि उनके धार्मिक स्थल को भी खुले में शौच करने वालों ने नहीं छोड़ा. अनुवर्ती भ्रमण में साथ चल रही कई महिलाएं तो बहुत ही दुखी हो गईं और रोने लग गईं. इसका परिणाम यह हुआ कि प्रक्रिया तीव्र गति से होने लगी और प्रेरणा की चिंगारी जलने का क्रम जल्दी ही शुरू हो गया.

बांग्लादेश के कई गांवों में इमामों के द्वारा मस्जिद के लाउडस्पीकर का उपयोग करते हुए नियमित रूप से लोगों से खुले में शौच बन्द करने अनुरोध किया जाता था. इस्लाम और पवित्र कुरान का हवाला देते हुए वे लोगों को स्वच्छता की आवश्यकता और प्रार्थना के समय स्वच्छ कपड़े पहनने के महत्व को स्पष्ट करते थे.

इण्डोनेशिया की पश्चिमी सुमात्रा में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान से आच्छादित गांवों में साप्ताहिक कुरान पाठ प्रतियोगिताओं के दौरान खुले में शौच बन्द करने और शौच के बाद तथा भोजन से पहले साबुन से हाथ धोने से जुड़े मुद्दों पर परिचर्चा की जाती थी. इन परिचर्चाओं के कारण गांवों ने कम समय में ही खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लिया.

कई समुदायों में खर्चे के लिये उपलब्ध राशि का उल्लेखनीय भाग गिरजाघरों, मस्जिदों, पैगोडाओं, मन्दिरों और अन्य धार्मिक सुविधाओं के निर्माण और रखरखाव पर खर्च किया जाता है. समुदाय के सदस्यों से विभिन्न रूपों में काफी बड़ी धनराशि नियमित रूप से इकट्ठा की जाती है. यह सामाजिक एकजुटता और सहकारिता का उत्कृष्ट उदाहरण है. यदि ट्रिगरिंग ठीक से की जाये तो अनौपचारिक रूप से इन धार्मिक संस्थाओं का प्रबन्धन कर रहे लोग आगे आ जायेंगे और समुदाय के द्वारा एकजुट होकर कार्यवाही करने के प्रयास को बल प्रदान करेंगे तथा गरीबों की सहायता करेंगे जिससे खुले में शौच से शीघ्र मुक्ति प्राप्त हो सके.

बाएं: कुछ महिला स्वाभाविक नेता जिन्हें बांग्लादेश में सम्मानित भूमिका और उपाधियों से बहुत अच्छी तरह जाना जाता है. [illegible] जिले की कुछ महिला स्वाभाविक नेता, [illegible], बांग्लादेश
ऊपर और नीचे: बांग्लादेश के [illegible] जिले की महिला स्वाभाविक नेता

समुदाय के निर्बल और निर्धन वर्ग की सहायता हेतु आगे आने वालों का उत्साह बढ़ाइये

प्राय: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अच्छी और प्रभावी ट्रिगरिंग के फलस्वरूप समुदाय के सम्पन्न लोग गरीबों की सहायता और सहयोग के लिये तैयार हो जाते हैं. यह सहायता कई रूपों में हो सकती है. इसमें अपनी जमीन की सीमा पर शौचालय निर्माण की अनुमति देना, कुछ बांस, लकड़ी के तख्ते, या शौचालय के पैन खरीदकर देना या उन्हें बिना ब्याज के ऋण उपलब्ध कराना आदि सम्मिलित हो सकता है.

बाएं: सबसे पहले सामने आने वाले स्वाभाविक नेता, (बाएं) मो. जलील अहमद तथा और (दाएं) मो. मंजूर रहमान, [illegible], बांग्लादेश, लोगों के साथ. दोनों ही [illegible] में सम्पूर्ण स्वच्छता में आगे योगदान के लिये समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के सामुदायिक परामर्शदाता के रूप में बहुत ही सक्रिय हो गये.

समुदाय में उभरने वाले नेताओं को पहचानने और उन्हें बढ़ावा देने के लिये सतर्क और तत्पर रहिये. ऐसे लोगों की पहचान करने में समुदाय की मदद कीजिये जो दुर्बल, गरीब, भूमिहीन अथवा ऐसे लोग जो अन्य कारणों से अपने शौचालय नहीं बना सकते, की मदद करने को स्वेच्छा से तैयार हों. इस प्रकार के असमर्थ लोगों में बूढ़े, विधवा, एकाकी महिलाएं, विकलांग, गंभीर रोगों से ग्रसित लोग या अन्य बहिष्कृत हो सकते हैं. एकत्र समुदाय समूह से पूछिये कि वे ऐसे लोगों की समस्याओं का हल किस प्रकार करेंगे. कोई सुझाव मत दीजिये. जिन समुदायों ने सम्पूर्ण स्वच्छता को ठीक से समझ लिया है वहां इस प्रकार की समस्याओं के समाधानों की अपेक्षा की जा सकती है. आवश्यक कदम है दुर्बल और निर्धन लोगों तथा उनकी मदद करने को तैयार बेहतर जीवन स्तर वाले लोगों के बीच एक सम्पर्क सम्बन्ध स्थापित करने में सहायक होना. यह सहायता किसी भी रूप में हो सकती है. गड्ढे खोदने और शौचालय निर्माण के लिये श्रम के रूप में या/और सामग्री, धन या ऋण उपलब्ध कराने के रूप में.

बहुधा खुले में शौच बन्द करने लिये गरीब लोगों में जागा जोश और भावना सहज ही समृद्ध लोगों को उनकी मदद करने के लिये अभिप्रेरित कर देते हैं.

अभियान में बच्चों को सम्मिलित कीजिये

हर ट्रिगरिंग प्रक्रिया के दौरान बहुत से बच्चे इकट्ठे होते हैं और प्रक्रिया को आनन्द के साथ देखते हैं. कुछ सुगमकर्ताओं को चाहिये कि वे बच्चों को वहां से दूर ले जायें जहां वयस्कों के द्वारा मानचित्रीकरण किया जा रहा है और बच्चों से दूसरी जगह पर अलग से मानचित्रीकरण करायें. इस चरण में ही वे खुले में शौच बन्द करने का निश्चय समझ सकते हैं. उन्हें प्रोत्साहित कीजिये कि वे उपयुक्त नारे विकसित करें जिन्हें वे गांव में एक जुलूस बनाकर जोर से लगाते हुए निकल सकते हैं. वयस्कों को उत्साहित कीजिये वे आकर बच्चों के द्वारा बनाये गये मानचित्र को देखें और बच्चों की प्रतिज्ञाओं को सुनें. यह ट्रिगरिंग के बाद खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्ति पाने तक तथा अन्य गांवों से भ्रमण पर आने लोगों के समक्ष भी चलता रह सकता है.

- स्कूल और शिक्षक छात्रों के साथ मिल कर बहुत बड़ी भूमिका अदा कर सकते हैं. बच्चों से स्कूलों में पूछा गया कि क्या उन्हें शौचालय उपलब्ध है और क्या वह उसका उपयोग करते हैं. हाथ खड़ा करके बतायें. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत सीखे गये कुछ गीत बच्चे घर में भी गाते हैं. स्कूलों में व्यावहारिक स्वास्थ्य व्यवहार सिखाया भी जाता है और जुलूस भी निकाला जाता है.

यहाँ स्थानीय नेताओं और समुदायिक सलाहकारों को सीधा प्रशिक्षित करने और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को ट्रिगर करने की अपनी ही विशिष्ट शैली होती है. चंद्रपुर ग्रामीण उत्थान, स्थानीय सेवा, हैदरपुर पुलिस, निलफामारी जिला, बांग्लादेश के एक गांव में ट्रिगरिंग करते हुए. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रसार और विस्तार की गति इस बात पर निर्भर करती है कि व्यवस्था तथा गैर-सरकारी संस्थाओं के द्वारा स्थानीय नेताओं की क्षमता का विकास कितना किया जाता है और उनका उपयोग किस प्रकार किया जाता है तथा उन्हें किस प्रकार का सहयोग मिल जाता है.

यहाँ समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रत्येक ट्रिगरिंग में बच्चों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है. जब ठीक से ट्रिगरिंग की जाती है तो अभिभावक और वयस्क बच्चों के द्वारा किये गये निरीक्षण से शर्मिंदा हो जाते हैं. कंबोडिया के एक गांव में बच्चे इन सीटियों को दिखाते हुए जिनको लेकर वे सुबह सवेरे शौच जाते हैं.

कम्बोडिया के प्रान्त के एक गांव में जहां सभी उस युवक ने शौचालय निर्माण सामग्री आपूर्ति का निःशुल्क कार्यक्रम चलाया था, खुले में शौच के विरोध में नारे लगाते हुए बच्चे उस स्थान पर पहुंचे जहां समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग वयस्कों के लिये की जा रही थी. शिक्षकगण एवं अभिभावक अपने ही बच्चों को खुले में शौच बन्द करने के लिये समझाते हुए देखकर आश्चर्यचकित और अभिप्रेरित हो गये. उनके विचार एकदम बदल गये. व्यवहार में 'आवश्यकता की' 'चेतना मन में आना' में बदल गई जिसके लिये बच्चे ही उत्प्रेरक सिद्ध हुए.

बच्चे परिवर्तन का शक्तिशाली माध्यम हैं

उत्तर पश्चिमी बांग्लादेश के जनपदों में बच्चों को "बिच्छू वाहिनी" (बिच्छू सेना) के नाम से जाना जाता था. उन्हें सीटियां दे दी गई थीं और उनका काम था खुले में शौच करने वालों की खोज में रहना. एक युवक ने बताया कि खुले में शौच से मुक्त होने के लिये चलाये जा रहे अभियान के दौरान उसने कम-से-कम 60 बार सीटियां बजाईं. कुछ मामलों में तो बच्चे "गू-झण्डा" लेकर जाते थे. इन झण्डों पर खुले में शौच करने वाले का नाम लिख कर उन्हें स्थान पर लगा दिया जाता था जहां उसके द्वारा शौच की गई थी. इसी प्रकार पश्चिमी सुमात्रा के सिजुंजुंग जिले में बच्चे गड़बड़ी करने वालों की खोज में रहते थे, परन्तु इस मामले में, संगीतमय संस्कृति होने के कारण, समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के गीत दोषी व्यक्ति को लक्ष्य करके गाते थे.

केन्या के होमा बे में बच्चों ने बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया. उन्होंने अपनी कार्ययोजना बनाई और उसे बड़ों के सामने प्रस्तुत किया.

ऊपर: बोलीविया में लापाजपूसा के पास एक गांव में बच्चे खुले में शौच की जगहों के जमीन पर बने मानचित्र के सामने ... संदूषण के मार्गों का चित्र प्रस्तुत करते हुए.

नीचे: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग में बच्चों की भूमिका बहुत अहम होती है. इथियोपिया के ... के गांव में मानचित्र के विश्लेषण के निष्कर्षों का निरीक्षण करता हुआ समूह

नीचे: हज्जा गवर्नरेट, यमन के एक गांव में खुले में शौच के विरोध में नारे लगाते हुए बच्चों का जुलूस

बच्चों के अभियान की गतिविधियां, पूर्वी जावा

पूर्वी जावा के लुमाजंग जिले के तुलीरेज गांव के बच्चों ने गांव को खुले में शौच से मुक्त कराने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया. गांव के चार प्राथमिक और एक माध्यमिक स्कूल के छात्र निम्नांकित गतिविधियों में सक्रिय रूप से संलग्न थे:

- खुले में शौच के विरोध में नारे लगाते हुए जुलूस उस समय तक नियमित रूप से निकालते रहे जब तक गांव पूरी तरह से खुले में शौच से मुक्त नहीं हो गया
- गन्दे क्षेत्रों और खुले में शौच की जगहों का पता लगाने के लिये अलग-अलग जगहों और पास पड़ोस में अनुश्रवण भ्रमण
- शौचालयों के प्रकार और स्वच्छता से जुड़ी आदतों से सम्बन्धित सूचनाओं को घर-घर जाकर एकत्र करने के लिये सर्वेक्षण. प्रत्येक छात्र को दस परिवारों से सूचनाएं एकत्र करके रिपोर्ट करने का काम सौंपा गया था.
- जल स्रोतों आदि की जाँच, उदाहरण के लिये पीने के पानी के भण्डारण के लिये इस्तेमाल में लाये जा रहे बर्तनों के प्रकार तथा पीने के पानी के बड़े बर्तनों में मच्छरों के लार्वा तथा अन्य संदूषण की उपस्थिति की जाँच.

स्वच्छता सम्बन्धी निर्माण सामग्री की उपलब्धता सुलभ बनाना (आगे विपणन शीर्षक भी देखिये)

सुगमकर्ताओं को चाहिये कि वे स्थानीय बाजारों से सम्पर्क-सम्बन्ध स्थापित करने में समुदाय की सहायता करें.

जहाँ समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ज्योति किसी भी स्तर पर जला दी गई है ऐसे अधिकतर स्थानों में स्वच्छता सम्बन्धी निर्माण सामग्री की मांग उसकी आपूर्ति से अधिक हो जाती है. कम लागत की निर्माण सामग्री का अभाव प्रगति में रोड़ा अटका सकता है जिससे समुदाय की स्वच्छता सीढ़ी पर चढ़ने की गति धीमी पड़ सकती है. पारम्परिक निर्माण सामग्री बहुधा बहुत मंहगी, नाज़ुक, भारी और मानकीकृत होती है कि चयन की कोई सम्भावना ही नहीं रह जाती. दूरस्थ क्षेत्रों में तो यह उपलब्ध भी नहीं होती. साथ ही सभी लोग सबसे सस्ती सामग्री क्रय करना पसन्द नहीं करेंगे. यह सुनिश्चित कीजिये कि विविध प्रकार की सामग्री उपलब्ध हो जिससे चुनाव करने की संभावना रहे.

ऊपर: कार्ययोजना लिखती हुई बालिका, होमा बे जिला, न्यान्ज़ा प्रान्त, पश्चिम केन्या

बाएँ: बड़ों के सामने कार्य योजना प्रस्तुत करते हुए बच्चे, होमा बे जिला, न्यान्ज़ा प्रान्त, पश्चिम केन्या

ऊपर: मल के ढेर एवं संदूषण मार्ग प्रस्तुत करते हुए बच्चे, ला पाज, बोलीविया. बच्चों की नजर से मल का परिमाण और उसका एक चित्रण

बाएँ: सुलावेसी, पश्चिमी सुमात्रा, इण्डोनेशिया में खुले में शौच के विरोध में सम्बोधन नारा में गीत गाते हुए बच्चे

जैसे-जैसे समुदाय सम्मिलित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रगति और प्रसार होता जाता है स्वच्छता की बेहतर निर्माण सामग्री की मांग बढ़ती जाती है और स्वास्थ्यकर व्यवहार में परिवर्तन होने पर लोग अपने शौचालयों के डिजाइन और गुणवत्ता में सुधार करने के लिये इच्छुक होने लगते हैं. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के विभिन्न चरणों के प्रति जागरूक होना बहुत महत्वपूर्ण होता है. इन्हीं स्थितियों के संदर्भ में उपयुक्त सहायता और सहयोग प्रदान करना लाभकर होता है. ट्रिगरिंग के ठीक बाद या खुले में शौच से मुक्त होने के बाद समुदाय के सम्पन्न लोग बेहतर शौचालय बनाने के लिये प्रभावशील हो जाते हैं और विद्यमान शौचालयों में सुधार करना चाहते हैं. कुछ लोग तो पहली बार ही बहुत अच्छे और आधुनिक शौचालय बनाने में लग जायेंगे और कम लागत मॉडलों को छोड़ देंगे क्योंकि उन्हें लागत की चिन्ता नहीं है.

जो कार्य तत्काल किये जा सकते हैं उनमें सम्मिलित हैं:

- पता लगाये कि किस चीज की जरूरत है (उदाहरण के लिये पैन, रिंग, सीमेन्ट और इन्डोनेशिया में एक पिट वाले शौचालयों के गड्ढों के लिये ढक्कन वाले ढक्कन की जरूरत थी और गैस निकालने के लिये प्लास्टिक के पाइपों की बहुत मांग थी)
- स्थानीय उद्यमिता पहल तथा निर्माण और उत्पादन को प्रोत्साहित कीजिये
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की गांव की बैठक में स्थानीय व्यापारियों को आमंत्रित कीजिये जिससे वे समुदाय से सीधे सम्पर्क कर सकें, उनकी आवश्यकताओं को समझ सकें और बिक्री की संभावनाओं को परख सकें.
- आसपास के बाजारों में स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री के स्रोतों की खोज कीजिये और व्यापारियों को उचित सूचना दीजिये, संभावनाएं स्पष्ट कीजिये, उन्हें आश्वस्त कीजिये कि वे उस सामग्री की आपूर्ति की व्यवस्था करें जिसकी समुदाय को आवश्यकता है.
- प्रोत्साहित कीजिये और एक सामुदायिक प्रणाली की व्यवस्था कीजिये और स्वच्छता की निर्माण सामग्री के स्टॉल उन्हें लगवाइये.
- स्वाभाविक नेताओं को प्रोत्साहित कीजिये कि वे स्वच्छता से जुड़ी निर्माण सामग्री अपने गांव में लायें.
- स्वाभाविक नेताओं तथा समुदाय के अन्य सदस्यों को स्वच्छता की निर्माण सामग्री का निर्माण/उत्पादन करने के लिये प्रशिक्षित कीजिये.
- कम लागत की उपयुक्त तकनीकों के विषय में पता लगाइये (जैसे कि तीव्र ढलान वाला पक्का प्याला अथवा पाइप और न टूटने वाला हल्का प्लास्टिक का पैन) और विक्रेताओं एवं आपूर्तिकर्ताओं के बीच सम्पर्क स्थापित कराइये.

स्वच्छता निर्माण सामग्री के स्थानीय विक्रेताओं और उत्पादन स्तर के मालिकों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता में अपना व्यापार बढ़ाने और साथ ही समुदाय की सहायता करने का अवसर दिखाई देता है. वे इस अवसर और मांग को भुना सकते हैं. इसके लिये वे पास के नगरों और उप नगरों से स्वच्छता की निर्माण सामग्री समुदाय के सदस्यों को खुदरा बेचने के लिये ला सकते हैं. बहुधा वे पैन तथा अन्य सामग्री को बिना ब्याज के उधार देकर भी समुदाय की सहायता कर सकते हैं. उधार शीघ्र ही चुका दिये जाने की संभावना रहती है. जैसे ही फसल का पैसा मिलता है उधार चुका दिया जाता है. नगरों और उप-नगरों में विकास कर रहे कुछ व्यापारियों के सम्बन्धी शहरी बाजारों के साथ मजबूत सम्बन्ध बनाने में भी सहायक हो सकते हैं.

बारिश और बाढ़ के बाद जब सिंगल पिट शौचालय ढह जाते हैं तो बेहतर और अधिक टिकाऊ शौचालयों की मांग होने लगती है. परिवार, विशेष रूप से महिलाएं, फिर से खुले में शौच की ओर वापस नहीं जाना चाहते. यही वह समय है जब कि समुदाय के सदस्य विकल्पों की खोज में रहते हैं और बेहतर शौचालयों के मॉडलों को अपनाना चाहते हैं. यह जानने के लिये सतर्क रहना महत्वपूर्ण है कि क्या खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त करने के कुछ ही महीनों में ऐसी स्थितियां सामने आने तो नहीं लगी हैं. स्थानीय उद्यमियों को प्रोत्साहित/विकसित करने तथा बाजारों के साथ व्यावहारिक सम्पर्क स्थापित करने के माध्यम से निर्माण सामग्री की बढ़ती मांग के अनुरूप आपूर्ति सुनिश्चित की जा सकती है. इसके लिये आवश्यक होगा कि पूरी प्रक्रिया में समुदाय की सक्रिय सहभागिता हो.

खुले में शौच से मुक्त स्तर का सत्यापन और प्रमाणीकरण

खुले में शौच से मुक्त होने की स्थिति का सत्यापन करना एक मुख्य गतिविधि है. सत्यापन के लिये आवश्यक है कि निरीक्षण किया जाये जिससे पता किया जा सके कि क्या समुदाय पूरी तरह खुले में शौच से मुक्त वातावरण को पा सका है या नहीं. प्रमाणीकरण इस स्तर की प्राप्ति का पुष्टिकरण है और औपचारिक रूप से मान्यता प्रदान करना है. विशेषकर जहां खुले में शौच मुक्त होने पर पुरस्कार की व्यवस्था है समुदाय और कार्मिक गांव के खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त होने से पहले ही पुरस्कार के सत्यापन में प्रमाणीकरण प्राप्त करने की कोशिश कर सकते हैं. जहां प्रमाणीकरण के आधार पर पुरस्कार दिये जाते हैं वहां धोखा देने और भ्रष्टाचार के मामले सामने आते हैं. इससे बचाव रखने के लिये तथा वास्तव में खुले से शौच मुक्त स्तर को स्थायी बनाए रखने के लिये कई उपाय उपयोग में लाये गये हैं. निम्नांकित के द्वारा अलग-अलग ढंग से साथ मिल कर निरीक्षण किये जा सकते हैं और किये गये हैं:

- पड़ोसी समुदायों के सदस्य (विशेष रूप से जब प्रतियोगिता हो)
- खुले में शौच से मुक्त समुदायों के स्वाभाविक नेता और अन्य लोग
- एक सरकारी समिति
- सरकारी विभाग के कार्मिक
- गैर-सरकारी संगठनों के कार्मिक
- शिक्षक
- समाज के सामान्य सदस्य, उदाहरण के लिये कई लोगों को पड़ोसी गांवों में से बुलाया जा सकता है.

कुछ उपयोगी सिद्धान्त और व्यवहार

- सत्यापन और प्रमाणीकरण समितियों में स्थायी सदस्य नहीं होने चाहिये. सदस्यों को बदलते रहना आवश्यक है (जहां पुरस्कार योजनाएं हैं वहां भ्रष्टाचार के खतरे को कम करने के लिये)
- खुले में शौच से मुक्त गांवों के स्वाभाविक नेताओं को निरीक्षण समितियों का सदस्य बनाया जाना चाहिये
- महिलाओं को सदस्य बनाइये जिससे महिलाओं की स्वच्छता व्यवस्थाओं की जांच की जा सके
- जांच के लिये एक से अधिक बार भ्रमण होने चाहिये
- औचक भ्रमण भी आयोजित होने चाहिये
- सत्यापन और प्रमाणीकरण के लिये सभी सदस्यों के द्वारा हस्ताक्षर करना जरूरी हो
- जब तक कि कम-से-कम 6 माह तक खुले में शौच मुक्त स्तर बना न रहा हो तो कोई भी प्रमाण पत्र जारी न किया जाये
- जब पूरी बारीकी से तथा सख्ती के साथ सत्यापन हो जाये तो गांव के प्रवेश द्वार पर एक बोर्ड लगा देना चाहिये जिस पर अंकित हो कि गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित किया जाता है
- जब किसी पूरे प्रशासनिक क्षेत्र का सत्यापन किया जाना हो तो संगठनों के सदस्यों और आम लोगों में से बहुत व्यक्तियों को सत्यापन में भाग लेने के लिये आमंत्रित किया जाना चाहिये जैसा कि उत्तर पश्चिम बांग्लादेश के उप-जनपदों के संदर्भ में किया जाता है (वहां एक मामले में निरीक्षण दल के सदस्यों की संख्या 300 हो गई थी)

प्रमाणीकरण की प्रक्रियाओं के स्तर का परीक्षण इस बात से हो जाता है कि किस बारम्बारिता के साथ उन्हें रोका जाता है या वापस ले लिया जाता है. निरीक्षकों के रूप में स्वाभाविक नेता ही सबसे अधिक सख्त और बारीकी से चीजों को देखने वाले होते हैं. कम्बोडिया में जहां उनके द्वारा भाग लिया गया 9 में से 7 समुदाय विफल पाये गये.

सत्यापन की गतिविधियों में निम्नांकित सम्मिलित हो सकते हैं, किये गये हैं:

- पूर्व की खुले में शौच की जगहों का भ्रमण
- पौ फटने से पहले और गोधूलि बेला के बाद जांच
- शौचालयों का निरीक्षण
- जानना कि क्या शौचालयों के गड्ढों का उपयोग किया गया है

- बूढ़े लोगों और बच्चों से बातचीत
- समुदाय से पूछना कि स्वास्थ्यकर व्यवहार में आये परिवर्तन का अनुश्रवण किस प्रकार किया जाता है
- स्वास्थ्यकर व्यवहार परिवर्तन के स्पष्ट और सूक्ष्म संकेतक, उदाहरण के लिये हाथ धोने के लिये साबुन, शौचालयों के पास पानी भरे पात्र, इत्यादि
- उल्लंघनों के विषय में पूछना और जानना कि इन मामलों में क्या किया गया
- मल खाने वाले जानवरों को देखना
- जाँच से पता लगाना कि क्या सभी लटकते और गिरते हुए शौचालय नष्ट कर दिये गये हैं
- खुले में शौच से मुक्त समुदायों के सदस्यों को जब मूल्यांकन समितियों में सम्मिलित किया जाता है तो वे खुले में शौच मुक्त होने के स्तर की परख करने के लिये अभिनव युक्तियों का प्रयोग करते हैं, उदाहरण के लिये आम, कटहल या किसी अन्य फल को काटना जिसकी महक तेज होती है और जो मक्खियों को आकर्षित करता है तथा यह जाँच करना कि क्या खुले में शौच बन्द होने के कारण मक्खियों की जनसंख्या में कमी हुई है.

सामुदायिक मूल्यांकनकर्ता और जासूसों के मत

[illegible] इलाका, बांग्लादेश के किशोरगंज जिले के [illegible] यूनियन में समुदाय का एक सदस्य, पड़ोस के गाँव का रहने वाला एक समझदार, अचानक ग़ायब हो गया. अन्य लोग उसकी प्रतीक्षा करने लगे. जब अन्त में वह फिर सामने आ गया तो उसने कहा कि वह अपना कर्तव्य कर रहा था. वह एक मुर्गी का पीछा कर रहा था जिसकी टाँग में मल लगा होने का शक था. मुर्गी का पीछा करते हुए वह मामला मल तक तो नहीं पहुँचा परन्तु वह गाँव के छोर तक जरूर पहुँच गया.

जब योजना का प्रसार बड़े स्तर पर होता है तो सत्यापन और प्रमाणीकरण समितियों के सामने बहुत सी समस्याएं आ जाती हैं जैसा कि भारत में निर्मल ग्राम पुरस्कार के संदर्भ में स्पष्ट होता है. समाधान इस बात में है कि यदि बड़े स्तर पर इस प्रकार का काम करना हो तो विकेन्द्रीकरण करना चाहिये और स्थानीय स्तर पर सत्यापन होना चाहिये.

खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त करने पर उत्सव मनाइये

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के स्थानीय समुदायों और स्थानीय सरकारी तंत्र के बीच मधुर सम्बन्ध स्थापित कीजिये. परन्तु सरकारी कर्मियों को शौचालय निर्माण की सामग्री या आर्थिक सहायता के प्रस्ताव से समुदाय को गुमराह करने का प्रयास न करने दें. परन्तु यदि जोशपूर्ण और उत्साहपूर्ण सहयोग मिलता है तो उसे सहर्ष स्वीकार करें.

सत्यापन और प्रमाणीकरण के साथ अभियान का प्रसार

सत्यापन और प्रमाणीकरण के साथ अभियान का प्रसार करने में समस्याएं सामने आती हैं, विशेषकर तब जब कि पुरस्कार की व्यवस्था भी लागू हो. भारत में, निर्मल ग्राम पुरस्कार योजना के अन्तर्गत उन गाँवों को पुरस्कृत किया जाता है जो खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लेते हैं तथा साथ ही पर्यावरणीय स्वच्छता भी सुनिश्चित कर लेते हैं. सफल समुदायों के नेताओं का राष्ट्रपति के द्वारा सम्मान किया जाता है और समुदायों को एक बड़ी रकम पुरस्कार के रूप में प्राप्त होती है. शुरुआत में सत्यापन और प्रमाणीकरण बहुत सावधानी से किये जा रहे थे. हिमाचल प्रदेश के मण्डी जनपद के एक गाँव ने बहुत अच्छा प्रयास किया था परन्तु उसे असफल घोषित कर दिया गया सिर्फ इसलिये कि एक भण्डार गृह के दो दरवाजों पर "शौचालय" लिखा हुआ था (इस तथ्य के बावजूद कि कभी भी कोई पैन नहीं लगे थे). हाल ही में जबकि आवेदनों की संख्या हजारों में पहुँच गई है (अपुष्ट सूचनाओं के अनुसार 15000 से 20000), सत्यापन और प्रमाणीकरण के काम को अनुबन्ध के आधार पर गैर-सरकारी संस्थाओं को सौंप दिया गया है जिन्होंने अपने स्तर से इसे उप-अनुबन्ध के आधार पर अन्य को सौंप दिया है, और कुछ मामलों में तो इन उप-अनुबन्ध धारकों द्वारा आगे और उप-अनुबन्ध कर दिये गये हैं, कभी-कभी तो अप्रशिक्षित व्यक्तियों को मूल अनुबन्ध में निर्दिष्ट पारिश्रमिक के एक छोटे से भाग के भुगतान की वचनबद्धता के साथ. एक सही सूचना रखने वाले स्रोत का यह मानना है कि जब ऐसा होता है तो परिणाम तो केवल एक "मजाक" ही होगा, और जब सफलता के आधार पर सम्मान और अच्छी धनराशि के आर्थिक पुरस्कार की व्यवस्था हो तो भ्रष्टाचार की सम्भावना स्पष्ट रूप से रहती ही है. इसकी अपेक्षा स्थानीय स्तर पर आयोजित सम्मान कहीं अधिक उत्तम होता है जहाँ प्रतिष्ठा, आत्म-सम्मान, गौरव तथा खुले में शौच से मुक्त होने पर मिलने वाले अन्य लाभों के अतिरिक्त कोई पुरस्कार नहीं होता है.

ऐसा करने का एक अच्छा तरीका यह है कि खुले में शौच मुक्त होने के उपलक्ष्य में उत्सव मनाने के लिये स्थानीय सरकारी तंत्र को सम्मिलित कर लिया जाये. जब भी किसी समुदाय या गाँव के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने के स्तर को प्राप्त कर लिया जाता है तो पुरस्कार के रूप में एक उत्सव मनाने की व्यवस्था कीजिये जिससे अन्य लोगों में भी जोश आये और उनके द्वारा भी प्रतिज्ञा की जाये. वरिष्ठ कर्मियों, राजनेताओं, पत्रकारों, संचार माध्यमों से अन्य लोगों और उसी स्तर के राजस्व ग्रामों के समुदाय सदस्यों को आमंत्रित कीजिये. यह सुनिश्चित कीजिये कि जो भी सम्मानित अतिथि सम्बोधित करें उन्हें पहले से ही सही और पूर्ण सूचनाएं दे दी जायें. उन्हें प्रोत्साहित कीजिये कि वे अन्य लोगों को भी सार्वजनिक रूप से वक्तव्य देने के लिये आमंत्रित करें और समुदाय की प्रगति और योजनाओं से अवगत करायें. जब समुदाय के द्वारा पूर्ण स्वच्छता प्राप्त कर ली जाये तो समुदाय से कहिये कि वे एक बोर्ड लगायें और उसपर यह तथ्य अंकित करें. इससे उनका गौरव बोध बढ़ेगा और वहां आने वाले लोगों की दिलचस्पी भी बढ़ेगी जो कि अपने गाँव वापस जाकर अपने गाँव को भी इसी प्रकार स्वच्छ बनाने के लिये प्रेरित होंगे.

अनुश्रवण और खुले में शौच मुक्त स्तर को बनाये रखना

स्वच्छता के प्राप्त स्तर को बनाये रखने का संकेत इस बात से भी मिलता है कि क्या समुदाय स्वच्छता सीढ़ी पर ऊपर की ओर चढ़ रहा है. स्वच्छता के स्थायी रूप से बने रहने और जीवन शैली का अभिन्न अंग बन जाने के लिये आवश्यक है कि लोगों के व्यवहार में परिवर्तन हो. यह व्यवहार परिवर्तन यदि स्थायी रूप का हो तभी स्वच्छता स्थायी हो सकती है. इसलिये इस व्यवहार परिवर्तन के माध्यम से ही सम्पोषणीयता के संदर्भ में अनुश्रवण किया जा सकता है.

यदि खुले में शौच करने वाले कुछ व्यक्तियों को समुदाय द्वारा दण्डित किया जाता है तो इससे यह पता चलता है कि समुदाय स्वच्छता के प्रति प्रतिबद्ध हो गया है और इसे बनाये रखना चाहता है. शौचालय, विशेष रूप से स्थानीय स्तर पर पहली बार बनाये गये कम लागत के शौचालय, बहुत दिनों तक नहीं टिक पाते और एक-आध साल में ही उनके गड्ढे भर जाते हैं, या गड्ढे की दीवारें ढह जाती हैं, या ढाँचा ही टूट जाता है. सम्पोषणीयता का संकेत तब मिलता है जब परिवारों के द्वारा सहज ही दूसरे शौचालय का निर्माण कर लिया जाता है, विशेषकर जब नया शौचालय पहले वाले से अधिक अच्छा और टिकाऊ हो. सामान्यतया समुदाय के द्वारा स्वच्छता सीढ़ी पर चढ़ने का प्रयास भी सम्पोषणीयता का स्पष्ट संकेतक है.

अनुश्रवण से स्पष्ट हो जायेगा कि और आगे किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता है. कभी-कभी हल्के-फुल्के अनुवर्ती भ्रमण और गतिविधियों की आवश्यकता होती है. उदाहरणार्थ समुदाय के सदस्यों के द्वारा पूर्व में की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिये उन्हें प्रोत्साहित करना, या खुले में शौच से शीघ्र मुक्त होने के लिये एक दूसरे के शौचालयों का उपयोग करने के लिये प्रोत्साहित करना.

कहानियां - इथियोपिया से

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को प्लान इथियोपिया और मध्य, पूर्व, तथा दक्षिण अफ्रीका के सात अन्य प्लान देशों में फरवरी-मार्च 2007 में पहली बार शुरू किया गया. प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों ने दक्षिण पश्चिमी इथियोपिया के इलाके जिमा, बिनोलिडोज एवं चीफ़ुरा क्षेत्र में अवासा के आसपास 12 गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की कार्यविधि से लोगों में जोश की चिंगारी जलाने के लिये ट्रिगरिंग की गई. प्रशिक्षण कार्यशाला के तीन माह के अन्दर ही प्लान इथियोपिया के अनुवर्ती कार्यक्रम के अन्तर्गत 50 से अधिक गांवों ने अपने को पूर्ण रूप से खुले में शौच मुक्त घोषित कर दिया. स्थानीय लोगों के सशक्तिकरण के प्रभाव और मुख्य उदाहरण निम्नवत् हैं. यह सभी समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग के ही परिणाम थे.

खुले में शौच करने वाले अपना दण्ड स्वयं निर्धारित करें

इथियोपिया के मजूरा कोकोटे गांव के लोगों के पास कुछ भी करने का नया तरीका होता है. वे इसे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कहते हैं परन्तु इसका एक हिस्सा तो बहुत ही सरल है. खुले में कोई शौच नहीं, कभी नहीं. इस गांव के कुछ लोगों को यह भ्रम था कि यह नियम उन पर लागू नहीं होता इसलिये वे पहले की तरह ही खुले में शौच करते रहे. लेकिन उनकी तब उतरी हुई पैंट के साथ पकड़े गये लोग शीघ्र ही यह पुनः सोचने को विवश हो गये कि अच्छा होता यदि उन्होंने समुदाय की इच्छा का आदर किया होता. उन्होंने पाया कि वे अपने ही मल को लेकर नजदीक के शौचालय तक जा रहे हैं.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को जब फरवरी 2007 में शुरू किया गया तो स्वास्थ्यकर्मी सेवाओं में से एक ओकारी कोकोटे मिसाइकेल कोबू ने यह प्रतिज्ञा की कि वह अपने गांव को खुले में शौच से मुक्त बना देगी. उल्लंघन करने वालों का पता करके उन्होंने यह सिद्ध किया कि उनकी प्रतिज्ञा पक्की थी. उनके शब्दों में,

"समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता विधि के हमारे गांव में संचालित होने के बाद गांव के प्रत्येक परिवार ने गड्ढे खोदकर अपने लिये शौचालय बनाये. बाहर से आने वालों के लिये हमने मुख्य सड़क के किनारे-किनारे चार सामुदायिक शौचालय भी बनाये. इन सारे प्रयासों के बाद भी मैंने चार व्यक्तियों को गांव के खुले खेतों में अलग-अलग समय पर शौच करते हुए पाया. मैंने उन्हें आदेश दिया कि अपने मल को अपने ही हाथों से उठाये और सबसे पास के शौचालय तक ले जाकर उसमें डालें. उन्हें जब पकड़ा गया तो उनकी पैंट उतरी हुई थी इसलिये उन्होंने कोई प्रतिरोध नहीं किया, परन्तु मुझसे प्रार्थना की कि मैं उन्हें पत्तियों की सहायता से मल को उठा कर ले जाने दूं. मैंने उन्हें अनुमति दे दी और उन्होंने पत्तियों पर मल को उठाकर पास के शौचालय में उसका निष्पादन कर दिया."

दूसरे गांववासी, जोसेफ कोबू ने कहा, "मैंने देखा कि कुछ आगन्तुक खुले खेतों में शौच करने की तैयारी कर रहे हैं. मैं जोर से चिल्लाया और उन्हें शौच करने से पहले ही रोक दिया. मैं हमेशा निगरानी करता रहता हूं जिससे हमारा गांव स्वच्छ रहे और खुले में शौच से मुक्त बना रहे."

मजूरा कोकोटे के मिसाइकेल और जोसेफ गांव में स्वच्छता के रखवाले बन गये हैं और उन्होंने अन्य लोगों से भी उनके साथ आने का अनुरोध किया है. अतो आरशीमु कोकोटे, मजूरा कोकोटे के अवासा में स्वच्छता सुविधाओं की गुणवत्ता में सुधार करते रहने का काम किया है. अपने प्रयासों में समुदाय को प्लान इथियोपिया, वाटर एक्शन और स्थानीय सोडो हेल्थ एवं वाटर ऑफिसेज से सहयोग प्राप्त हुआ है. अलेमायेहू गिरमा, स्वास्थ्य प्रसार कार्यकर्ता, को अपने परिवर्तन के महत्व के विषय में कोई संदेह नहीं है. "हमारे गांव में खुले में शौच की प्रथा इतिहास बनती जा रही है."

न आर्थिक सहायता और न ही कोई प्रतियोगिता - परन्तु समुदाय के द्वारा की जा रही पहल से ही स्वच्छता सम्बन्धी आंकड़ों में वृद्धि होती जा रही है. इथियोपिया के सोडोजिनो सोडा में पहले आठ गांवों ने फरवरी 2007 में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अंगीकार किया. तीन माह से भी कम समय में यह 57 गांवों तक पहुंच गया और 1436 परिवारों ने एक गड्ढे वाले शौचालय अपनी ही पहल पर निर्मित कर डाले. सोडोजिनो सोडा के स्वास्थ्य कार्यालय के प्रमुख अतो गेविटा कासा ने उल्लेख किया है कि मजूरा कोकोटे के 1265 परिवारों के पास अब अपने शौचालय हैं और इनमें से 465 का निर्माण समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के शुरू होने के बाद किया गया.

जनमत की ताकत

इस पहल को प्लान इथियोपिया का सहयोग प्राप्त है जिसके अन्तर्गत लगभग 3000 अमेरिकी डॉलर में समुदाय के स्वास्थ्यकर्मी सेवाओं, गांव के स्वास्थ्य अधिकारियों, स्वास्थ्य प्रसार कार्यकर्ताओं, और सरकारी संस्थाओं के कर्मियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है. पिछले वर्षों में प्लान के द्वारा प्रति परिवार स्वच्छ शौचालय के पक्के भाग के लिये 25 डॉलर खर्च किये जाते थे, इसलिये 1436 शौचालय बनाने के लिये तो 35000 अमेरिकी डॉलर की जरूरत होती. आज यहां कोई आर्थिक सहायता नहीं है. कोई प्रतियोगिता भी नहीं है. समुदाय अपनी ही आय से खर्च करके अपने ही बल से यह पहल कर रहे हैं. वे अपने गांवों को खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त करने के लिये कटिबद्ध, दृढ़ निश्चय और जोश से भरे दिखाई दे रहे हैं. मुख्य किरदार निभाने वाली संस्थाओं - प्लान इथियोपिया, वाटर एक्शन, सोडोजिनो सोडा हेल्थ एवं वाटर ऑफिसेज, स्वास्थ्यकर्मी सेवा और समुदाय के बीच बहुत मधुर सम्बन्ध हैं. इस मामले से स्पष्ट होता है कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से स्वच्छता और स्वास्थ्यकर व्यवहार पर प्रभाव और फर्क पड़ता है तथा खुले में शौच से मुक्त होने में मदद मिलती है. परन्तु प्रक्रिया को उचित ढंग से संचालित करना और सुगम बनाना तथा गुणवत्ता और सुविधाओं के उपयोग पर संबंधित अनुवर्ती गतिविधियां बहुत ही महत्वपूर्ण होती हैं.

दुष्ट आत्माओं का डर - मोहिनी (चार्म)

सियरा लियोन के दक्षिणी, पूर्वी और उत्तरी प्रान्तों के कुछ भाग की "पोरो सीक्रेट सोसायटी" के द्वारा 'चार्म', जो स्थानीय भाषा का शब्द है का प्रयोग किया जाता है. चार्म का अर्थ है एक भौतिक संरचना जिसमें एक मिट्टी मिश्रण और कोल से बनाई जाती है और इस पर एक विशेष प्रकार से पत्तियां लपेट दी जाती हैं. इस प्रतीक का उपयोग लोगों को दुष्ट आत्माओं से डराने के लिये किया जाता है. दुष्ट आत्माएं शरीर में प्रवेश कर जाती हैं और शरीर को रोग ग्रस्त कर देती हैं जिसका परिणाम मृत्यु भी हो सकता है. जहां भी इसे रखा जाता है वहां लोग जाने से कतराते हैं क्योंकि उन्हें दुष्ट आत्माओं का डर रहता है. परन्तु यह भी मान्यता है कि जब लोग बुरी नियत से इसके पास जाते हैं तभी दुष्ट आत्माएं आक्रमण करती हैं. इन्हें सामान्यतया फलोद्यान, फार्म, गोपनीय झाड़ियों (जहां सीक्रेट सोसायटी के सदस्य ही जा सकते हैं) और विशेष स्थलों पर लगाया जाता है.

सियरा लियोन के कोनो के जिले 'स्वाल बो' चीफडम के कायडु गांव में स्थानीय समुदाय के द्वारा चार्म के इस विचार का इस्तेमाल कुछ खुले में शौच के स्थानों से लोगों को डरा कर भगा देने के लिये किया जाने लगा.

जोसेफ ए. कोपुरा, प्रोग्राम इंजीनियर
क्रिश्चियन एड टु अफ्रीका एप्लिकेटेड कोआपरेटिव एग्रीकल्चर,
कोइडुटाउन, सियरा लियोन

अध्याय 5

प्रसार एवं समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से आगे

सन् 1999 के उत्तरार्ध में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अभिनव पहल की शुरुआत से अब तक इसका तेजी से प्रसार हुआ है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को कम-से-कम 15 देशों में सफलतापूर्वक शुरू किया गया है. यह मुख्य रूप से इस हस्तपुस्तिका के प्रधान लेखक के द्वारा चलाये गये व्यावहारिक प्रशिक्षणों के माध्यम से सम्भव हो सका है. प्रधान लेखक के द्वारा वर्ष 2000 से 2007 तक 15 देशों में कम-से-कम 65 व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं का संचालन क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया गया. यह प्रशिक्षण 1400 से अधिक प्रशिक्षकों, कार्यान्वयनकर्ताओं, शासन के पदाधिकारियों, वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों, गैर-सरकारी संगठनों और सहायता प्रदान करने वाले संगठनों के स्टाफ और कम-से-कम 50 विभिन्न अभिकरणों के प्रधान कार्यकर्ताओं के लिये संचालित किये गये. यह सब कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विकास संगठनों के सहयोग और अभिनव पहल से सम्भव हो सका है. यह सभी संस्थाएं सक्रिय रूप से इसके प्रसार और प्रचार में सहयोग करती रही हैं जिससे जहां इसे शुरू किया गया वहां फैलाने तथा नये देशों में शुरू करने में मदद मिली.

(अभिकरणों, देशों और प्रशिक्षणों की विस्तृत जानकारी के लिये देखिये – www.livelihoods.org/hot_topics/CLTS.html)

इन प्रशिक्षणों में प्रशिक्षित कई लोगों ने अपने संगठनों के अन्य लोगों को ट्रेनिंग का प्रशिक्षण प्रदान किया है. कम-से-कम भारत, बांग्लादेश, इण्डोनेशिया और पाकिस्तान में प्रशिक्षित लोगों के द्वारा यह प्रशिक्षण अपने संगठन के बाहर अन्य लोगों को भी दिया गया है जिसमें सरकारी कार्मिक भी सम्मिलित हैं. इनमें से कुछ प्रशिक्षण तो बहुत अच्छे रहे हैं. परन्तु काफी प्रशिक्षणों में उच्च गुणवत्ता नहीं बनाये रखी जा सकी है जो कि एक चिंता का विषय है.

नेत्रकोणा बांग्लादेश में समुदाय संचालित पहल की सफलता का उत्सव मनाने के लिये स्कूलों में सौंपा के युवा समूहों के द्वारा आयोजित विशाल सभा और समारोह. अपने क्षेत्र की तरह आन्दोलन की सृजित कार्यशैली के अनुसार और साथ इस प्रकार की सभाओं और उत्सवों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिये आमंत्रित किये जाते हैं. चुने गये कुछ प्रतिनिधियों में से उत्तम कर आगे मीडिया अन्य लोगों को प्रोत्साहित करके समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रसार और विस्तार में काफी ही महत्वपूर्ण योगदान करते हैं.

प्रशिक्षण और प्रसार - क्या करें और क्या न करें

आगे लिखी बातों में अवश्य ही परिवर्तन करने और कुछ जोड़ने की आवश्यकता होगी. स्थितियां बदलती रहती हैं और रणनीतियां भी भिन्न-भिन्न होती हैं, परन्तु अब इतनी जानकारी हो गई है कि अनुभव तथा सामान्य विवेक के आधार पर सुझाव दिये जा सकते हैं. इनमें वह चीजें भी शामिल हैं जो अपेक्षित हैं तथा वह भी जिनसे बचने की आवश्यकता है.

क्या अवश्य करें

- जिन्हें प्रशिक्षण मिल चुका है उनमें से ऐसे व्यावहारिक प्रशिक्षकों की पहचान कीजिये जिनका ट्रिगरिंग का काम अच्छा रहा है और उनके द्वारा जिन समुदायों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रेरणा जगाई गई है वहां के लोगों ने नये व्यवहार परिवर्तन को अपना लिया है.
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रति प्रतिबद्ध संगठनों के अच्छे व्यावहारिक सुगमकर्ताओं को चुनिये, प्रशिक्षित कीजिये और उन्हें पूरा सहयोग प्रदान कीजिये
- इस बात पर जोर दीजिये कि सभी प्रशिक्षण व्यावहारिक हों जिससे समुदाय के बीच जाकर व्यावहारिक रूप से ट्रिगरिंग करने का अनुभव प्रतिभागियों को मिल सके. सभी प्रशिक्षणों में ट्रिगरिंग और तात्कालिक अनुवर्ती भ्रमण के माध्यम से अनुभव आधारित ज्ञानार्जन सम्मिलित होना चाहिये.
- कोशिश करें कि मुख्य प्रशिक्षक और सुगमकर्ता पूर्णकालिक हों.
- सुगमकर्ताओं को इस प्रकार व्यवस्थित कीजिये कि वे ट्रिगरिंग से पहले, ट्रिगरिंग के दौरान और ट्रिगरिंग के बाद एक टीम या दल के रूप में काम कर सकें.
- अधिक अनुकूल स्थितियों से शुरू कीजिये और फिर अधिक चुनौतीपूर्ण स्थितियों की ओर बढ़िये (अध्याय 2 ट्रिगरिंग से पहले, देखिये)
- उन समर्थकों के साथ सम्पर्क स्थापित कीजिये जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रति समर्पित हैं और लगातार दीर्घ काल तक सहयोग कर सकते हैं.
- अभियान शुरू कीजिये.
- प्रतियोगिता को प्रोत्साहित कीजिये, सफलता का उत्सव मनाइये.
- अभियान चलाइए और सीखने को बढ़ावा दीजिये, खुले में शौच से मुक्त गाँवों को सीखने के लिये प्रयोगशाला बनाइये.
- समुदाय में से सुगमकर्ताओं की पहचान कीजिये और उनके साथ सहयोग कीजिये. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ज्योति से जगमग समुदायों के स्वाभाविक नेताओं में से सुगमकर्ताओं की पहचान कीजिये और उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण, सहयोग, और प्रोत्साहन दीजिये जिससे वे अन्य समुदायों में ट्रिगरिंग और अनुवर्ती भ्रमण कर सकें.
- ट्रिगरिंग के बाद प्रगति की समीक्षा कीजिये. यदि प्रगति संतोषजनक नहीं है तो ट्रिगरिंग बन्द कर दीजिये तथा रह गई कमी का पता लगाने के लिये पूरी प्रक्रिया का पुनरावलोकन कीजिये.
- प्रयास कीजिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान ऐसा हो जाये कि अपने आप फैलता चला जाये.
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को शुरू की एक रणनीति के रूप में देखिये जिससे समुदाय का सशक्तिकरण इस प्रकार हो सके कि वे अन्य विकास कार्यों में भी नई चहल एकजुटता के साथ अपने ही स्तर पर कर सकें.

शायद सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि

- सुनिश्चित कीजिये कि सभी प्रशिक्षण व्यावहारिक हों जिसमें समुदाय के बीच ट्रिगरिंग करने की प्रक्रिया को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया गया हो.

गम्भीर खतरों एवं गलतियों से बचने के लिये याद कीजिये कि सहभागी ग्राम्य आकलन का जिसने बड़े पैमाने पर दुरुपयोग किया गया था. कक्ष में ही प्रशिक्षण दिया जाने लगा था, व्यवहार और अभिवृत्ति की उपेक्षा होती थी, समुदाय के बीच में कोई एक गतिविधि संचालित की जाती थी और अनुवर्ती गतिविधियों को छोड़ दिया जाता था, आंकड़ों का प्रचार तो होता था परन्तु लोगों का सशक्तिकरण नहीं. ऐसा ही कई मामलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के साथ भी हो चुका है और इस प्रकार के दुरुपयोग से हर कीमत पर बचने की आवश्यकता है. इसका अर्थ है:

क्या नहीं करना है

- प्रसार करने की इच्छा के कारण कोई जल्दबाजी न कीजिये जिससे प्रक्रिया की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़े.
- प्रशिक्षकों और सुगमकर्ताओं के लिये भी ऐसे प्रशिक्षण को न तो आयोजित होने दीजिये और न ही उसके लिये सहयोग दीजिये जिसमें प्रशिक्षण कक्ष में बातों के माध्यम से ही प्रशिक्षण का प्रयास किया जा रहा हो और सम्बन्धित समुदाय के बीच जाकर ट्रिगरिंग और अनुवर्ती भ्रमण एवं गतिविधियों के आवश्यक भागों का समावेश न किया गया हो.
- ऐसी प्रशिक्षण एजेंसियों और संस्थाओं के साथ मिल कर काम मत कीजिये जो कि समुदाय के बीच जाकर गतिविधियों का आयोजन नहीं करतीं और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये तैयार दिखती हैं.
- ऐसे गैर-सरकारी संगठनों और अन्य एजेंसियों के साथ मिल कर काम मत कीजिये जो अपने लाभ के लिये तथा समुदायों का शोषण करने के लिये पहले और सुनिश्चित करने जैसी गतिविधियों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का नाम देकर आगे बढ़ाने में लगे रहते हैं.

अभिकरणों के कार्मिकों तथा प्रभावी व्यक्तियों के द्वारा रणनीतिक कार्य

अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय अभिकरणों तथा सहायता प्रदान करने वाली संस्थाओं, नेताओं, सरकारों, अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों, गैर-सरकारी संगठनों, नीति-निर्धारण से जुड़े राजनेताओं के साथ मिलकर इस प्रकार के कार्य किये जा सकते हैं जिससे विचारों का प्रसार हो, लोगों की सोच में प्रभाव पड़े और अनिच्छित अवधारणाओं का प्रतिकार हो सके. यह संभव माध्यमों से जुड़े लोगों पर भी लागू हो सकता है.

इस प्रकार के सभी लोगों और उनके संगठनों के लिये:

- सीखी गई बातों और प्राप्त किये गये अनुभवों को बांटने तथा यह दर्शाने के लिये क्या उपलब्ध हो सकते हैं सफल मामलों की जानकारी देने के लिये कार्यशालाओं और बैठकों का आयोजन एवं संचालन कीजिये.
- एक देश से दूसरे देश और एक राज्य से दूसरे राज्य के भ्रमण की व्यवस्था कीजिये जिससे खुले में शौच से मुक्त समुदायों, स्वाभाविक नेताओं और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के चैम्पियनों के बीच आमने-सामने अन्तर्क्रिया हो सके.
- अनुवर्ती बैठकों और परिचर्चाओं का आयोजन कीजिये जिससे नीतियों में व्यवस्थात्मक परिवर्तन करने का प्रयास किया जा सके.

और सहयोग के लिये

- ऐसे संगठनों की पहचान कीजिये जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अंगीकार करने के लिये उत्सुक हों तथा उनका सम्पर्क अच्छा काम करने वाली अन्य संस्थाओं से करा दीजिये और उनके लिये व्यावहारिक प्रशिक्षण की व्यवस्था कीजिये.
- सफलता और विफलता की घटनाओं, प्रशिक्षण और सीखने की सामग्री, फ्लिपचार्ट, वीडियो आदि का संकलन, राष्ट्रीय अथवा संस्थाओं के स्तर पर अभिलेखीकरण, प्रकाशन और प्रसार कीजिये. और ऐसी पुनरावृत्ति करने वाली सामग्री के प्रति आपत्ति दर्ज कीजिये जिसके माध्यम से हानिकारक व्यवहार का पुनरुत्थान किया गया हो.

यह सबसे महत्वपूर्ण है कि नीति-निर्धारकों, प्रबन्धकों, वित्त अधिकारियों को, चाहे वे सरकार में हों या अनुदान अथवा ऋण देने वाले अभिकरणों में या गैर सरकारी संगठनों में, को यह स्पष्ट कर दीजिये और दिखा दीजिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की एक मुख्य पूर्वपेक्षा है कि परिवारों को निर्माण सामग्री पर आर्थिक सहायता/सब्सिडी प्रदान न करने की निश्चित और लगातार एकसी नीति हो. जहां पर पुनर्विनियोजन की व्यवस्था है सब्सिडी के लिये आवंटित राशि को प्रशिक्षण आदि के लिये व्यय किया जा सकता है, यहां पूर्व में स्वीकृत आवंटित धनराशि से बहुत कम भाग के व्यय हो पाने की आशंका होती है. धीरे और उदाहरण देखें. यदि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का असर तेजी से होता है तो शुरुआत में कम व्यय करने तथा बाद में अधिक व्यय करने की स्थिति होगी. जब एक बार शुरुआत हो जाये और कुछ गांव खुले में शौच से मुक्त हो जायें तो प्रशिक्षण, क्षमता विकास, खुले में शौच मुक्त गांवों के भ्रमण, स्वाभाविक नेताओं के सामुदायिक परामर्शदाताओं के रूप में उपयोग पर होने वाले व्यय में वृद्धि होने लग जायेगी और इसके लिये पर्याप्त बजट आवंटन की आवश्यकता होगी परन्तु फिर भी बहुत अधिक राशि की आवश्यकता नहीं होगी.

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि परिवारों के लिये सब्सिडी के रूप में स्वच्छता सामग्री पर होने वाले व्यय को "समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता" का नाम न दिया जाये. ऐसे किसी भी दुरुपयोग की पहचान की जानी चाहिये तथा तत्काल इसे हतोत्साहित किया जाना चाहिये.

कार्यान्वयनकर्ता अभिकरण समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को स्वीकार करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं क्योंकि इसकी कम लागत से उनके द्वारा किये जाने वाला धनराशि वितरण सीमित हो जाता है. ऐसे अभिकरणों को चाहिये कि वे तरीके बदलें और शुरू में कम तथा बाद में ज्यादा खर्च करने के लिये तैयार हो जायें.

जब बजट में निर्धारित बहुत बड़ी राशि को समय से खर्च करने का दबाव रहता है तो नीतियों में परिवर्तन लाने के लिये रणनीतियों में निम्नांकित सम्मिलित हो सकते हैं:

- आवंटित धनराशि को ग्रामीण इलाकों के स्कूलों, बाजारों एवं संस्थाओं की स्वच्छता पर खर्च करने की व्यवस्था
- समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये पूर्ण रूप से समर्पित और नये गैर-सरकारी संगठन को वित्तीय सहायता (जैसा कि बांग्लादेश में विलाटी के लिये किया गया है)
- पूर्ण स्वच्छता प्राप्त कर लेने वाले समुदायों को पुरस्कार प्रदान (जैसा भारत में किया गया है) (यह विवादास्पद हो सकता है इस विषय पर विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोण और विचार हैं)
- पायलट के रूप में पहले अपने स्तर पर क्रियान्वित करना फिर सुव्यवस्थित ढंग से नई अवधारणा का प्रसार और प्रचार कीजिये (WSLIC2 में हुआ). जब बड़े क्षेत्रों में अभियान फैल जाये तो उसके अनुसार अधिक खर्च कीजिये
- शोध कीजिये और व्यावहारिक अनुभव के माध्यम से सीखिये

गांव के स्तर पर ट्रिगरिंग के लिये सुगमकर्ता दलों का प्रशिक्षण

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की कार्यशालाएं सामान्यतया 4 या 5 दिनों की अवधि की होती हैं. गांवों के भ्रमण का दिन और समय समुदाय के परामर्श से ही निर्धारित किया जाता है. 5 दिवसीय कार्यशाला की संरचना और दिवसों/गतिविधियों का अनुक्रम इस प्रकार हो सकता है:

आवंटित राशि के कम खर्च होने की समस्या का समाधान

बांग्लादेश में शौचालयों का निर्माण लोकप्रिय था क्योंकि सरकार की धनराशि सीधे उन गरीब परिवारों पर खर्च की जा सकती थी जिनके कब्जे को प्राथमिकता किया गया था और एक शौचालय निर्माण की सामग्री पर 30-50 डॉलर तक व्यय किया जा सकता था. लेकिन प्लान को यह जानकारी थी कि इस प्रकार निर्मित सभी शौचालयों का उपयोग नहीं किया जा रहा था तथा सभी गरीबों तक सहायता नहीं पहुंच सकती थी. 2003 में कमाल कार द्वारा प्रशिक्षित किये जाने के बाद प्लान के स्टाफ को समझ में आ गया कि किस प्रकार एक पूरा समुदाय खुले में शौच बन्द करने की शपथ ले सकता है और लोग अपने आप ही अपने लिये शौचालयों का निर्माण कर सकते हैं. जबकि प्लान ने 600 शौचालयों के निर्माण का लक्ष्य रखा था उन्हीं गांवों के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अंगीकार कर लिये जाने के फलस्वरूप गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गये और उन्होंने 6000 से ज्यादा शौचालयों का निर्माण कर डाला. इन परिणामों से स्टाफ बहुत प्रसन्न हो गया परन्तु कन्ट्री डायरेक्टर के मन में जल्दी ही एक समस्या दिखाई देने लगी. चूंकि अब हम सामग्री और तकनीकी सहायता के लिये भुगतान नहीं कर रहे थे हम केवल 12000 डॉलर ही खर्च करने जा रहे थे और यह भी प्रशिक्षण तथा प्रचार सामग्री पर जबकि उस वर्ष के लिये हमारा बजट 60000 डॉलर था. हम लोग बहुत सफलता प्राप्त कर रहे थे, लक्ष्य से बहुत अधिक, परन्तु हम बजट का केवल थोड़ा हिस्सा ही खर्च कर रहे थे. मुख्यालय की दृष्टि से बजट का कम खर्च होना खराब नियोजन तथा कार्यान्वयन की क्षमता की कमी को दिखाने होगा तथा प्रायोजकों से प्राप्त धन का लाभ सीधे समुदायों को मिलता हुआ नहीं दिखाई देगा.

और अनुभव हो जाने पर शेष राशि के अच्छे उपयोग का रास्ता मिल गया. अन्य लोगों को जोड़कर विशाखी नाम की एक नई गैर-सरकारी संस्था का गठन कर लिया गया जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पूरे बांग्लादेश में बढ़ावा देने के प्रति समर्पित थी. और इस प्रकार प्लान की नई धनराशि से गरीबों को इतना ज्यादा फायदा हुआ कि उसे मापा नहीं जा सकता.

स्रोत: एडवर्ड एबे, पूर्व कन्ट्री डायरेक्टर, प्लान बांग्लादेश

पहला दिन: *अभिप्रेरीकरण एवं तैयारी.* पृष्ठभूमि, स्वच्छता के लिये पारम्परिक आर्थिक सहायता आधारित विधि के स्थान पर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की कार्यविधि का विकास. विगत वर्षों की विफलताएं. विधियों का पुनर्भ्यास और अभिप्रेरीकरण. समूह गठन, भूमिका निर्धारण (मुख्य सुगमकर्ता, सह-सुगमकर्ता, विषय वस्तु और प्रक्रिया रिपोर्टर, वातावरण नियंत्रक, कमरे की गतिविधि को सुगम बनाने के लिये कम-से-कम दो सुगमकर्ता), महिलाओं के साथ काम करने के लिये महिला प्रतिभागियों के समूहों का गठन. समूहों द्वारा रणनीतियों का निर्धारण.

गांव या उप-गांव के मुखिया, स्थानीय समुदाय के नेता, या जहां समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का ट्रिगरिंग किया जाता है वहां के समुदाय से चयनित सदस्यों को सामान्यतया कार्यशाला में प्रतिभाग करने के लिये आमंत्रित किया जाता है. जब पहले दिन के सत्र पूरे हो जाते हैं तो यह आमंत्रित लोग (प्रत्येक चयनित गांव से एक या दो) अपने समुदाय के साथ एक बड़ी बैठक का सुविधाजनक स्थान पर आयोजन करने के लिये लौट जाते हैं. अगले दिन जब ट्रिगरिंग दल वहां पहुंचता है तो समुदाय बैठक के लिये तैयार होता है और लोगों को बैठक के स्थान की जानकारी होती है.

दूसरा दिन: *समुदायों के बीच जाकर ट्रिगरिंग और अनुभवों का आदान-प्रदान*

तीसरा दिन: *संक्षेप में अनुभवों को बांटना और द्वितीय ट्रिगरिंग.* पहले दिन के अनुभवों को संक्षेप में बांटना तथा वीडियो देखना जिससे पता चल सके कि सुगमकर्ताओं द्वारा किस प्रकार प्रक्रिया संचालित की गई और विशेष रूप से यह जानना कि उनकी अभिवृत्ति और व्यवहार किस प्रकार का रहा. चर्चायें कि इनमें किस प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता है और फिर किसी दूसरे समुदाय में ट्रिगरिंग.

चौथा दिन: *गांव में की गई ट्रिगरिंग के अनुभवों को बांटना, तथा सीखने योग्य बातों को उजागर करना* विशेष रूप से पहले और दूसरे दिन की समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता ट्रिगरिंग के अनुभवों की तुलना करना. यदि पहले दिन के अनुभव के आधार पर बातों को ठीक से सीखा जाता है तो सामान्यतया दूसरे दिन की ट्रिगरिंग की प्रक्रिया के संचालन में बहुत सुधार देखा जा सकता है. प्रतिभागियों के संगठनों के संदर्भ में कार्य योजनाओं का निर्माण तथा प्रस्तुतीकरण. ट्रिगरिंग के बाद के अनुवर्ती भ्रमण और गतिविधियों के संदर्भ में प्रतिभागियों की भूमिका का निर्धारण निर्णायक हो सकता है. संयुक्त मूल्यांकन, योजना और उत्सव मनाने की विधियों का निर्धारण भी महत्वपूर्ण होता है.

पांचवां दिन: *फीडबैक और अनुवर्ती गतिविधि कार्यशाला* जिसमें कार्य योजनाओं और कार्यों पर समुदायों से फीडबैक लिया जाता है. इससे समुदायों के बीच तथा स्वाभाविक नेताओं के बीच प्रतियोगिता शुरू हो सकती है.

मुख्य लोगों को पांचवें दिन आमंत्रित किया जाना चाहिये. संदर्भ के आधार पर यह राजनेता, सरकारी अधिकारी/कर्मचारी, गैर-सरकारी संगठनों से जुड़े लोग और स्वच्छता के कार्य में संलग्न इन्जीनियर, बहुपक्षीय अभिकरणों से जुड़े व्यक्ति हो सकते हैं. इससे उन्हें समुदाय के प्रतिनिधियों को देखने और सुनने का अवसर मिलेगा तथा यह भी जान सकेंगे कि पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त होने के लिये उनकी कार्य योजनाएं क्या हैं.

ध्यान देने योग्य बिन्दु:

- भाषा. यदि सम्भव हो तो अच्छा होगा कि मुख्य सुगमकर्ता स्थानीय भाषा में पटु हो. अन्य के संदर्भ में प्रशिक्षित दुभाषियों की व्यवस्था आवश्यकतानुसार करनी होगी.
- समूहों द्वारा कही गई बातें - महिलाओं, बच्चों के समूहों द्वारा कही गई बातें - ट्रिगरिंग के अन्त में अन्य लोगों के समक्ष इनका प्रस्तुतीकरण किया जाता है.
- गांव के मुखिया और स्थानीय सरकारी कर्मचारियों को बहुत पहले से ही यह स्पष्ट कर दिया जाना चाहिये कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता में किसी भी प्रकार की सब्सिडी या आर्थिक सहायता का प्रावधान नहीं है. यह इसलिये आवश्यक है कि कहीं वे ट्रिगरिंग की प्रक्रिया के बीच में ही अचानक से प्रकट होकर सब्सिडी की बात न शुरू कर दें. यदि सम्भव हो तो विगत वर्षों में (जिले/राज्य/देश में) चलाये जा रहे सब्सिडी आधारित स्वच्छता कार्यक्रम के इतिहास पर उनसे चर्चायें की जानी चाहिये और उसकी समीक्षा की जानी चाहिये. इस प्रकार के मुद्दे और प्रश्न जैसे कि सब्सिडी किसे मिली? उसका चयन किस प्रकार किया गया? क्या सब्सिडी का परिणाम खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त करना हुआ? क्या सरकार सबको सब्सिडी दे का व्यय वहन कर सकती है? इन सब बातों पर चर्चायें की जानी चाहिये.

- समुदाय के सदस्यों को समय और स्थान की सूचना पहले से दी जानी चाहिये. याद रखिये कि समुदाय के जितने अधिक लोग भाग लेंगे उतना ही अधिक ट्रिगरिंग के सफल होने की सम्भावना होगी.

यह महत्वपूर्ण है कि जिन लोगों को प्रशिक्षित किया है उनसे फिर मिला जाये जब उनके द्वारा गांवों में जाकर ट्रिगरिंग सम्पन्न करके व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर लिया गया हो. यह समीक्षा करने तथा कौशल एवं कार्यविधि को सुदृढ़ करने का एक अच्छा अवसर है. इस समय सामने आने वाली समस्याओं और मुद्दों के समाधान पर भी विचार किया जा सकता है. इस प्रकार की किसी भी बैठक में सामने आने वाले निष्कर्षों को आमंत्रित किया जा सकता है जिससे वे अपने अनुभवों को सामने रख सकें और सुधार के लिये नई रणनीतियों को विकसित करने में सहायक हो सकें.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता प्रशिक्षण की गुणवत्ता के लिये प्रतिबद्धता

तेजी से प्रसार, प्रशिक्षण की बढ़ती मांग और कार्य आकार में वृद्धि होने के कारण कुछ स्थानों में प्रशिक्षण की गुणवत्ता में कमी आने लगी है. सरकारी और सहायता प्रदान करने वाले अभिकरणों के द्वारा निविदा और चयन के आधार पर खुले बाजार से प्रशिक्षण अभिकरणों की सेवाएं ली जा रही हैं. इनमें से कुछ अभिकरणों के द्वारा बहुत से प्रशिक्षणों का आयोजन किया जा चुका है. यह प्रशिक्षण व्यावहारिक रहे जिनमें समुदाय के बीच जाकर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग सम्मिलित थी परन्तु जिन समुदायों में ट्रिगरिंग की गई उनकी संख्या के सापेक्ष बहुत कम समुदाय ही खुले में शौच से मुक्त स्तर पाने में सफल पाये गये. इस अनुपात तथा खुले में शौच मुक्ति की ओर अग्रसर होने के अन्य संकेतकों पर बारीकी से नजर रखी जानी चाहिये. यदि स्थिति असंतोषजनक हो तो स्पष्ट है कि प्रशिक्षण की गुणवत्ता अपेक्षा के अनुरूप नहीं रही होगी या अनुवर्ती भ्रमण का अभाव.

इथियोपिया के सिमा जोड़ा के खुले में शौच से मुक्त समुदाय के लोग गर्व से खुले में शौच से मुक्त अपने गांव को बाहर से आने वालों को दिखाते हुए जिन्हें बगल के गांव और आसपास के क्षेत्र से भ्रमण कार्यक्रम के अन्तर्गत भी सम्मिलित हैं.

परियोजना के मध्य में परिवर्तन - न्यून आय वाले समुदायों के लिये जल एवं सैनिटेशन परियोजना 2, इण्डोनेशिया में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता

जब न्यून आय समुदायों के लिये जल एवं सैनिटेशन परियोजना (WSLIC2) 2001 में प्रारम्भ हुई तो समुदायों को शौचालयों के निर्माण के लिये 2880 डॉलर के बराबर राशि का अनुदान एक परिक्रामी कोष बनाने के लिये दिया गया. परिणाम बहुत उत्साहजनक नहीं रहे. अधिकांश लाभ बेहतर आय वालों को ही मिला. जिस प्रयोजन के लिये यह धनराशि उपलब्ध कराई गई थी उस पर व्यय करने के बाद किसी भी समुदाय के द्वारा इसे कोष में वापस करने का कोई प्रयास भी नहीं किया गया. समस्या यह थी कि परियोजना में स्वच्छता एवं स्वास्थ्यकर गतिविधियों की अपेक्षा जलापूर्ति पर अधिक ध्यान दिया जाता था. समुदायों को यह पता नहीं था कि शौचालयों की मांग में वृद्धि कैसे हो सकती है और जिन महंगे विकल्पों को बढ़ावा दिया जा रहा था वह गरीब लोगों की पहुंच से बाहर थे.

वर्ष 2006 में चार सफल जिलों (तथा एशियन डेवलपमेंट बैंक द्वारा सहायतित स्वच्छता परियोजना के दो जिलों) में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का परीक्षण किया गया जिसमें निर्माण सामग्री पर सब्सिडी की व्यवस्था नहीं थी. इन जिलों में सफलता मिलने पर 2007 के प्रारम्भ में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार 6 और जिलों तक किया गया. 2007 के शुरू में परिक्रामी कोष की रणनीति को त्याग दिया गया और सभी नये परियोजना गांवों के लिये समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अपनाने का निर्णय लिया गया. अगस्त 2007 तक 34 गांव तथा 2 उपजिले स्वघोषित खुले में शौच से मुक्त हो गये, जबकि पूर्व की परिक्रामी कोष परियोजना कार्यान्वयन के पहले तीन वर्षों में एक भी गांव खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हुआ था. परियोजना के कार्यान्वयन के बीच में ही दृष्टिकोण तथा कार्यविधि में मौलिक परिवर्तन हुआ. यह संभव हुआ स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ कर्मियों की प्रतिबद्धता और जल एवं सैनिटेशन प्रोग्राम की सहायता से. इसका श्रेय व्यावहारिक प्रदर्शन और प्रतिपादन को भी जाता है जिसके अन्तर्गत उनको दिखाया गया कि किस प्रकार समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कार्यविधि से बिना किसी प्रकार की सब्सिडी दिये बहुत कम समय में कितने अच्छे परिणाम प्राप्त हो सकते हैं. इसे सम्भव करने में स्वास्थ्य मंत्री का भी हाथ है जिन्होंने घोषित कर दिया था कि उनके विभाग के लिये स्वच्छता की नई रणनीति समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता ही होगी. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्तर्गत विकेन्द्रित कार्य पद्धति का अवसर प्राप्त हुआ. अनुभवी प्रशिक्षकों, सुगमकर्ताओं और स्वाभाविक नेताओं के समूह को विकसित करने का अवसर मिला. कुछ जिलों के लोगों ने पाया कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अन्य जिलों में शुरू हो गई थी और उसके बहुत अच्छे परिणाम सामने आ रहे थे. उन्हें डर था कि कहीं वे छूट न जायें. ऐसे जिलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की मांग पैदा करने का अवसर भी मिला. सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि परियोजना के बीच में ही परिवर्तन करके जल एवं सैनिटेशन फॉर लो इनकम कम्युनिटीज 2 ने इण्डोनेशिया की राष्ट्रीय स्वच्छता नीति में परिवर्तन को प्रेरित कर दिया है.

स्रोत: नीना शतोरिया, पार्टिसिपेटरी डेवलपमेंट एण्ड कैपेसिटी बिल्डिंग एडवाइजर, (WSLIC 2) इण्डोनेशिया

पाकिस्तान में सामुदायिक सक्रियतावादियों के माध्यम से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार

पाकिस्तान के प्रान्तों तथा स्थानीय स्तर से सरकारी कर्मियों, गैर-सरकारी संगठनों तथा अनुदान देने वाली संस्थाओं के कर्मियों के द्वारा 2007 में बांग्लादेश का अध्ययनार्थ भ्रमण किया गया. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अपेक्षा से अधिक सफलता का पाकिस्तानी शिष्ट मण्डल पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और उन्हें स्पष्ट हो गया कि खुले में शौच से मुक्त होने के मार्ग में गरीबी के कारण कोई रुकावट नहीं आती. जबकि इस अभियान के पूरे बांग्लादेश में फैलने के कार्य में गैर-सरकारी संगठनों के द्वारा किया जा रहा कार्य बहुत सराहनीय था यह महसूस किया गया कि गैर-सरकारी संगठनों के माध्यम से इसका प्रसार करने में पाकिस्तान के संदर्भ में दिक्कतें आयेंगी.

इस अनुभव और सोच के आधार पर रूरल सपोर्ट प्रोग्राम नेटवर्क ने निश्चय किया कि सामुदायिक एकजुटता प्राप्त करने के लिये गांव के सक्रियतावादियों का उपयोग एक प्राथमिक संसाधन के रूप में किया जायेगा. जो तरीका अपनाया गया वह मूल रूप से उत्प्रेरण विकास का तरीका है. इसके माध्यम से यह प्रयास किया जाता था कि लोगों में एक साथ जागरूकता पैदा हो और वे एकजुट होकर 'खुले में शौच से मुक्त' होने की आवश्यकता महसूस कर सकें.

इस प्रक्रिया को शुरू करने के लिये रूरल सपोर्ट प्रोग्राम नेटवर्क द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण का आयोजन किया गया. यह प्रशिक्षण स्थानीय सामुदायिक सक्रियतावादियों को प्रदान किया गया. इस प्रशिक्षण को प्राप्त करने वाले सभी सक्रियतावादियों को एक अनुबन्ध दिया जायेगा जिससे वे गैर-सरकारी संगठनों, सरकार और मानवतावादी संगठनों से प्रति गांव के हिसाब से भुगतान प्राप्त कर सकें जिनमें उनके द्वारा ट्रिगरिंग की गई और वे खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गये.

इस तरीके के प्रसार को सुगम बनाने के लिये रूरल सपोर्ट प्रोग्राम नेटवर्क ने प्रथम स्तरीय उन सक्रियतावादियों के लिये एक सभा के आयोजन की व्यवस्था की है जिन्होंने सफलतापूर्वक किसी गांव को इस प्रकार ट्रिगर किया कि वह पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त हो गया. इन सभाओं में उनको अधिक सफल रहे सक्रियतावादियों को अपने साथियों के साथ अनुभव बांटने के लिये आमंत्रित किया जाता है. इस व्यवस्था के लिये रूरल सपोर्ट प्रोग्राम नेटवर्क के द्वारा सभी सक्रियतावादियों की सूची का डाटाबेस तैयार किया गया है जिन्होंने गांवों में सफलतापूर्वक ट्रिगरिंग की और उन्हें खुले में शौचमुक्त होने का स्तर प्राप्त करने में सहायता की (गैर-सरकारी संगठनों, सरकारी तथा मानवतावादी संगठनों के लिये संभावित परामर्शदाताओं के रूप में).

स्रोत: नाज्या महर, रूरल सपोर्ट प्रोग्राम नेटवर्क और काके एलोरी, जल एवं सैनिटेशन प्रोग्राम, इस्लामाबाद

गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिये सुझाव:

1. सभी प्रशिक्षकों का मूल्यांकन सावधानी से कीजिये. सभी सुगमकर्ता अच्छे प्रशिक्षक नहीं हो सकते. प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागी अच्छे सुगमकर्ता नहीं हो सकते.
2. भागीदार अभिकरणों से अनुरोध कीजिये कि अपने संभावित प्रशिक्षकों को निश्चित गुणवत्ता वाले प्रशिक्षण में प्रशिक्षण पाने के लिये भेजें.
3. उपयुक्तता, योग्यता, व्यवहार, अभिवृत्ति और प्रशिक्षण के दौरान कार्य-निष्पादन के आधार पर अच्छे प्रशिक्षकों की पहचान करके उनका चयन कीजिये.
4. भागीदार हो जाने के बाद प्रशिक्षकों को लचीला होना चाहिये और उन्हें गांवों के चयन और गतिविधियों के अनुक्रम और समय का निर्धारण करने के लिये स्वतंत्र होना चाहिये. यदि आवश्यक हो तो इसमें क्षेत्र भ्रमण की गतिविधियों को आगे-पीछे करना भी सम्मिलित है. उदाहरण के लिये जहां प्रशिक्षक के नियंत्रण से बाहर के किसी कारण से पहली ट्रिगरिंग सफल नहीं हो पाती है या प्रतिभागी पूरी बातों को उस समय तक ठीक से नहीं समझ पाते हैं तो दूसरी ट्रिगरिंग में विलम्ब किया जा सकता है. प्रशिक्षण डिजाइन को बिना भागीदारी बाहर से आरोपित नहीं किया जाना चाहिये. विशिष्ट अतिथियों को प्रशिक्षण के बीच में भाषण देने के लिये आमंत्रित करने से बचना चाहिये.
5. प्रशिक्षण जब प्रगति पर हो तो अचानक और बिना किसी पूर्व निर्धारित क्रम के निरीक्षण और जांच की जानी चाहिये.
6. यह सुनिश्चित कीजिये कि प्रशिक्षण प्रदान करने वाले अभिकरण केवल प्रशिक्षण के प्रति ही उत्तरदायी न हो बल्कि ट्रिगरिंग से पहले, ट्रिगरिंग के दौरान, ट्रिगरिंग के बाद अनुवर्ती गतिविधियों में और स्पष्ट रूप से परिभाषित जिले या क्षेत्र के संदर्भ में सभी गतिविधियों के संदर्भ में व्यापक रूप से उत्तरदायी हो. (कुछ मामलों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को पूर्ण समझ लिया जाता है यदि 25-30 गांवों में ट्रिगरिंग समाप्त हो जाये और कोई अनुवर्ती कार्यवाही या भ्रमण न हो तो भी). इसमें प्रशिक्षण के लिये सही प्रतिभागियों का चयन सम्मिलित है जिससे ट्रिगरिंग और ट्रिगरिंग के बाद की गतिविधियां प्रभावी हो सकें. उदाहरण के लिये गांवों के मुखिया, स्थानीय औपचारिक और अनौपचारिक नेता, जिससे वे अवधारणा और कार्यविधि को ठीक से समझ लें और उसे बेकार न होने दें.
7. कार्य-निष्पादन का मूल्यांकन परिणामों के संदर्भ में परिणामों के आधार पर कीजिये न कि भौतिक उपलब्धियों के आधार पर. इसका अर्थ यह है ट्रिगरिंग के बाद के कार्य-निष्पादन और खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त करने के आधार पर मूल्यांकन करना न कि की गई ट्रिगरिंग या आयोजित किये गये प्रशिक्षणों की संख्या के आधार पर. समीक्षा नियमित होनी चाहिये और कम से कम हर 6 माह में होनी चाहिये.

यह उन अभिकरणों के संदर्भ में होनी चाहिये जिन्हें प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये नियुक्त किया गया है. अच्छे प्रशिक्षण, सुगमीकरण और अनुवर्ती कार्रवाई के संकेतकों में निम्नांकित सम्मिलित हैं:

- गांवों में शौचालय निर्माण की त्वरित प्रगति
- ट्रिगर किये गये गांवों की संख्या के सापेक्ष खुले में शौच से मुक्त गांवों की संख्या का उच्च अनुपात
- स्वाभाविक नेताओं का उभर कर सामने आना
- शौचालयों में सुधार, स्वच्छता सीढ़ी में ऊपर चढ़ना
- स्थानीय समुदाय का एकजुट होकर कूड़े-कचरे के प्रबन्धन, जल निकासी, गांव के पर्यावरण की स्वच्छता की ओर अग्रसर होना
- विपणन सम्बन्धी विकास

अभियान

बांग्लादेश, भारत, इण्डोनेशिया के कुछ जिलों तथा अन्य स्थानों पर भी सघन अभियान प्रभावी सिद्ध हुए हैं. भारत में कुछ अभियान तो जिलों के स्तर पर चलाये गये हैं जैसे महाराष्ट्र में जालना, हिमाचल में मण्डी और हरियाणा में पानीपत. सामान्यतया पूरे उप-जिले के लिये खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, उदाहरण के लिये यूनियन या उपजिला (बांग्लादेश), तालुका, विकास खण्ड, पंचायत समिति या ग्राम पंचायत (भारत), या केकामातान (इण्डोनेशिया). इस प्रकार के अभियानों को नीति के स्तर पर सशक्त तथा स्थानीय शासन के नेतृत्व और सहयोग की आवश्यकता होती है.

इन स्थानीय अभियानों के मुख्य अवयव निम्नांकित के संयोजन में निहित हैं:

- प्रतिबद्ध स्थानीय नेतृत्व, राजनीतिक भी और प्रशासनिक भी
- विभिन्न स्तरों पर समर्पित कार्यकर्ता
- संगठनों के अन्दर तथा सम्बन्धित सभी विभागों, एवं संगठनों में एक दल के रूप में काम करने की भावना (सरकार, गैर-सरकारी संगठन इत्यादि)
- स्टाफ, चाहे सरकारी हो या गैर-सरकारी संगठनों का, अभियान में पूर्ण कालिक कार्य करने के लिये समर्पित है
- धार्मिक नेताओं, राजनेताओं, गांव के अधिकारियों तथा अन्य के लिये अभिमुखीकरण और प्रशिक्षण
- बच्चे, परिवर्तन के लिये सक्रिय अभिकर्ता के रूप में
- बैठकों का उपयोग - नियमित और विशेष दोनों प्रकार की - अभियान पर जोर देने के लिये, प्रगति आकलन प्राप्त करने के लिये, अच्छा काम करने वाले व्यक्तियों और समुदायों का सार्वजनिक रूप से सम्मान करने के लिये, समुदायों, स्थानीय नेताओं और स्टाफ के बीच प्रतियोगिता पैदा करने के लिये
- नियमित रिपोर्ट करने की प्रणाली
- खुले में शौच से मुक्त होने का दावा करने वाले हर समुदाय का जल्दी से सत्यापन

- खुले में शौच से मुक्त होने पर उत्सव का आयोजन (आगे देखिये)
- संचार माध्यमों का उपयोग - रेडियो, वीडियो, रैलियां, समाचार पत्र, टेलिविजन

अभियानों के दौरान रिपोर्ट में बढ़ा-चढ़ा कर बातें लिखी जा सकती हैं और झूठे दावे हो सकते हैं, विशेषकर तब जब लक्ष्य निर्धारित हों और लक्ष्य प्राप्त करने पर पुरस्कार की व्यवस्था हो. इससे बचाव करने या इसे न्यूनतम करने के लिये शायद सबसे अच्छा उपाय है समुदायों के साथ सत्यापन और प्रमाणीकरण करना. दूसरे मान्यताप्राप्त और स्वीकृत निर्मल ग्रामों के स्वाभाविक नेताओं को यह भूमिका देनी चाहिये. फिसल हुए समुदायों की संख्या सत्यापन की गुणवत्ता का सबसे अच्छा संकेतक है. यदि कोई भी गांव फिसल नहीं हुआ तो सत्यापन में जरूर कुछ गड़बड़ी समझी जानी चाहिये.

अभियान - कई संगठनों और कर्ताओं के साथ

बांग्लादेश में हालीशहर उपजिला पहला उपजिला था जिसे खुले में शौच से मुक्त घोषित किया जाना था. प्रशासनिक भूमिका के नेतृत्व में तथा सभी राजनीतिक दलों के समर्थन से गहन अभियान चलाया जा चुका था. अन्य मुख्य कारक थे स्थानीय शासन के साथ मिल कर काम कर रहे गैर-सरकारी संगठन के स्टाफ की प्रतिबद्धता - प्लान बांग्लादेश और विशारी, समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को समर्पित गैर-सरकारी संगठन; इमामों का प्रशिक्षण और उनके द्वारा मस्जिदों से दी गई नसीहत; हर स्तर के कार्य दल; विभिन्न संगठनों के स्टाफ के द्वारा गांवों का निर्धारित तिथियों पर एक साथ मिल कर भ्रमण; नियमित बैठकों के माध्यम से रिपोर्ट प्राप्त करना (जिससे पीछे रह गये समुदायों को सूचना यह सकता था "अच्छा तो आप अभी भी गू खा रहे हैं"); बच्चों के मंच और सक्रिय भागीदारी; खुले में शौच से मुक्त होने के स्तर के सत्यापन के लिये कई निरीक्षण दल ("जो लोग आमंत्रित नहीं हैं वे भी आ सकते हैं"); और जिलाधीश के द्वारा प्रमाणीकरण. जनवरी 2006 में उपजिले के खुले में शौच से मुक्त हो जाने के स्तर को प्राप्त कर लेने के उपलक्ष्य में आयोजित उत्सव में भाग लेने के लिये लगभग 10000 लोग आये. लोग उस उत्सव को आज भी याद करते हैं और सोचते हैं कि वह कितना अच्छा समय था. अभियान का ध्यान अब शौचालयों में सुधार की ओर चला गया है और समुदाय निश्चित रूप से स्वच्छता की सीढ़ी पर ऊपर की ओर बढ़ रहा है. अब ध्यान स्कूलों की स्वच्छता तथा परिवारों को स्वास्थ्यकर स्वच्छता की शिक्षा देने पर है.

भारत के पश्चिम बंगाल प्रान्त की कल्याणी नगरपालिका के आनन्द विद्यासागर कॉलोनी के खुले में शौच से मुक्त समुदाय द्वारा गर्व के साथ अपने क्षेत्र के स्वच्छता स्तर की घोषणा की गई. इससे शहर की कई मलिन बस्तियों पर प्रभाव पड़ा कि वे भी खुले में शौच से मुक्त होने के लिये प्रयास करें.

गर्व और प्रतियोगिता को प्रोत्साहन

समुदायों, वार्डों, अन्य प्रशासनिक इकाइयों, उपजिलों एवं जिलों के बीच गर्व और प्रतियोगिता को प्रोत्साहित किया जा सकता है.

यह दूसरी ट्रिगरिंग की तरह हो सकता है. इसे करने के कुछ तरीके यह हैं:

- खुले सफल समुदायों के गांवों के भ्रमण को प्रोत्साहित कीजिये. उन्हें बाहरी व्यक्तियों के लिये प्रशिक्षण और सीखने की प्रयोगशालाओं के रूप में प्रयोग में लाइये. आसपास के गांवों के लोगों के द्वारा भी बाहरी लोगों को आते हुए देखा जायेगा और फिर वे भी अपनी आंखों से देखने के लिये आयेंगे.
- सशक्त और प्रतिबद्ध स्वाभाविक नेताओं की पहचान कीजिये जो कि अन्य समुदायों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को ट्रिगर कर सकें और सहयोग कर सकें. ऐसे सरकारी अथवा गैर-सरकारी संगठनों का पता लगाइये जो कि उन्हें यात्रा व्यय, नाश्ता, मिलेज आदि से सम्बन्धित व्यवस्थात्मक सहायता कर सकें. यह सब करते समय समुदायों में सहज ही पैदा हुई अग्रगामी ऊर्जा और बढ़ रहे जोश को कम करने की गलती मत कीजिये.
- समुदायों और प्रशासनिक इकाइयों में प्रगति अथवा प्राप्त करने के लिये बैठकों का उपयोग कीजिये, प्रतियोगिता को प्रोत्साहित कीजिये और प्रतिभागियों से उनकी योजनाओं और निर्धारित लक्ष्यों के विषय में जानकारी लीजिये.
- इन बैठकों में सबसे सफल काम करने वालों से पूछिये कि क्या वे उन लोगों से सहयोग लेना चाहेंगे जो बेहतर काम कर रहे हैं. गर्व की भावना के कारण बहुधा यह लोग मना करेंगे परन्तु यह उन्हें बेहतर करने के लिये उकसायेगा अथवा, अनुभवों और विधियों के विषय में विचारों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहित कीजिये.

विजेताओं (चैम्पियनों) से फर्क पड़ता है

दक्षिण सुमात्रा के मुआरा एनिम के उपजिले सेमेन्डो के स्वास्थ्य केन्द्र की प्रमुख डॉ. सुरीना अगस्टीन ने स्थानीय प्रयास का नेतृत्व किया जिससे पूरा उपजिला खुले में शौच से मुक्त हो गया. डॉ. अगस्टीन, जो कि स्वयं एक दन्त चिकित्सक हैं, ने समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के एक कोर ग्रुप का गठन किया और इसका सहित अपने पूरे स्टाफ को प्रशिक्षित किया. इस दल ने ग्राम समुदाय द्वारा गठित समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता दलों को प्रशिक्षित किया तथा 'सफलता समारोह' के लिये सहयोग प्रदान किया. डॉ. अगस्टीन ने ट्रिगरिंग और ट्रिगरिंग के बाद की सभी गतिविधियों में गांवों की सभी पार्टियों को सम्मिलित कर लिया. उनके इन प्रयासों के फलस्वरूप ही उपजिले के 18 में से 16 गांव खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त हो गये और शेष दो गांव भी इस स्तर को प्राप्त करने के बहुत करीब आ चुके थे. डॉ. अगस्टीन को उनके इन प्रयासों के लिये इण्डोनेशिया के राष्ट्रपति के द्वारा सम्मानित किया गया और सबसे अच्छे पुस्केसमास (उपजिले के स्वास्थ्य केन्द्र) के मुखिया के रूप में उनका अभिवादन किया गया.

- संचार माध्यमों को सूचित कीजिये - स्थानीय रेडियो, समाचार पत्र, टेलिविजन - और उन्हें अनुभवों से सम्बन्धित कथाएं उपलब्ध कराइये. उन सभी बड़ी बैठकों में उन्हें आमंत्रित कीजिये जिनमें समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर प्रमुख रूप से परिचर्चा होती है.
- प्रतिष्ठित एवं प्रभिवकार प्राप्त व्यक्तियों, राजनेताओं, गैर-सरकारी संगठनों के स्टाफ, निजी क्षेत्र के लोग, व्यावसायिक एसोसिएशनों के सदस्य, और अन्य क्षेत्रों के चैम्पियनों की पहचान कीजिये और उनके साथ मिल कर काम करने के लिये प्रयत्नशील रहिये.
- खुले में शौच से मुक्त घोषित करते समय उत्सव का आयोजन कीजिये जिसमें स्वाभाविक नेताओं, समुदाय के प्रधानों, सामुदायिक अभियन्ताओं और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के संरक्षकों का सम्मान कीजिये.

एक बकरी के लिये प्रतियोगिता

पूर्वी जावा के बोजोनेगोरो जिले के गांव सुम्बेरकाटिंग के मुखिया ने एक पुरस्कार की घोषणा की और गांव के पुरुषों के बीच खुले में शौच बन्द करने के लिये एक बकरी की प्रतियोगिता शुरू कर दी. उन्होंने सबसे पहले खुले में शौच से मुक्त होने वाले पुरुष को एक बकरी इनाम में देने की घोषणा कर दी. यह पुरस्कार सम्मान का प्रतीक था. बकरी इनाम में देने की घोषणा ने प्रतियोगिता को बहुत रोचक बना दिया.

स्रोत: चार्ल्स इमानोलो, डब्लू एस पी, ई ए पी, इण्डोनेशिया

ग्राम बांग्लादेश में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग के बाद की अनुवर्ती बैठक में स्वच्छता की निर्माण सामग्री के स्थानीय विक्रेताओं को आमंत्रित किया. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग के बाद जब शौचालयों की निर्माण सामग्री की मांग बढ़ती है तो समुदायों के छोटे स्तर उत्पादकों से बीच सम्बन्ध स्थापित करना महत्त्वपूर्ण हो जाता है.

शौचालय निर्माण की सामग्री की आपूर्ति और उपलब्धता को बढ़ावा दीजिये (अध्याय 4 भी देखिये)

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से बहुत तेजी से शौचालय निर्माण सामग्री की मांग पैदा हो जाती है. बहुत से लोग एक गड्ढे वाले सरल शौचालय बना लेते हैं और प्लास्टिक, टिन तथा अन्य सामग्री का उपयोग ऊपरी संरचना बनाने के लिये कर लेते हैं. अन्य लोग उच्चतर स्तर के और अधिक टिकाऊ शौचालय की इच्छा कर सकते हैं. साथ ही जो लोग पहले सरल शौचालय बनाते हैं वे भी सुधरे शौचालय को निर्मित करना चाह सकते हैं और स्वच्छता की सीढ़ी पर ऊपर चढ़ने के लिये उत्सुक रहते हैं. जब ऐसा होता है, विशेषकर जब समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का तेजी से विस्तार होने लगता है, तब सामग्री की आपूर्ति बहुधा मांग से बहुत पीछे रह जाती है.

आपूर्ति को बढ़ावा देने और उपलब्धता बढ़ाने के लिये कई काम किये जा सकते हैं. इनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

- उद्यमियों को प्रोत्साहित कीजिये कि वे थोक में आपूर्ति के स्रोतों का पता लगायें जिससे सामग्री को थोक में प्राप्त किया जा सके और स्थानीय स्तर पर बेचा जा सके. उद्यमियों को प्रोत्साहित कीजिये वे थोक में सामग्री प्राप्त कर स्थानीय स्तर पर उपलब्ध करायें.
- समुदाय की बैठकों में व्यापारियों को आमंत्रित कीजिये.
- उन समूहों के साथ सहयोग कीजिये जो थोक में सामग्री का क्रय करके समुदाय को सस्ते दामों पर बेचते हैं (उदाहरण के लिये प्लास्टिक स्लैब डीलिंग प्वाइंट - जौजिया देखें).

रूरल सैनिटरी मार्ट, हरियाणा के पानीपत जिले की अभिनव पहल

यह जिला अपेक्षाकृत रूप से अधिक समृद्ध है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का विस्तार इस जिले में बहुत तेज़ी से हुआ जिसके कारण स्वच्छता सम्बन्धी निर्माण सामग्री और राजमिस्त्रियों की मांग बहुत बढ़ गई. 10-20 महिलाओं से मिलकर बने 5 स्वयं सहायता समूहों को स्वचालित बीज मशीन तथा जिसमें रोटल मुक्त उपलब्ध करा दी गई (रूरल सैनिटरी मार्ट नाम से) जिससे पैन तथा अन्य सामग्री निर्माताओं से थोक में क्रय करके लाई जा सके. गांव की जल एवं स्वच्छता समिति द्वारा गांव के लिये पूरी सामग्री यहां से क्रय कर ली जाती है और गांव पहुंचा दी जाती है. इस व्यवस्था के कारण सामग्री के मूल्य में काफी कमी आ गई है और मार्ट को भी कुछ साधारण सा मुनाफा भी हो जाता है. मार्ट के द्वारा राजमिस्त्रियों के साथ मिल कर शौचालयों का निर्माण भी कराया जा रहा है जिनमें से कई तो काफी कम लागत के शौचालय हैं.

स्रोत: डॉ. अमित अग्रवाल, अतिरिक्त उपायुक्त, पानीपत

- स्थानीय उद्यमियों, सामुदायिक संगठनों, युवा समूहों, स्वाभाविक नेताओं तथा अन्य को लिए, शौचालय जैसी स्वच्छता सामग्री का निर्माण करने के लिये प्रोत्साहित कीजिये (यदि उपयुक्त हो तो).
- राजमिस्त्रियों और गांव के अभियन्ताओं को प्रशिक्षित कीजिये और टेलर सैनिटेशन एण्ड मार्केटिंग प्रोजेक्ट के आपूर्तिकर्ताओं से उनका सम्पर्क सम्बन्ध स्थापित करा दीजिये.(बॉक्स देखें)

अनुभव से सीखिये

यही बात है सतत सीखने, अभिनव पहल करने और परिवर्तन करने की. सुगमकर्ता के रूप में किये गये कार्यों और समुदायों की प्रतिक्रियाओं के अनुभवों की समीक्षा कीजिये और उन पर पुनर्विचार कीजिये. यह विचार मन्थन स्वाभाविक नेताओं, समुदायों के सदस्यों तथा अन्य के साथ मिल कर कीजिये.

नई पहल वाले अन्य संगठनों, क्षेत्रों और देशों से सीखिये. भविष्य की कार्यविधि को बेहतर बनाने के लिये विभिन्न अनुभवों से निष्कर्ष निकालिये. जहां भी संभव हो सीखी गई बातों को समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अन्य समुदायों और क्षेत्रों में प्रसार और विस्तार के लिये उपयोग में लाइये. सफल समुदायों के अनुभवों को सीखने का आधार बनाइये. उन स्थानों के अनुभवों से भी सीखिये जहां समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत ही नहीं हो सकी. यदि आपके लिये सम्भव हो तो अपने अनुभवों को व्यापक रूप से प्रकाशित करके अपने कार्य के प्रभाव का दायरा बढ़ाइये.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के बाद

यह सिद्ध हो गया है कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रियाएं, समुदाय आधारित अन्य पहल के लिये एक मजबूत आधार प्रदान करती हैं. खुले में शौच से मुक्ति पाना स्वच्छता सीढ़ी में ऊपर की ओर प्रगति के लिये एक उत्कृष्ट आधार है जिसके कारण स्वास्थ्यकर व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है और एक स्वस्थ पर्यावरण सृजित हो जाता है और आजीविका के लिये आधार मिल जाता है.

स्वच्छता सीढ़ी को चार्ट में दर्शाया गया है. खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त करने के बाद आने वाली गतिविधियों में सम्मिलित हैं हाथ धोने की व्यवस्था, बाढ़ से अप्रभावित रहने वाले उठे हुए शौचालय, सेप्टिक टैंक मॉडल, कम्पोस्टिंग शौचालय, स्नानघर, जल भण्डारण और इसी प्रकार के कई सुधारों को प्रोत्साहित करना.

जब गांव के द्वारा खुले में शौच से मुक्त स्तर पा लेने के बाद समुदाय तथा परिवारों के स्वास्थ्यकर व्यवहार में परिवर्तन हो जाता है तब धीरे-धीरे शौचालयों की गुणवत्ता में सुधार की ओर रुझान दिखाई देने लगता है. ट्रिगरिंग के बाद प्रारम्भ में बनाये गये कम लागत के एक गड्ढे वाले शौचालयों की गुणवत्ता सुधारने के लिये निवेश करने का अतिरिक्त परिवारों को मिल जाता है. परिणामस्वरूप स्वच्छता की निर्माण सामग्री की मांग में वृद्धि उसके बाद स्थानीय समुदाय के स्तर पर अनुभव की जाती है. ऊपर चित्र में चीन देंग के पास कम्बोडिया के एक गांव के एक स्वच्छता परिवार को दिखाया गया है जो कि कभी पास इलीपिंग के लिये सीमेंट के रिंग बनाते थे. उन्हें केवल अपने व्यवसाय में विविधता लाने की आवश्यकता थी जिससे वे शौचालयों के लिये पाइप, पैन और रिंग प्रदान कर सकें और खुले में शौच से मुक्त होने के कारण स्वच्छता की निर्माण सामग्री की बढ़ी हुई मांग को पूरा कर सकें. परिवार की आय चार गुना बढ़ गई और इससे उनकी खुशी का ठिकाना न रहा.

इण्डोनेशिया, भारत और तन्जानिया में सम्पूर्ण स्वच्छता और स्वच्छता विपणन परियोजना

इस परियोजना को गेट्स फाउन्डेशन से सहायता प्राप्त हुई है. यह इण्डोनेशिया, भारत और तन्जानिया में चल रहा है. इस परियोजना के तीन जुड़े हुए अवयवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता भी एक अवयव है. अन्य दो अवयव हैं स्वच्छता सामग्री विपणन और उपयुक्त वातावरण सृजन. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता और स्वच्छता सामग्री के विपणन को परस्पर एक दूसरे को मज़बूत करने वाला माना जाता है और विस्तृत रूप से मेल से स्वच्छता सम्बन्धी और स्वास्थ्यकर व्यवहार को बनाये रखने तथा सम्वर्धित करने के लिये आवश्यक समझा जाता है. स्वच्छता सामग्री विपणन खुले में शौच से मुक्त हो गये गांवों में सृजित मांग को और आगे ले जाता है तथा स्थानीय उद्यमियों के विकास को बढ़ावा देता है तथा बाहरी उद्यमियों के साथ सम्पर्क सम्बन्ध को मज़बूत करता है. इससे बाज़ार शोध और उत्पाद तथा बाज़ारों के विकास को बल मिलता है. उपयुक्त वातावरण सृजन का सम्बन्ध स्वच्छता से जुड़ी संस्थाओं से है जिसका मतलब है स्थानीय निकायों के ढांचे में सुधार और राष्ट्रीय नीतियों तथा रणनीतियों में वांछित परिवर्तन जिससे स्थानीय स्वच्छता बाज़ारों में मांग और आपूर्ति की शक्तियों का बिना रुकावट के विकास हो सके और बाज़ार पर प्रभाव डालने के प्रयास के दौरान प्राप्त अनुभवों से उपयुक्त सीख ली जा सके.

स्रोत: डॉ. नीलांजना मुखर्जी, कन्सल्टेन्ट, डब्लू एस पी - ईएपी, जकार्ता, इण्डोनेशिया

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता एकजुटता से फसल संरक्षण तटबन्ध का निर्माण: एक समुदाय संचालित पहल

बांग्लादेश के किशोरगंज यूनियन में, जहां हर वर्ष बहुत बड़े क्षेत्र की धान की फसल बाढ़ के कारण नष्ट हो जाती है, कई समुदायों के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन किया गया. जो समुदाय पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त हो गये थे उनमें बहुत सुदृढ़ सामाजिक एकजुटता विकसित हो गई थी तथा आपस में सम्पर्क सूत्र भी स्थापित हो गये थे. कम-से-कम 17 गांवों के स्वाभाविक नेताओं को 'केयर' नामक संस्था के द्वारा फसल संरक्षण के विषय में प्रशिक्षित किया गया. स्वाभाविक नेताओं के दबाव में पूर्व के तथा वर्तमान के यूनियन परिषद अध्यक्षों के द्वारा समुदाय के द्वारा एकजुट होकर की जाने वाली पहल के लिये सहयोग करने का आश्वासन दिया गया. 10 गांवों के ग्रामवासी एकजुट हो गये और उन्होंने अपने-अपने इलाकों के लिये तटबन्ध संरक्षण समितियां गठित कर लीं जिससे उनके गांवों से होकर गुजरते हुए 5 कि.मी. लम्बे तटबन्ध की मरम्मत की जा सके. समुदायों ने धन इकट्ठा किया. जिनके पास बड़ी ज़मीनें थीं उन्होंने दान के रूप में धनराशि दी. दो सप्ताहों में ही 2270 डॉलर इकट्ठा हो गये. समुदायों के द्वारा उपकरणों की व्यवस्था की गई. काटने और भोजन के रूप में प्रयोग किये जाने के लिये जलावन उपलब्ध कराये गये. गरीबों और भूमिहीनों के द्वारा श्रम के माध्यम से योगदान किया गया. एक उत्सव का सा माहौल था. अन्तिम रूप से समतल करने का काम केयर संस्था के काम के बदले अनाज कार्यक्रम के अन्तर्गत किया गया. यूनियन परिषद के सदस्य हबीबुर रहमान के अनुसार समुदाय के द्वारा एकजुट होकर की गई इस पहल ने सबको एक दूसरे के बहुत नजदीक ला दिया और समुदायों के बीच एक ऐसा मजबूत भाईचारा और सौहार्द सृजित कर दिया जो पहले कभी नहीं था.

कृषि स्वयंसेवी आताउर ने कहा, "हमें याद नहीं है कि हमने पहले कभी भी धान की इतनी अधिक फसल प्राप्त की होगी जितनी तटबन्ध की मरम्मत के बाद पिछले वर्ष हमें मिली. इसने यूनियन परिषद नेतृत्व के दो समूहों के बीच चलने वाली प्रतिद्वंद्विता को समाप्त कर दिया, भाइयों को मजबूत कर दिया और सम्पन्न लोगों के द्वारा किये जाने वाले शोषण का न्यूनीकरण कर दिया." कुछ ग्रामवासियों ने टिप्पणी की कि गांव के बहुत गरीब श्रमिक लोगों को काम की तलाश में शहर नहीं जाना पड़ेगा. केवल एक वर्ष की अच्छी फसल के कारण परिवारों के स्तर पर खाद्य सुरक्षा की स्थिति में बहुत सुधार हुआ है.

स्रोत: मोहम्मद कमरुज्जमां, प्रोजेक्ट ऑफिसर, एसुवेशन प्रोग्राम, केयर, बांग्लादेश, ढाका

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता से खाद्य सुरक्षा की ओर

इथियोपिया के आरबामिन्च के पास स्थित उल्लेताम्बा बोकोल गांव में अक्टूबर 2006 में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रेनिंग की गई. इसके बाद समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार काफी धीमे के आयोजनों के माध्यम से होने लगा जहां जिन परिवारों ने अपने इलाके को स्वच्छ बना लिया था वह दूसरों को सिखाते और बताते कि उन्होंने यह कैसे किया. पहले चार घरों के सदस्यों ने अपने आप शौचालयों के लिये गड्ढे खोदे परन्तु शेष 26 परिवारों के लिये उन्होंने समुदाय द्वारा एकजुट होकर काम करने की देबो नामक पारम्परिक विधि को पुनर्जीवित कर लिया जिसे वे काफी लम्बे समय से भूल गये थे. ट्रेनिंग के कुछ माह बाद ही गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गया. उनका एन्सेट बागान "अर्री" (स्थानीय भाषा में अर्री का मतलब मानव मल) से मुक्त हो गया. इस उपलब्धि को पाने पर लोगों को यह समझ में आया कि समूह बना कर काम करने से वे ज्यादा अच्छे परिणाम प्राप्त कर सकते हैं.

सहभागी ग्रामीण/कार्यशाला विश्लेषण के दौरान महिलाओं को समझ में आ गया कि देबो प्रणाली का प्रयोग करके वे गांव में ऋतु विशेष में होने वाली भूख की समस्या को समाप्त कर सकते हैं. उन्होंने अपने एन्सेट बागान के पौधों के लिये खाद इकट्ठा करनी शुरू कर दी. एन्सेट को भोजन के लिये तैयार करना एक समय-साध्य काम है परन्तु देबो का प्रयोग करके वे यह सुनिश्चित कर सकते थे कि खाद्य सामग्री की कमी के समय कोई भी परिवार भूखा न रहने पाये.

उन्होंने पास के एक गांव, आयल शाइले, में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रेनिंग करने का प्रस्ताव भी किया जहां 70 परिवार रहते थे.

उल्लेताम्बा बोकोल के समुदाय के द्वारा यह रिपोर्ट सोलोमन कोबेडे और वोल्फा मैकडोनेल किरड़ोस को इथियोपिया में जुलाई 2007 में आयोजित सहभागी समीक्षा बैठक (आरटीआई) के दौरान दी गई.

नगर में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत होने के बाद फाइबर ग्लास पैन, वाटरसील, ... वाले शौचालय के पैन पूरे, भारत के किसी क्षेत्र के ग्रामीणों के द्वारा विकसित और निर्मित किये गये. इस प्रकार के कम लागत पैन (रु. 150-200) के नमूने इथियोपिया और अफ्रीका के अन्य देशों को भेजे जा रहे हैं.

मेक्सा गोरेदा, इथियोपिया के एक समुदाय के द्वारा एक सरल हाथ धोने के अभिनव यंत्र का विकास किया गया. केवल महिलाओं के लिये इसका प्रयोग होते को सरल किया गया जिससे शौच के बाद साबुन से हाथ धोये जा सकें.

स्थानीय अभियान का बीजारोपण और सहयोग

बहुत अधिक अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं यदि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अपने आप फैलने वाले अभियान का स्वरूप धारण कर ले या जिसके लिये बाहर से बहुत कम सहयोग की आवश्यकता हो. जिस आदर्श को लक्षित करना चाहिये वह तो यह होगा कि यह समुदाय संचालित प्रसार और विस्तार प्रक्रिया बन जाये. इसके लिये देखिये कि क्या आप स्वाभाविक नेताओं को प्रोत्साहित कर सकते हैं तथा उन्हें सक्षम बना सकते हैं जिससे वे सुगमकर्ता के रूप में आगे आयें और अन्य समुदायों में ट्रेनिंग कर सकें तथा लगातार प्रोत्साहन और सहयोग प्रदान कर सकें.

यहां अवसर है समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के स्थानीय स्तर पर कम लागत के साथ विस्तार और प्रसार का. जहां दानी अभिकरण, सरकारी विभाग, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन अपने स्वच्छता कार्यक्रमों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को एकीकृत कर लेते हैं और स्थानीय सशक्तिकरण के मूल सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं करते हैं, या इसका प्रयोग व्यापक आजीविका योजनाओं या स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिये एक शुरुआत के रूप में करते हैं उन्हें यह याद रखना चाहिये कि सामुदायिक सहभागिता और सुगमकर्ता सबसे अधिक महत्वपूर्ण संसाधन सिद्ध होंगे.

स्थानीय लोग ही सबसे अच्छे सुगमकर्ता सिद्ध होते हैं जिनके द्वारा प्रत्यक्ष रूप से अपने ही समुदाय में खुद काम करने के अनुभव से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को सीखा गया है और जिन्होंने "सिखा" देने की आदत विकसित नहीं की है. बार-बार ऐसे अनुभव सामने आये हैं कि प्रेरित और जोश से भरे स्वाभाविक नेताओं के द्वारा पास के गांवों में जाकर सफलतापूर्वक ट्रेनिंग की गई है. परन्तु यह अनुभव यहीं तक सीमित रह गये.

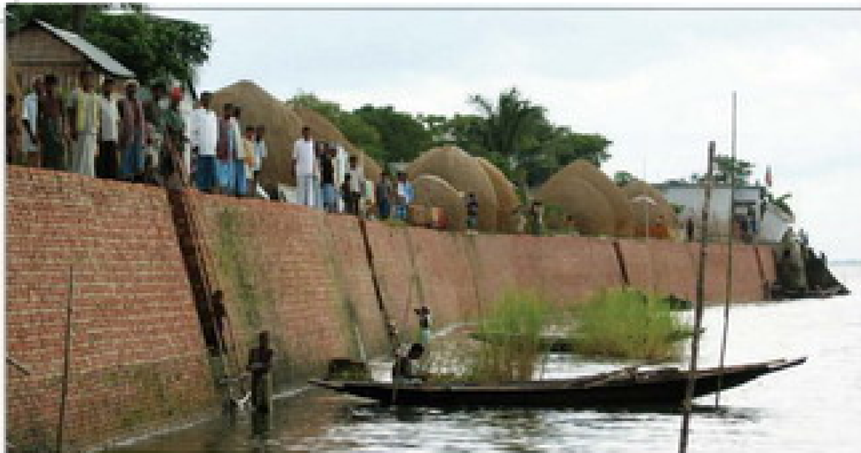

खुले में शौच समाप्त करने से खाद्य सुरक्षा तक

बांग्लादेश के नवाबगंज जिले के गरीबतम गांवों में से एक जलगाती, ऋतु विशेष में प्रतिवर्ष आने वाले खाद्य संकट - मोंगा - के प्रकोप से पीड़ित था जिसके लिये यह क्षेत्र कुख्यात है. मोंगा के दौरान गरीबतम परिवार भूख से मरने लगते थे, इसलिये वे अन्यत्र पलायन कर जाते थे या सरकारी खाद्य वितरण की बाट जोहने की कोशिश में जुटे रहते थे. मोंगा से कुछ समय पहले अक्टूबर 2004 में, गांव में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत की गई. खुले में शौच से मुक्त होने के उत्साह और आत्मबल के बढ़ने के साथ समुदाय की एकजुटता में भी वृद्धि हो गई. समुदाय के सदस्य एकजुट होकर अपनी समस्याओं का समाधान अपने स्तर से ही कर लेने के प्रति प्रतिबद्ध हो गये. बेहतर स्थिति वाले अब पहले की अपेक्षा अधिक उदार हो गये और गरीबों तथा भूमिहीनों के प्रति उनकी चिंता बढ़ गई तथा वे उन्हें अधिक सहायता और सहयोग देने लगे. 'मान-आलू', एक पारम्परिक फसल जिसे लोग लगभग भूल ही चुके थे, की पहचान की गई और पाया गया कि इससे खाद्य समस्या का हल हो सकता है. सभी परिवारों ने इसे अपने घरों के आसपास और घरों की क्यारियों में उगाने का निर्णय किया. एक सप्ताह के अन्दर ही लगभग सभी परिवारों के द्वारा 4000 से अधिक गड्ढे खोद डाले गये और जन अभियान की तरह मान-आलू के बीज बो दिये गये. भूमिहीन परिवारों ने अपने घरों में 4-5 पौधे लगाये और 8 माह के बाद हर पौधे से उन्हें 3-4 किलो आलू मिला. जिनके पास अपने खेत थे उन्होंने अपने लोबिया और अन्य पौधों की कतारों के बीच की जगहों में गरीबों को मान-आलू बोने दिया. अगली मोंगा ऋतु बिल्कुल भिन्न हो गई और बड़ी मात्रा में मान-आलू की उपज हुई. खूब खाया गया और बाजार में बेचा भी गया. आज 2007 में जलगाती केवल 25 टन से अधिक मान आलू ही उत्पादित नहीं करता बल्कि 10 मीट्रिक टन बीज की आपूर्ति भी अन्य गांवों को करता है और मोंगा का संकट मोटे तौर पर समाप्त हो गया.

प्रथम खुले में शौच से मुक्त होने का श्रेय प्राप्त कर लेने के तुरन्त बाद बांग्लादेश नवाबगंज यूनियन, कालिगंज उपजिले के शितलपुर और कोलारी के समुदायों को समझ में आ गया कि इलाके में बरसात के दौरान बाढ़ से होने वाले नुकसान से बचाव कितना अधिक आवश्यक है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के दौरान तथा इसके बाद मिली सफलता से विकसित हुई एकजुटता की शक्ति को जानते हुए इलाके के सभी लोगों ने मिल कर अपनी खेती पर बाढ़ के प्रभाव को कम करने के लिये स्थानीय ज्ञान का प्रयोग करते हुए ईंटों की दीवार का निर्माण कर लिया. यह विशिष्ट दीवार आत्मनिर्भरता है और अधिक दीवारें भी आवश्यकता के अनुसार बनाई जा सकती हैं. इस दीवार को बनाने में सीमेंट का प्रयोग बिल्कुल नहीं किया गया. आश्चर्यजनक बात यह है कि इस प्रकार की एक किलोमीटर लम्बी दीवार की लागत केवल बांग्लादेश द्वारा बनाई जा रही दीवार की लागत से काफी कम हो सकती है.

ऊपर कालीगंज यूनियन, कालिगंज जिला, बांग्लादेश में सभी खुले में शौच से मुक्त हो गये समुदाय एक साथ जुड़ गये और उन्होंने फसल को सुरक्षित करने के लिये तटबंध का निर्माण किया जिससे उनकी धान की सम्पूर्ण फसल को इलाके में आने वाली बाढ़ की विभीषिका से बचाया जा सके. छायांकन: कमालकार, केन्द्र बांग्लादेश

बाएं और ऊपर बांग्लादेश के नवाबगंज जिले के जलगाती गांव के स्थानीय लोग 'मान आलू' की फसल काट कर दिखाते हुए जिसे उन्होंने बड़ी मात्रा में बोया था जिससे वे हर वर्ष आने वाली 'मोंगा' ऋतु विशेष की भुखमरी और खाद्य असुरक्षा का मुकाबला कर सकें. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की पहल में हुई सफलता के कारण ही यह पहल हो सकी. विभिन्न प्रकार के मान आलू जो कि इस क्षेत्र में बहुत अच्छी फसल देते हैं के कारण ही यहां बहुत बड़ा अन्तर आया जहां समुदाय ने सारे गांव से भुखमरी को पूरी तरह समाप्त कर दिया है.

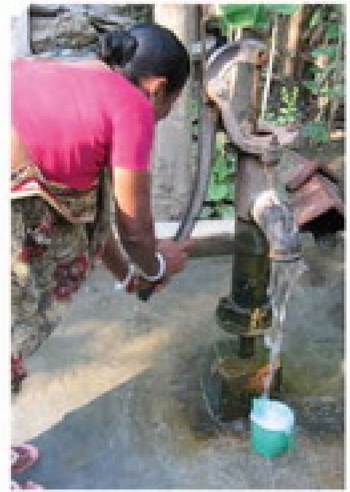

ऊपर और दायें भारत के पश्चिम बंगाल प्रांत में कल्याणी की विख्यात कॉलोनी नगरपालिका के समुदाय की महिलाओं ने निर्णय लिया कि अपनी कॉलोनी के सभी 22 सिंग पानी के चबूतरों को पक्का करा देंगे और चौकोर से परिवर्तित स्थिति का हैंड पम्प जिससे गन्दा पानी, खुले-नाली, और गन्दगी का सफाया होने से पानी के स्रोत के चारों ओर न होने पाये. नगरपालिका के द्वारा उन्हें कुछ ईंट-पत्थर उपलब्ध करा दिये गये और बाकी सभी व्यवस्थाएं उन्होंने स्वयं कीं. यह सब खुले में शौच से मुक्त स्तर पाने के दो माह के भीतर हुआ. यह उनकी पहली कॉलोनी बस्ती थी जिसे खुले में शौच से मुक्त होने का गौरव प्राप्त हुआ. एक वर्ष के अन्दर ही नगरपालिका क्षेत्र की सभी 12 कॉलोनियां खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गईं.

समुदाय संचालित नाटक के माध्यम से प्रसार

केयर की सिडेश परियोजना के अन्तर्गत उत्तर पश्चिम बांग्लादेश में खुले में शौच से मुक्त गाँवों की सहायता की जाती है कि वो नाटक के माध्यम से पड़ौस में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रचार और प्रसार करें. स्थानीय सुगमकर्ता पहले एक गाँव में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को ट्रिगर करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं. जब कुछ समुदायों में यह खुले में शौच से मुक्त स्तर प्राप्त कर लेता है तब एक सभा का आयोजन किया जाता है जिसमें अन्य गाँवों के लोगों को बुलाया जाता है. समय तय कर रखा जाता है. सिडेश के द्वारा व्यवस्था सम्बन्धी सहयोग प्रदान किया जाता है जैसे जैनरेटर और ध्वनि प्रसारण प्रणाली, लेकिन पूरे कार्यक्रम का आयोजन और संचालन गाँवों तथा उनके स्वाभाविक नेताओं के द्वारा ही किया जाता है (इनमें से अधिकतर गरीब वर्ग के होते हैं). यही लोग मंच पर खड़े होते हैं और दर्शकों को बताते हैं कि उन्होंने किस प्रकार खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त किया. केयर के सुगमकर्ताओं के द्वारा प्रक्रिया के संदर्भ में किसी प्रकार के निर्देश नहीं दिये जाते हैं. उनके द्वारा समुदाय के सदस्यों को कार्यक्रम को अपने ढंग से तैयार करने और संचालित करने के लिये प्रेरित मात्र किया जाता है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता द्वारा सृजित एकजुटता को इस प्रकार के कार्यक्रम और सुदृढ़ कर देते हैं तथा स्वाभाविक नेता एवं अन्य लोग अपनी उपलब्धि पर गर्व करते हैं और उसकी खुशी मनाते हैं.

ग्रामीण बांग्लादेश के लगभग सभी समुदायों में कोई न कोई स्वाभाविक कवि होता है जो कि समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर गीतों की रचना कर सकता है और कोई न कोई गायक भी होता है जो कि इसे मंच से गाकर सुना सकता है. इसी प्रकार ऐसे अन्य लोग हैं जो कि स्वच्छता पर जल्दी से नाटक लिख सकते हैं जिसे स्वाभाविक नेताओं, किशोरों और किशोरियों के द्वारा मंच पर अभिनीत किया जा सकता है. आमतौर पर नाटकों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रिया के सामने आने वाली चुनौतियों का हास्य के माध्यम से प्रस्तुतीकरण किया जाता है. एक समुदाय द्वारा नाटक में एक खास घटना को प्रस्तुत किया गया. यह एक ऐसे समृद्ध व्यक्ति की कथा थी जो कि शौचालय नहीं बनाना चाहता था. नाटक में दिखाया गया कि उस अमीर आदमी की कन्या के विवाह के लिये एक मैचमेकर वर का प्रस्ताव लेकर आया और अपने साथ वर पक्ष की ओर से कुछ अतिथियों को भी लाया. एक अतिथि को तत्काल शौचालय जाने की जरूरत महसूस हुई. लेकिन अमीर आदमी के पास शौचालय था ही नहीं. इस लज्जाजनक स्थिति को हास्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया जिससे दर्शक हंसते-हंसते लोट-पोट हो गये. इस लज्जाजनक स्थिति के बाद अमीर आदमी ने स्वाभाविक नेता को बुलाया और शौचालय बनाने के लिये उसकी सहायता करने को कहा.

इस अवसरों से जुड़ा मनोरंजन और उत्सव पड़ौसियों को प्रेरित करता है कि वे भी समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रिया अपने लिये प्रारम्भ करें.

स्रोत: अमानतुल्ला हक, टीम लीडर, एसडीयू, केयर, बांग्लादेश

प्रसार सहज भी हो सकता है परन्तु अनुभव से यह पता चलता है कि सहयोग और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है. गैर-सरकारी संगठनों के लिये सहयोग और सहायता प्रदान करने के माध्यम से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार और विस्तार करने के लिये बहुत बड़ा अवसर है.

केन्या के किलिफि जिले में सहज प्रसार

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को सफलतापूर्वक जारीबुनी गांव में प्लान इंटरनेशनल की टीम के द्वारा ट्रिगर किया गया. अनुवर्ती भ्रमण के दौरान स्थानीय सुविधा के द्वारा की गई घोषणा से वे सभी आश्चर्यचकित रह गये. उन्होंने बताया कि गांव की समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को दिशा देने वाली टीम उपजिले के सभी गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रचार और प्रसार करने जा रही है और इसके लिये भ्रमण की तिथियां निर्धारित की जा चुकी हैं. इस अभिप्रेरणा का एक कारण यह था कि अन्य गांवों के कारण जारीबुनी गांव का जल प्रदूषित हो रहा था.

स्रोत: सैमुअल मुसेम्बी, प्रोग्राम यूनिट मैनेजर, प्लान केन्या, किलिफि.

सामुदायिक सुगमकर्ताओं की सहायता करने के लिये उपलब्ध विकल्पों में निम्नांकित सम्मिलित हो सकते हैं:

- मौखिक प्रोत्साहन और सम्मान
- इस हस्तपुस्तिका में दिये सुझावों तथा स्थानीय अनुभव पर आधारित लघु प्रशिक्षण
- सामुदायिक सुगमकर्ताओं के द्वारा अपनाई गतिविधियों का अभिलेखीकरण तथा अनुभवों का संकलन
- स्वाभाविक नेताओं की हो अपनी कार्यशाला जिसमें अनुभवों का आदान-प्रदान हो सके और प्रसार की रणनीति तैयार की जा सके.
- एक वैबसाइट का निर्माण जिसमें इन सशक्तिकृत स्वाभाविक नेताओं के नाम, फोटो और सम्पर्क सूत्र हों जो कि सामुदायिक परामर्शदाता और सुगमकर्ता के रूप में उपलब्ध हो सकते हैं.
- दैनिक भत्ता, परिवहन, भोजन, यात्रा के लिये सुविधा या भत्ता आदि के रूप में थोड़ी सी सहायता प्रदान करना. ऐसा करते समय यह ध्यान रखना होगा कि सहायता इस प्रकार की जाये कि लोगों को प्रोत्साहन और सहयोग मिले परन्तु उनके जोश और प्रतिबद्धता को कोई ठेस न पहुंचे.

पाकिस्तान में सहज प्रसार और विस्तार के अधिक औपचारिक, परन्तु विकेन्द्रीकृत तथा स्व-संचालित स्वरूप का अनुसरण किया जा रहा है जहां 70 स्वाभाविक नेताओं को प्रशिक्षित किया गया है (पाकिस्तान में सामुदायिक अधिकारवादियों के माध्यम से प्रसार शीर्षक भी देखें). यह स्वाभाविक नेता ऐसे सुगमकर्ता हैं जिनका उपयोग स्थानीय प्राधिकारियों के द्वारा किया जा सकता है. अनुबन्ध का स्वरूप तैयार कर लिया गया है जिसका प्रयोग इन्हें ट्रिगरिंग और अनुवर्ती गतिविधियों को सम्पन्न करने के लिये अनुबंधित करने के लिये किया जा सकता है.

इन सभी मामलों में लक्ष्य है स्थानीय संसाधनों की सहायता से कम लागत पर प्रसार और विस्तार करना. इस समय की सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकता है कि किस प्रकार यह किया जा सकता है के विषय में ज्यादा से ज्यादा जानकारी हासिल करना और सीखना तथा यह जानना कि किस स्वरूप के सहयोग और प्रोत्साहन अधिक प्रभावी होते हैं. इस हस्तपुस्तिका का उपयोग करने वालों से अनुरोध है कि वे इस पर चिंतन और विचार करें और अपने अनुभवों को दूसरों के साथ बांटें. पाकिस्तान की संस्था रूरल सपोर्ट प्रोग्राम नेटवर्क द्वारा विकसित और स्थापित वेबसाइट के माध्यम से स्वाभाविक नेताओं के अनुभवों को बांटने की तथा आपस में आदान-प्रदान करने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है.

यह वेबसाइट है: www.rspn.org ई-मेल: Tkhan@rspn.org.pk

एकजुट समुदाय की शक्ति को खुले में शौच से मुक्त स्तर को प्राप्त करने के माध्यम से आसानी से बना भारत के पश्चिमबंगाल राज्य के नदिया जिला कल्याणी नगरपालिका की विवेकानन्द कॉलोनी के सदस्य हुए समुदाय ने 12 वर्षों तक कूड़े-कचरे के कारण अवरुद्ध निकास नाली की सफाई कर डाली. वर्तमान में गन्दे पानी का पानी ठहर कर निकलता था, सफाई की जिम्मेदारी नहीं ली जा रहा था कि वर्षों तक एकजुट होने पर कूड़े-कचरे के ढेर के नीचे दबी हुई इतनी लम्बी और पक्की निकास नाली बाहर होगी.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को इस प्रकार बढ़ावा देने और उत्प्रेरित करने के माध्यम से अपने आप फैलने वाले अभियान का रूप पाने के लिये प्रयास करने के महत्व पर जितना बल दिया जाये उतना ही कम है. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रसार और विस्तार के लिये कई प्रकार के दृष्टिकोणों और कार्यविधियों तथा पहल की आवश्यकता होगी साथ ही यह भी सतत जानते रहने की आवश्यकता होगी कि क्या ऐसा रहा जो उचित परिणाम देने में सहायक है और क्या ऐसा रहा जिसे त्याग देना ही उचित होगा. वर्तमान में थोड़े से संवेदनशील सहयोग के आधार पर काम कर रहे सामुदायिक सुगमकर्ताओं के माध्यम से प्रचार, प्रसार और विस्तार की सबसे अधिक सकारात्मक संभावना दिखाई देती है जिससे बहुत थोड़े से समय में बहुत लोग पूर्ण स्वच्छता और स्वास्थ्यकर पर्यावरण का लाभ प्राप्त कर सकते हैं.

[illegible]

परिशिष्ट

परिशिष्ट क: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की उत्पत्ति, पृष्ठभूमि, प्रसार और विस्तार

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की अभिनव पहल 1999 में डॉ. कमल कार द्वारा की गई जबकि वह बांग्लादेश में कार्यरत वाटरएड (एक ब्रिटिश गैर-सरकारी संगठन) के लिये मूल्यांकन मिशन का नेतृत्व कर रहे थे. मिशन के द्वारा वाटरएड की सहायता से वाटरएड तथा उसके सहयोगी गैर-सरकारी संगठन विलेज एजुकेशन रिसोर्स सेन्टर (वीईआरसी) के द्वारा संचालित स्वच्छता परियोजना का मूल्यांकन किया जा रहा था. इस परियोजना में बहुत भारी सब्सिडी के साथ शौचालय निर्माण सम्मिलित था जिसके लिये निर्माण सामग्री की आपूर्ति बाहर से की जाती थी.

मिशन ने पाया कि यद्यपि गांव में शौचालयों की संख्या में तो वृद्धि हुई लेकिन खुले में शौच की परिपाटी चलती रही. मूल्यांकन में यह भी पता चला कि बांग्लादेश के विभिन्न इलाकों में गरीबी का स्तर अलग-अलग था लेकिन फिर भी स्वच्छता के लिये प्रदान की जा रही सब्सिडी की राशि सभी जगहों के लिये समान थी. मिशन की एक संस्तुति यह थी कि सहभागी विधि से गरीबी का मूल्यांकन किया जाये और गरीबी के स्तर के आधार पर सब्सिडी की अलग-अलग राशि प्रदान करने की व्यवस्था का विकास किया जाये.

अगले चरण में मिशन ने गरीबी और खुले में शौच के बीच के सम्बन्ध पर विचार किया - बांग्लादेश के राजशाही जिले के मोसमोइल गांव पर ध्यान केन्द्रित करके. डॉ. कार और मिशन के कुछ सदस्यों ने पाया कि शौचालय निर्माण सामग्री पर बाहर से प्राप्त होने वाली स्वच्छता सब्सिडी लोगों को खुले में शौच बन्द करने का निर्णय लेने के लिये प्रेरित नहीं कर रही है. इसके विपरीत यह पूरे समुदाय के द्वारा एकजुट होकर लिया गया निर्णय होता था. इसका कारण होता था पूरे समुदाय के द्वारा ठीक से समझ लेना कि समुदाय में तब तक कोई भी सुरक्षित नहीं है जब तक प्रत्येक सदस्य खुले में शौच बन्द नहीं कर देता और अपने स्वच्छता सम्बन्धी व्यवहार में परिवर्तन नहीं कर लेता. खुले में शौच से मुक्त पर्यावरण एक 'सार्वजनिक सम्पत्ति' है. ऐसी स्थिति प्राप्त करना तब तक संभव नहीं है जब तक कि कुछ लोगों के पास शौचालय हो जो कि निजी सम्पत्ति है, और अन्य लोग खुले में शौच करते रहें.

यह भी सामने आया कि बाहर से दी जाने वाली सब्सिडी (और शौचालय का निर्देशात्मक डिजाइन) वास्तव में समुदाय के द्वारा एकजुट होकर निर्णय लेने की प्रक्रिया में रुकावट पैदा कर देते थे. जिन कुछ गांवों में सबसे पहले समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की गई उनमें समुदायों के द्वारा कहा गया कि यदि गरीबों के लिये शौचालय निर्माण सामग्री पर सब्सिडी उपलब्ध कराई जा रही हो तो वे सभी गरीब वर्ग में वर्गीकृत होने का प्रयास करेंगे. दूसरी ओर जब इन गांवों में रहने वाले लोगों को यह स्पष्ट हो गया कि वे एक दूसरे के मल का सेवन कर रहे हैं (समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग प्रक्रिया के दौरान उनके अपने अवलोकन से) तब उन्होंने कहा कि वे इतने गन्दे वातावरण में नहीं रह सकते और इसलिये उन्होंने निर्णय किया कि वे खुले में शौच बन्द कर देंगे.

मोसमोइल के द्वारा अपने स्वच्छता की स्थिति जानने के लिये किये गये सहभागी विश्लेषण और इसके बाद उनके द्वारा एकजुट हो कर खुले में शौच बन्द करने का निर्णय एक ऐसी खबर बन गयी जो जंगल की आग की तरह पास पड़ौस के गांवों में तेजी से फैल गई. पड़ौस के गावों के द्वारा भी इसी प्रकार की गतिविधियों को संचालित किया जाने लगा. मोसमोइल तथा पड़ौस के अन्य गांवों के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लेने पर साइनबोर्ड लगवा दिये गये जिन पर घोषित किया गया था कि इन गांवों में कोई भी खुले में शौच नहीं करता.

बांग्लादेश के उत्तर और दक्षिण में विलेज एजुकेशन रिसोर्स सेन्टर की गतिविधियों की परिधि में आने वाले चार और जिलों में इस नई कार्यविधि और दर्शन का अनुप्रयोग किया गया और वहां भी उसी प्रकार के उत्साहित करने वाले परिणाम प्राप्त हुए. शीघ्र ही सैकड़ों गांवों ने अपने को खुले में शौच से मुक्त घोषित कर दिया.

वाटरएड के सहयोग से वीईआरसी ने परिवारों के स्तर पर शौचालय निर्माण सामग्री पर सब्सिडी देने के दर्शन को बदल दिया और सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के कार्यान्वयन को बिना सब्सिडी के जारी रखा. परिणाम बहुत उत्साहवर्द्धक थे तथा शौचालय निर्माण सामग्री के लिये सब्सिडी शीर्षक के अन्तर्गत आवंटित राशि की बचत की गई और इसका उपयोग उभर कर सामने आये स्वाभाविक नेताओं के क्षमता विकास के माध्यम से नई अवधारणा के प्रसार और विस्तार, कार्यशालाओं के आयोजन, प्रकाशन तथा अन्य प्रसार गतिविधियों के लिये किया गया. समुदाय के अभिनवताओं के द्वारा स्थान विशेष के लिये अनुकूल तथा उपयुक्त रूप से डिजाइन किये हुए 30 से अधिक कम-लागत शौचालयों के मॉडल विकसित किये गये. खुले में शौच से मुक्त हुए गांवों से सैकड़ों स्वाभाविक नेता उभर कर सामने आये जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से नये क्षेत्रों तक समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रसार और विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान किया. इनमें से कई स्वाभाविक नेताओं का उपयोग सामुदायिक परामर्शदाताओं के रूप में उन गैर-सरकारी संगठनों के द्वारा किया गया जिन्होंने अपने स्वच्छता कार्यक्रम में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अपना लिया था. विस्तृत जानकारी के लिये कृपया देखिये आईडीएस वर्किंग पेपर्स 184 और 257 "सब्सिडी और सीमा रिपोर्ट". (संदर्भ के लिये देखिये परिशिष्ट ज).

जब समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का विकास हो गया तो प्लान इन्टरनेशनल और केयर ने इसे बांग्लादेश के अपने कन्ट्री प्रोग्राम में शामिल कर लिया. स्थानीय कर्मियों से लेकर प्रबन्धकों तक सभी को डॉ. कमल कार के द्वारा प्रशिक्षित किया गया और सीखी गई बातों को स्थानीय कार्यक्रमों में एकीकृत किया गया. बांग्लादेश से सीख लेते हुए प्लान ने समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार किया और एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के एक दर्जन से अधिक देशों में इसे शुरू किया. वर्ल्ड विज़न और बांग्लादेश के गैर-सरकारी संगठन जैसे ढाका अहसानिया मिशन ने अपने चालू कार्यक्रमों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को एकीकृत कर लिया. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की उत्साहवर्द्धक सफलता और समुदायों में इसके प्रति बढ़ती दिलचस्पी देखकर बांग्लादेश के समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का कार्यान्वयन करने वाले विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों का 2004 में दिलचस्प नाम का एक संघ बना लिया गया.

2001/2 में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को भारत में महाराष्ट्र प्रांत में राज्य सरकार द्वारा शुरू किया गया. इसके लिये वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - साउथ एशिया द्वारा सहायता प्रदान की गई तथा डॉ. कमल कार को परामर्शदाता बनाया गया. अहमदनगर और नान्देड़ के जिलों में इसे प्रयोगात्मक रूप में शुरू किया गया. इन जिलों में सफलता के आधार पर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार कर महाराष्ट्र के सभी 32 जिलों में लागू कर दिया गया. बाद में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, आन्ध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश में भी शुरू कर दिया गया. महाराष्ट्र की हजारों ग्राम पंचायत (4000 से अधिक) तथा अन्य राज्यों के कई गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित हो गये.

परन्तु फिर भी भारत सरकार के "सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान" कार्यक्रम के अन्तर्गत परिवारों को शौचालय निर्माण के लिये सब्सिडी देने की व्यवस्था पूर्ववत् जारी है. दुर्भाग्य से इस प्रकार की सब्सिडी की व्यवस्था समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रसार और विस्तार के मार्ग में अवरोध पैदा करती है. महाराष्ट्र ने इस समस्या का हल ढूंढ लिया. वहां परिवारों को शौचालय निर्माण के लिये सब्सिडी देने के स्थान पर गांव के पूर्ण रूप से खुले में शौच से मुक्त घोषित होने पर पूरे समुदाय को पुरस्कार देने की व्यवस्था लागू कर दी गई. हिमाचल प्रदेश ने अपने स्वच्छता अभियान में भारत सरकार द्वारा दी जा रही सब्सिडी को प्रमुखता प्रदान नहीं की जिससे कि यह समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की प्रक्रिया में रुकावट न पैदा कर सके.

कम्बोडिया में वर्ष 2002 में कन्सर्न वर्ल्डवाइड द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत चार प्रांतों - पुरसत, कम्पोंग चैम, कम्पोंग स्प्यू, सियेम रीप - में प्रायोगिक रूप से की गई. यद्यपि कन्सर्न द्वारा कुछ समय बाद इसको हस्त क्षेप किया गया तथापि इसके विषय में जानकारी फैल गई और बाद में इसे ग्राम विकास मंत्रालय, प्लान कम्बोडिया और यूनिसेफ द्वारा अपने हाथ में ले लिया गया. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अब कम्बोडिया के 24 में से कम से कम 8 प्रांतों में कार्यान्वित की जा रही है और कम्बोडिया की सरकार इसे आधिकारिक ग्रामीण स्वच्छता विधि के रूप में अंगीकार करने पर विचार कर रही है.

वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम, यूनिसेफ, प्लान इन्टरनेशनल और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों, तथा कुछ राष्ट्रों की सरकारों के द्वारा आयोजित और मुख्य रूप से डॉ. कमल कार द्वारा प्रशिक्षण सुगमकर्ता के रूप में संचालित व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं के कारण 2007 तक समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत विश्व के बीस से अधिक देशों में हो चुकी है.

फरवरी और मार्च 2007 में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर दो बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन प्लान इन्टरनेशनल, रेख सौहागकर्ता द्वारा केन्याओं के दा-ए-सलाम और इथियोपिया में अवासा एवं अदीस अबाबा में किया गया. इन कार्यशालाओं में 100 से अधिक प्रतिभागी थे. इनमें स्वतन्त्र परामर्शदाता, कार्यक्रम प्रबन्धक केन्या, तंजानिया, इथियोपिया, मोजाम्बीक, सियराले, सूडान, मिस्र और युगान्डा, सरकारी कर्मिक, वाटरएड के स्टाफ, वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम, अन्य राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों के सदस्य सम्मिलित थे. इन सभी को डॉ. कमल कार द्वारा प्रशिक्षित किया गया. 2007 के अन्तिम 3-4 माह में अकेले इथियोपिया में 60 से अधिक गांवों के द्वारा खुले में शौच से मुक्त होने का स्तर प्राप्त कर लिया गया. प्लान केन्या, युगान्डा, सियराले के प्रशिक्षित प्रतिभागियों के द्वारा लौटने पश्चात अन्य कर्मियों को प्रशिक्षित किया गया और गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की गई. अक्टूबर 2007 में यूनिसेफ के सहयोग से नैरोबी, केन्या तथा लुसाका, जाम्बिया में दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया. सरकारी विभागों, यूनिसेफ केन्या, इथियोपिया, जाम्बिया, यूनिसेफ के अफ्रीका में स्थित 5 क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्रों, आईआरसी, प्लान इन्टरनेशनल, वाटरएड, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों के कर्मियों के द्वारा इन दो कार्यशालाओं में प्रशिक्षण लिया गया.

देश	शुरुआत का वर्ष	सहायता और सहयोग प्रदान करने वाला अधिकरण
1. भारत	2003	वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - साउथ एशिया, महाराष्ट्र, हिमाचल और हरियाणा प्रदेशों की सरकारें
2. कम्बोडिया	2004	कन्सर्न वर्ल्डवाइड वह संस्था है जिसने पहली बार कम्बोडिया में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की पहल की, ग्राम विकास मंत्रालय, यूनिसेफ और प्लान इन्टरनेशनल इस कार्यविधि के प्रमुख उपयोगकर्ता हैं
3. नेपाल	2003	इन्टरनेशनल, नेपाल वाटर फॉर हैल्थ और वाटरएड के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को नेपाल में पहली बार शुरू किया गया
4. इण्डोनेशिया	2004	वाटर एण्ड सैनिटेशन फॉर लो इनकम कम्युनिटीज़ और स्वास्थ्य मंत्रालय इण्डोनेशिया सरकार, वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम - ईस्ट एशिया एण्ड पैसिफिक रीजन, के द्वारा सबसे पहले 5 क्षेत्रों में प्रायोगिक रूप में इसे संचालित करके पहल की गई. बाद में यह देश के सभी बड़े द्वीपों तक फैल गया.
5. युगाण्डा	2002	आईरिश एड द्वारा सहायतित जिला विकास और विकेन्द्रीकरण कार्यक्रम के तहत पहली बार किबाले जिले में शुरुआत की गई.
6. जाम्बिया	2003	प्लान और वाटरएड जाम्बिया के द्वारा पहले चोमा जिले में डॉ. कमल कार के द्वारा वाटरएड की समीक्षा के बाद बहुत छोटे पैमाने पर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत की गई. बाद में दिसम्बर 2007 में यूनिसेफ और स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर राष्ट्रीय कार्यशाला और व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें सरकारी कर्मियों, गैर-सरकारी संस्थाओं, अन्तराष्ट्रीय गैर-सरकारी संस्थाओं के कर्मियों ने प्रतिभाग किया. इसके बाद समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को चोमा जिले में भी शुरू किया गया.
7. पाकिस्तान	2004	यूनिसेफ और वाटरएड, लोधरां बेस्ड प्रतिष्ठित पंजाब में स्थापित गैर-सरकारी संगठन आईआरएसपी द्वारा पाकिस्तान में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत की गई. इसके लिये वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम, साउथ एशिया से सहायता प्राप्त होती है. आरएसपीएन, एनआरएसपी, एसआरएसपी, टीआरडीपी और खुशहाल पाकिस्तान फण्ड संस्थाओं के द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कार्यविधि का ही प्रयोग किया जाता है.
8. नाइजीरिया	2004	चार राज्यों - बेनू, एनुगु, एकिति और जिगावा - में वाटरएड नाइजीरिया द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को प्रयोगात्मक रूप से प्रारम्भ किया गया है.
9. मंगोलिया	2004	एशिया डेवलपमेण्ट बैंक सहायतित अर्बन एवम डेवलपमेण्ट प्रोजेक्ट और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता कार्य विधि का परीक्षण जीटीजेड द्वारा सहायतित ऐक्स कम्प्रीहेन्सिव एण्ड डेवलपमेण्ट प्रोजेक्ट के अन्तर्गत गांवों में किया गया.
10. चीन	2005	प्लान चाइना द्वारा शान्शी प्रान्त में शुरू किया गया.
11. इथियोपिया	2006	वोरा (जो पूर्व में विस्मुली द्वारा इन्टरनेशनल था) द्वारा आयरिश एड के सहयोग से अम्हारिया में शुरू किया. प्लान इथियोपिया भी समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के प्रमुख कार्यान्वयनकर्ताओं में से एक है.
12. यमन	2006	सोशियल फण्ड फॉर डेवलपमेण्ट तथा यमन सरकार के ग्राम विकास मंत्रालय के द्वारा एक जिले में 2007 में प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के माध्यम से समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की शुरुआत की गई. इस प्रशिक्षण को सोशियल डेवलपमेण्ट फण्ड तथा कुछ अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संस्थाओं के सुगमकर्ताओं द्वारा संचालित किया गया.
13. बोलीविया	2006	यूनिसेफ, प्लान बोलीविया, डब्लूएसपी-एलएसी ने समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की बोलीविया में शुरुआत की. प्लान, तंजानिया, एक क्षेत्रीय व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन प्लान रेसा द्वारा अफ्रीका के 8 प्लान देशों के स्टाफ के लिये किया गया.
14. तंजानिया	2007	एक क्षेत्रीय व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन प्लान रेसा द्वारा पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका के 8 प्लान देशों के स्टाफ के लिये तंजानिया में फरवरी 2007 में किया.
15. केन्या	2007	मई 2007 में, तंजानिया और इथियोपिया में आयोजित समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रतिभाग करने के बाद प्लान केन्या ने समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को प्रयोगात्मक रूप से तीन विकास क्षेत्रों में शुरू करने का निर्णय लिया.
16. मालावी	2007	तंजानिया और इथियोपिया में डॉ. कमल कार द्वारा समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर संचालित व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं में प्रतिभाग करने के बाद प्लान मालावी के स्टाफ द्वारा इस कार्यविधि को प्रयोगात्मक रूप से शुरू किया गया.
17. बुर्कीना फासो, घाना और माली	2007/8	नाइजीरिया में प्रयोगात्मक रूप से शुरू करने के बाद सहायता प्रदान करने वाले अधिकरण वाटरएड द्वारा अपने पश्चिमी अफ्रीका कार्यक्रम के तहत तीन अन्य राज्यों, बुर्कीना फासो, घाना और माली में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार करने का निर्णय लिया गया है. इन देशों में यह प्रक्रिया अभी शुरुआती दौर में है.
18. पूर्वी तिमोर	2007	वाटरएड आस्ट्रेलिया और प्लान ईस्ट तिमोर समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का क्रियान्वयन करने के शुरुआती दौर में हैं.
19. सियेरा लियोन	2008	यूनिसेफ सियेरा लियोन, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता मंत्रालय, प्लान यू.के. और प्लान सियेरा लियोन के द्वारा डॉ. कमल कार के सहयोग और मार्गदर्शन में एक शृंखलाबद्ध व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यशालाओं की व्यवस्था की गई. कार्यशाला के प्रतिभागियों के द्वारा 34 गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग की गई.

परिशिष्ट ख: समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का प्रसार और विस्तार - एक खुला पत्र

प्रिय सहयोगी,

हाल के वर्षों में लोगों को यह स्पष्ट हो गया है कि शौचालय निर्माण के लिये परिवारों को सब्सिडी के रूप में दी जाने वाली आर्थिक सहायता की व्यवस्था समुदायों के द्वारा एकजुट होकर अपने व्यवहार में परिवर्तन के प्रयास के आड़े आती है. यह समझ तेजी से फैल रही है. इसके कारण जहां एक ओर चुनौतियां सामने आती हैं वहीं दूसरी ओर अवसर भी प्रस्तुत होते हैं. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का विस्तार बढ़ती गति से प्रसार और विस्तार हो रहा है. साथ ही लोगों को यह भी तेजी से स्पष्ट होता जा रहा है कि इसे सफल बनाने के लिये क्या करना चाहिये. यह सब बहुत ही उत्साहवर्द्धक है. हम आशा करते हैं कि गरीबी उन्मूलन, जन कल्याण, तथा अन्य सामुदायिक एकजुटता आधारित कार्य-योजनाओं के कार्यान्वयन के संदर्भ में इसका पूरा लाभ समाज को मिल सकेगा.

हम यह पत्र इसीलिये लिख रहे हैं कि हमारा विश्वास है कि इसकी संभावनाओं का लाभ तभी मिल पायेगा जब समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के व्यापक प्रसार और विस्तार के साथ गुणवत्ता को भी बनाये रखा जाये. हम यह सब व्यक्तिगत रूप से अपनी ओर से लिख रहे हैं और जो कुछ आगे प्रस्तुत कर रहे हैं वह हमारे निजी अनुभवों तथा वर्तमान समझ पर आधारित है.

1990 के दशक में अनुदान, ऋण उपलब्ध कराने वाली संस्थाओं और सरकारों के द्वारा सहभागी ग्राम्य अध्ययन (पी.आर.ए.) के त्वरित प्रसार और विस्तार को प्रोत्साहित किया गया. इस दबाव के कारण कार्यक्रमों की गुणवत्ता पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ा. अच्छे सहभागी ग्राम्य अध्ययन के लिये अपेक्षित व्यवहार, अभिवृत्ति और कार्यविधि को अपनाये बिना सहभागी ग्राम्य अध्ययन नाम का प्रयोग बहुत से स्थानों पर किया गया. प्रशिक्षणों की मांग बढ़ गई परन्तु प्रशिक्षणों की संख्या के संदर्भ में अपेक्षित अच्छे प्रशिक्षक उपलब्ध नहीं थे. इस कमी को मुख्य रूप से उन परामर्शदाताओं, गैर-सरकारी संगठनों और समूहों ने पूरा किया गया जो कि इस कार्य के लिये सक्षम नहीं थे और इस कारण उन्होंने नुकसान ही किया. हमारी चिंता यही है कि ऐसा ही समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के साथ न होने पाये. दुर्भाग्य से इस प्रकार के संकेत हैं कि ऐसा होने लग चुका है. यह हमारा सुविचारित मत है कि इसे रोकने के लिये तथा गुणवत्ता को बढ़ाने तथा बनाये रखने के लिये तीन निर्णायक बातों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी. निधियों के वितरण पर अंकुश और सावधानी से नजर रखना, समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये अच्छा व्यावहारिक और ग्राम भ्रमण आधारित प्रशिक्षण, और ट्रिगरिंग के बाद उपयोगी अनुवर्ती भ्रमण तथा संबंधित गतिविधियां.

निधियों के वितरण पर अंकुश और सावधानी से नजर रखना. हम अनुदानदाताओं, ऋणदाताओं और सरकारों से अनुरोध करते हैं कि बड़े बजट, बड़े लक्ष्य और धन वितरण करने के दबाव वाले कार्यक्रमों से बचें तथा इसके स्थान पर प्रसार और विस्तार संयत और सुविचार तरीके से करने के लिये सहयोग करें. अच्छे प्रशिक्षण, सर्वांगीण और प्रतिबद्ध स्टाफ, और स्थानीय स्वाभाविक नेताओं के विकास और उन्हें सहयोग देने पर ध्यान संकेन्द्रित करें. गैर-सरकारी संगठनों तक ढेर सारा पैसा बहुत तेजी से पहुंचाने के कारण पहले ही बहुत नुकसान हो चुका है. पर्याप्त आर्थिक सहायता की आवश्यकता तो है परन्तु बहुत अधिक बड़ी निधि की नहीं.

व्यावहारिक ग्राम भ्रमण आधारित प्रशिक्षण. अच्छे प्रशिक्षकों की पहचान करना ही मूल मंत्र है. और अब उनको इस प्रकार सहयोग करना है कि वे पूर्णकालिक रूप से सभी प्रशिक्षणों में भागीदारी करें तथा प्रशिक्षणों को व्यावहारिक और ग्राम भ्रमण आधारित बनायें. कुछ बहुत अच्छे लोग तो अन्य कार्यों में फंसे हुए हैं. जब भी सम्भव हो उन्हें पूर्णकालिक प्रशिक्षक के रूप में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान में सूत्रधारों की भूमिका में योगदान करने के लिये मनाने का प्रयास कीजिये. कुछ स्थानों में तेजी से प्रसार और विस्तार के कारण प्रशिक्षणों की गुणवत्ता में कमी आने लगी है. यह बहुत आवश्यक है कि प्रशिक्षण की गुणवत्ता का नियमित रूप से अनुश्रवण किया जाये और किसी भी ऐसे संगठन या व्यक्ति को नियुक्त न किया जाये जिसके पास आवश्यक तथा उपयुक्त अनुभव, अभिवृत्ति और व्यवहार का अभाव हो.

अनुवर्ती भ्रमण और गतिविधियां. ट्रिगरिंग को कभी भी अपने आप में एक पूर्ण घटना नहीं समझा जाना चाहिये वरन् इसे एक सतत प्रक्रिया की शुरुआत मात्र ही समझा जाना चाहिये. यह उस सतत प्रक्रिया की शुरुआत है जिसमें समुदाय को प्रोत्साहन और सहयोग प्रदान किया जाता है जिससे समुदाय कुछ समय में खुले में शौच से पूर्ण रूप से मुक्त हो जाता है. साथ ही समुदाय का सशक्तिकरण भी हो जाता है और समुदाय एकजुट होकर अपने समाज के लिये और भी बहुत कुछ करने के लिये प्रेरित हो जाते हैं.

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के इतिहास में यह एक कठिन समय है. यदि सभी सम्बन्धित उपर्युक्त तीनों बातों का पूरा ध्यान रखेंगे तथा तदनुसार कार्यवाही करेंगे तो भविष्य वास्तव उज्ज्वल ही होगा. और यदि ऐसा नहीं करते तो ग्रामीण लोगों को लाभान्वित करने का एक बहुत बड़ा अवसर दुखद रूप से हाथ से निकल जायेगा. जो भी महत्वपूर्ण समाज और घटनाओं को प्रभावित करते हैं उनसे हमारा अनुरोध है कि वे ऐसा न होने दें.

कृपया इस पत्र को व्यापक रूप से परिचालित करने का कष्ट करें. आप इसके लिये स्वतंत्र हैं.

भवदीय

कमल कार	**रॉबर्ट चैम्बर्स**
आर 109, दि रेसीडेन्सी	फेलो, पार्टीसिपेशन टीम,
सिटी सेन्टर, साल्ट लेक	इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज
कोलकाता - 700064, भारत	ससेक्स, यू.के.

30 नवम्बर - 1 दिसम्बर, 2007 को ओइटा, जापान में आयोजित ईस्ट एशिया सैनिटेशन कांफ्रेन्स तथा 18-20 फरवरी, 2008 को डरबन, दक्षिण अफ्रीका में आयोजित अफ्रीकासैन में वितरित किया गया.

परिशिष्ट घ: विशेष परिस्थितियों में ट्रिगरिंग

जहाँ लोग नदियों या बहते पानी में शौच करते हैं

उन जगहों में जहाँ लोग खुला पानी अर्थात् नदियों, तालाबों, जलाशयों आदि में शौच करते हैं वहाँ अनुक्रम भ्रमण का बहुत स्पष्ट प्रभाव नहीं होता. परन्तु आप सामान्यतया यह भी पायेंगे कि समुदाय के सदस्य उसी पानी का नहाने तथा कुल्ला आदि व्यक्तिगत स्वच्छता के कार्यों के लिये भी करते हैं. इस तरह की स्थितियों में आप एक बाल्टी पानी लाने का अनुरोध कर सकते हैं और पूछ सकते हैं, "क्या आप इस पानी से कुल्ला करेंगे?" बहुत से सदस्यों का उत्तर होगा "हाँ".

इस समय आप समुदाय के सभी परिवारों के द्वारा प्रतिदिन विसर्जित मल की मात्रा का आकलन कर सकते हैं. साथ ही यह भी पूछ सकते हैं कि उसी पानी में कितने और समुदायों के द्वारा शौच की जाती है (नदी में ऊपर की ओर या तालाब के दूसरे किनारे पर). इस आकलन के बाद उनसे उसी पानी से अपने चेहरे धोने, कुल्ला करने और गरारा करने के लिये कहिये. शायद कोई भी इसके लिये तैयार नहीं होगा. उनसे पूछिये कि यदि वे अभी तक उसी पानी का प्रयोग शौच करने के लिये और साथ ही नहाने के लिये करते आ रहे हैं तो अब क्यों मना कर रहे हैं.

समुदाय द्वारा उत्पादित मल की मात्रा के आकलन से और प्रश्न और परिचर्चा उठनी चाहिये, उदाहरण के लिये सारा मल कहाँ जाता है? सतह पर पड़े मल के कारण भूमिगत जल स्रोत भी संदूषित हो सकते हैं. सतह पर पड़े इतने अधिक मल के क्या प्रभाव हो सकते हैं? इस प्रकार के प्रश्नों से समुदाय समस्या पर विचार करना शुरू कर देगा कि खुले में शौच के क्या प्रभाव होंगे. आपको उन्हें बताने की आवश्यकता नहीं है.

प्रश्न अवश्य पूछिये और समुदाय को अपने से उन पर चिंतन करने दीजिये. समुदाय के अलग-अलग सदस्यों से प्रश्न पूछिये - महिलाएं, पुरुष, बच्चे, अमीर, गरीब - जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि सभी अपना उत्तरदायित्व स्पष्ट रूप से समझें. विश्लेषण के अन्त में आप पूछ सकते हैं, "अगले दिन कौन खुले में शौच करने जायेगा?" या "कौन उस पानी में स्नान करेगा जिसमें सारा समुदाय शौच करता आ रहा है?" उनसे कहिये कि वे हाथ खड़े करके बतायें. यदि कोई हाथ खड़ा नहीं करता तो उनसे पूछिये कि यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो क्या करेंगे?

खुले में शौच का विशिष्ट स्थान

पूर्वी अफ्रीका के कुछ भागों में शौचालय अनिवार्य हैं परन्तु यह बहुधा खुले गड्ढों के रूप में घरों के पास ही निर्मित किये जाते हैं. इन्हें कभी-कभी "मक्खियों और मच्छरों के कारखानों" के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है.

यदि आप उनसे पूछें कि खुले में शौच कौन करता है तो कोई भी लोग हाथ उठायेंगे, यदि उठाना चाहें तो. तब उनसे पूछिये:

- यदि आप शौचालय के छेद के अन्दर देखते हैं तो क्या दिखाई देता है? मल? यदि हाँ तो क्या आप मक्खियों और कीड़ों को सतह पर देखते हैं? यदि आप एक कड़ी को नीचे डाल कर निकालें तो क्या उसमें मल लगा होगा? क्या आपके विचार से नीचे गड्ढे में पैदा हो रही मक्खियाँ बाहर आ सकती हैं? यदि इन सभी प्रश्नों के उत्तर "हाँ" हैं तो फिर यह खुले में शौच से किस प्रकार भिन्न हुआ? क्या यह उससे भी खराब नहीं है?
- अनुक्रम भ्रमण के दौरान इनमें से कुछ शौचालयों को देखिये.

लोग सभी एक गड्ढे वाले शौचालयों को जल्दी से ढकने का प्रयास कर सकते हैं. वे एक अन्तरिम कदम के रूप में राख से मल को ढक सकते हैं जिससे मक्खियाँ कम हो जायें. इसी विधि का प्रयोग उन अवस्था परन्तु शौचालयों के विषय में समुदाय में जागरूकता पैदा करने के लिये भी किया जा सकता है जैसी चीन और वियतनाम में पाई जाती है और जिनमें मानव मल को सुरक्षित ढंग से ढका नहीं जाता है परन्तु खुला रहता है जिससे वातावरण के संदूषित होने की आशंका बनी रहती है.

सिद्धान्त और कुछ नहीं है परन्तु किसी परिवार विशेष के शरम हो जाने की संभावना रहती है जब किसी एक परिवार को कमियां बताई जाती हैं. यदि पूरे समुदाय की बात हो तो ऐसा नहीं होता. इसलिये यह संस्तुति की जाती है कि एक ही समुदाय के कई घरों को सुगमकर्ताओं और समुदाय के सदस्यों के दो या तीन पृथक समूहों के द्वारा स्वच्छता अनुक्रम भ्रमण अथवा खुले में शौच के स्थानों के अनुक्रम भ्रमण के दौरान देखा जाये. सभी उप-समूहों द्वारा जो कुछ पाया गया उस पर बाद में बैठक में मालिक के नामों और इकट्ठा समुदाय के सदस्यों के साथ परिचर्चा की जा सकती है.

जहाँ शौचालय तो हैं परन्तु उनका प्रयोग कम ही होता है

आर्थिक रूप से अधिक विकसित क्षेत्रों में यह सामान्य घटना है. शौचालयों का अधिक प्रयोग नहीं किया जाता क्योंकि या तो मल को बहाने के लिये पानी नहीं होता या लोगों को यह डर लगा रहता है कि गड्ढा भर जायेगा.

समुदाय स्तर पर किये जाने वाले समाधानों में सम्मिलित हैं:

- डालीकर फिर सूखा शौचालय जैसा भारत के हिमाचल प्रदेश के कुछ भागों में पाया जाता है जिसमें ढलवान होता है और मल को राख से ढक दिया जाता है.
- सीढ़ फ्लश वाला विकास शौचालय पैन और सिफान वाली जिसमें बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है.

जहाँ मल खुले में बहा दिया जाता है

यमन में घरों में बने शौचालयों से बहुधा मल बह कर खुले में आ जाता है जिसके कारण पड़ोसियों में झगड़े भी हो जाते हैं. इस तरह की घटनाओं के कारण पुलिस-थाना और कोर्ट-कचहरी भी हो जाती है.
समुदाय के स्तर पर समाधानों में सम्मिलित हैं: गड्ढे खोदकर ढके हुए सोक पिट बनाना. कई लोग अपने पारम्परिक सूखे शौचालयों की प्रणाली की ओर वापस जाना चाहते थे. यमन के पहाड़ीय और अर्धपहाड़ीय क्षेत्रों के पारम्परिक शौचालय 100 वर्षों से भी अधिक पुराने हैं और रेगिस्तानी स्थितियों के लिये उपयुक्त हैं. ऐसी जगहों में जहां बहुत कम या न के बराबर बारिश होती है शौच के बाद राख का प्रयोग उसे ढकने के लिये किया जाता था और शौचालय के नीचे बने एक छोटे से दरवाजे से समय-समय पर सूखी कीचड़ को वहाँ से निकाल कर उसका निपटान कर दिया जाता था. शौचालय सामान्यतया दो या तीन मंजिले मकान के हर तल पर बने होते हैं. यह सभी शौचालय एक उर्ध्वाधर वर्गाकार या वृत्ताकार छेद वाले पाइप से जुड़े होते हैं जो कि मकान की बाहरी दीवार के सहारे ऊपर से नीचे की ओर आता है. मल नीचे गिर कर एक जगह एकत्र हो जाता है जिसे हर इस्तेमाल के बाद ऊपर से राख डाल कर ढक दिया जाता है. शहरों और कस्बों में पानी की सील वाले अधिकतर शौचालयों को सूखे गड्ढे वाले शौचालयों ने प्रतिस्थापित कर दिया है. गांवों के लोगों ने भी सूखे गड्ढे वाले शौचालय कम लागत पर बनाने का निर्णय लिया.

जहाँ महिलाएं पर्दे में रहती हैं और घरों में बाल्टियों तथा चारा काटे समय प्लास्टिक के थैलों का इस्तेमाल करती हैं

यमन और पाकिस्तान के कुछ भागों में महिलाएं घरों के अन्दर रखी गई बाल्टियों में शौच करती हैं और इन बाल्टियों को केवल रात को अंधेरा होने के बाद ही बाहर ले जा कर खाली कर पाती हैं. यमन की महिलाओं ने बताया कि मवेशियों को रात को बांधने के लिये मकान के भूतल का प्रयोग एक बाड़े के रूप में किया जाता है. जानवरों के इन बाड़ों की हालत बहुत ही खराब होती है जहां मानव मल और जानवरों का मल एक दूसरे से मिल जाते हैं और उसी के ऊपर से लोग चल कर जाते हैं जिससे बहुत भयानक दुर्गन्ध बनी रहती है. इस भूतल के कक्ष में सामान्यतया कोई खिड़की या रोशनदान भी नहीं होते. लड़कियों और महिलाओं के पास इस स्थान का उपयोग शौच के लिये करने के अलावा कोई और विकल्प ही नहीं है.

लोगों के द्वारा किया जाने वाला समाधान है: शौचालयों का निर्माण

परिशिष्ट ङ: घृणा जगाने के लिये प्रश्नों के नमूने

खुले में शौच के स्थानों के अनुप्रस्थ भ्रमण के दौरान समुदाय से पूछे जा सकने वाले प्रश्न

- यहाँ शौच करने कौन लोग आते हैं?
- महिलाएं कहाँ जाती हैं?
- बच्चों के द्वारा किन स्थानों का उपयोग किया जाता है? (बच्चों के समूह को सुगमकर्ता द्वारा अलग ले जाया जाता है और वे सुगमकर्ता तथा अन्य को उन स्थानों पर ले जाते हैं जहाँ बच्चे शौच करते हैं)
- यह किसका मल है?
- मल की दो या तीन ढेरियों की ओर इशारा करते हुए पूछिये कि उनके रंग, आकार, स्वरूप आदि में क्या फर्क है? उनके विचार से इस प्रकार के अन्तर के क्या कारण हो सकते हैं? (उदाहरण के लिये डायरिया, पेचिश, कृमि, आदि इत्यादि)
- ताजे मल की ओर इशारा करते हुए पूछिये कि क्या उसमें कोई जीवित चीज दिखाई दे रही है (उदाहरण के लिये मक्खियाँ, कीड़े, मच्छर, कीटाणु इत्यादि)
- जब आप कुछ लोगों को अपनी नाक बन्द करते हुए या घृणा से थूकते हुए पायें तो पूछिये कि वे ऐसा क्यों कर रहे थे? क्या वे ऐसा ही उस समय भी करते हैं जब वह रोज उस स्थान पर आते हैं?
- पूछिये कि मक्खियाँ उड़ कर कितनी दूर जा सकती हैं? क्या मक्खियाँ मल को अपने साथ लेकर उनके घर तक भी आ सकती हैं?
- उन्हें यह कह कर चिढ़ाइये कि उन्हें बहुत चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि शायद जिन मक्खियों को वे मल पर भिनभिनाते हुए देख रहे हैं वे उन मक्खियों से भिन्न हैं जो कि उनके भोजन पर भिनभिनाती हैं (शायद आपके समुदाय के लोग सहमत न हों और कहें कि यही वह मक्खियाँ हैं जो मल को उनके घर तक ले जाती हैं)
- पूछिये कि ज्यादा मक्खियाँ किस पर भिनभिनाती हैं: ताजा मल पर, ठोस मल पर, सूखे मल पर या गीले मल पर?
- पूछिये कि कौन सा मल जल्दी सूख जाता है, साधारण मल या डायरिया से पीड़ित व्यक्ति का मल? कौन सा मल अधिक पनीला होता है?
- पूछिये कि कौन सा मल ज्यादा मक्खियों को आकर्षित करता है (सूखा, पनीला या अर्धठोस मल)?
- पूछिये कि डायरिया वाले पनीले मल से संक्रमण जल्दी फैलता है या साधारण अर्धठोस मल से?
- अन्त में पूछिये कि क्या उन्हें ऐसे वातावरण में जीना अच्छा लगता है?

कोई अन्य प्रश्न पूछिये यदि आपको लगता है कि उससे उनमें घृणा उत्पन्न हो सकती है. स्थानीय स्तर पर कोई नई चीज या नये प्रश्न की इजाद कीजिये.

परिशिष्ट च: अनुवर्ती गतिविधियों की नमूने की जांचसूची (समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ट्रिगरिंग के तत्काल बाद)

प्रथम:

- अनुवर्ती गतिविधियों के लिये टीम का गठन
- 3-4 व्यक्ति
- टीम में कम से कम एक महिला
- कुछ सशक्त स्वाभाविक नेताओं को सम्मिलित कीजिये या सबसे अच्छे ट्रिगरिंग/ट्रिगरिंग के बाद की गतिविधियों में जुड़े सबसे अच्छा काम करने वाले गांव के किसी सदस्य को टीम में सम्मिलित कीजिये

द्वितीय:

- सभी गांवों का भ्रमण कीजिये
- बच्चों का जुलूस निकलवाइये
- जिस चार्ट पर समुदाय के द्वारा खुले में शौच मुक्त होने की तारीख अंकित है उसे ले जाइये और उस पर हस्ताक्षर करवाइये
- गांव के स्वाभाविक नेताओं के साथ बैठक कीजिये
- समुदाय की सहायता करवाए या को चार्ट को चार्ट के साथ केन्द्रीय स्थान पर लगाने में कीजिये जिससे वे उन मकानों पर निशान लगाना शुरू कर दें जिन्होंने शौचालय बनाने शुरू कर दिये हैं या बना लिये हैं
- समुदाय के साथ निर्माण स्थलों के अनुप्रस्थ भ्रमण के दौरान सभी निर्माण स्थलों पर जाइये और उन्हें देखिये. समुदाय द्वारा प्रतिदिन इसका अनुसरण
- जिन्होंने निर्माण शुरू कर दिया है उन्हें प्रोत्साहित कीजिये और उनसे पूछिये कि क्या उन्हें किसी प्रकार की तकनीकी मार्गदर्शन की आवश्यकता है - विशेषकर ढीली या भुरभुरी मिट्टी - परन्तु मुख्य रूप से उनके ही विचारों को कार्यान्वित होने दीजिये और अन्य गांवों के उदाहरण उनके सामने रखिये
- अगले भ्रमण की तारीख पर सहमति दीजिये और उन्हें बताइये कि अगले भ्रमण के समय साथ में अन्य गांवों के बहुत से लोग भी होंगे जिन्होंने काफी प्रगति कर ली है और उन्हें सूचित कीजिये कि अन्य गांवों ने क्या प्रगति कर ली है
- नये निर्माणों की फोटो खींचिये
- जिन गांवों में प्रगति की गति धीमी है उनमें ग्राम प्रधान और समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ बैठक कीजिये और उन्हें कम से कम दो सप्ताह के लिये अपनी अनुसरण योजना बनाने में मदद कीजिये
- सबको सामान स्थिति में तैयार रहिये कि बाहर से लोग आयेंगे और देखेंगे कि कोई ऐसा समुदाय भी है जो कि एक दूसरे के मल का सेवन करते रहना चाहता है (यहाँ सामूहिक बैठक में, कार्यशाला में, गांव के समक्ष प्रस्तुतीकरण के समय उनके द्वारा व्यक्त की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिये उन्हें जगाने और उत्साहित करने हेतु)

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता में अग्रिम पंक्ति के समुदायों के सभी स्थानीय और देशी तकनीकी विकल्पों के विषय में उन्हें बताइये. - फोटो सहित और गांव के नाम सहित.

परिशिष्ट छ: लक्ष्य आधारित आंशिक स्वच्छता और समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की तुलना

सब्सिडी आधारित कार्यक्रमों की तुलना में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के लिये सोच, दृष्टिकोण तथा कार्यविधि में कई प्रकार के बदलाव की आवश्यकता होती है. इन विषमताओं को निम्नांकित तालिका में संक्षेप में दर्शाया गया है.

कार्यक्रम के अवयव	लक्ष्य-आधारित आंशिक स्वच्छता	समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता
शुरुआत और फोकस	वस्तुएं, भौतिक लक्ष्य प्राप्ति	लोग, परिणाम
प्रमुख गतिविधि	शौचालयों का निर्माण करना	जगाने और अभिप्रेरित करने वाली प्रक्रियाएं
शौचालयों का डिजाइन - किसके द्वारा बनाया गया	अभियन्ताओं द्वारा	समुदाय द्वारा अभिनव पहल
डिजाइनों की संख्या	एक या कुछ	बहुत
मुख्य सामग्री	सीमेन्ट, पत्थर, ईंट आदि बाहर से खरीदी गई	बांस, लकड़ी, टिन, जूट, प्लास्टिक इत्यादि (लगभग सभी स्थानीय स्तर पर उपलब्ध)
इकाई लागत	बहुत अधिक	रु. 50/- से भी कम हो सकती है
संकेतक	निर्मित शौचालय	खुले में शौच से मुक्ति
उपयोगकर्ता	आंशिक और अनियमित	उपयोग
कौन लाभान्वित होता है	अच्छी स्थिति हालत वाले	सभी, गरीबों सहित
मुख्य अभिप्रेरक	सब्सिडी	घृणा, आत्म-सम्मान
आच्छादन/उपयोग	आंशिक	सम्पूर्ण
लाभ	कम: खुले में शौच चलती रहती है	उच्चतर: खुले में शौच से मुक्ति

समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को अंगीकार करने वाली एवं/और इसका प्रसार एवं विस्तार करने वाली संस्थाओं के लिये इन विषमताओं के उपरान्त महत्वपूर्ण हो सकते हैं. इसके लिये आवश्यक है कि व्यक्तिगत तथा संस्थागत सोच और व्यवहार में बदलाव किया जाये. उदारतापूर्वक सब्सिडी वितरित करने, उच्च स्तरीय शौचालयों के मॉडलों को बढ़ावा देने तथा बड़े बजट बनाने और व्यय करने की एकतरफा सोच को बदलना होगा. समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता का आधारभूत सिद्धान्त है कि कोई सब्सिडी नहीं दी जानी चाहिये. बहुत स्थानीय स्तर के साधारण समुदाय सदस्यों (जो कि विशेषज्ञ नहीं हैं) के द्वारा सुगमकर्ता की भूमिका का निर्वहन किया जाता है. कम लागत का प्रशिक्षण कारगर होता है. इसमें से किसी भी काम के लिये बहुत बड़े बजट की जरूरत नहीं होती है. यह वास्तव में एक समुदाय संचालित प्रक्रिया होती है और इसके प्रसार एवं विस्तार के लिये भी समुदाय के स्तर पर ही काम करने की आवश्यकता होती है (बजट को खर्च करने की आवश्यकता इसके लिये प्रेरणा का स्रोत नहीं है).

इस स्थानीय स्तर पर समुदायों का सशक्तिकरण करने की पहल के प्रसार और विस्तार को बढ़ावा देने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों की बहुत अहम भूमिका है जिनमें गैर-सरकारी संगठन भी सम्मिलित हैं. सरकार और राष्ट्रीय गैर-सरकारी संस्थाओं का दायित्व है कि वे इसके लिये अनुकूल स्थितियाँ सुनिश्चित करें और अभिप्रेरण तथा प्रसार और विस्तार के लिये कारगर हों. आवश्यक है कि सभी इस बात को समझें कि एक 'इग्नाइट में स्पार्क' की आवश्यकता है जिससे समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता की ज्योति जलाई जा सके और जब एक बार यह ज्योति सुलग हो जाये तो समुदाय से समुदाय तक अपने आप फैलने लगेगी.

परिशिष्ट च: स्रोत और सम्पर्क सूत्र, वेबसाइट, वीडियो, चर्चा फोरम इत्यादि सहित

Key Publications

- Community-Led Total Sanitation as a Livelihoods Entry Point – A Brief Introduction, Katherine Pasteur, IDS, Sept 2005 http://www.livelihoods.org/hot_topics/CLTS.html
- Practical Guide to Triggering Community-Led Total Sanitation CLTS) Kamal Kar, November 2005 http://www.ids.ac.uk/ids/bookshop/wp/Wp257% 20pg.pdf (Also available in Chinese, Arabic, French and Spanish)
- Subsidy or self-respect? Community led total sanitation. An update on recent developments (Including reprint of IDS Working Paper 184) IDS Working Paper 257 Kamal Kar and Katherine Pasteur, 2005. http://www.livelihoods.org/hot_topics/CLTS.html
- Latest Update to Subsidy or Self Respect, Kamal Kar and Petra Bongartz, April 2006. Update to IDS Working aper 257 http://www.livelihoods.org/hot _topics/docs/CLTS_update06.pdf
- Favourable/Unfavourable conditions for CLTS: proposes that triggering and the achievement of ODF status are more likely to succeed in some conditions than in others. Starting in favourable conditions and spreading into less favourable is a commonsense strategy. http://www.livelihoods.org/post/CLTS_po stit.htm

All of these and many other documents are available from the Livelihoods Connect website
Livelihoods Connect hosts a hot topic on CLTS, a mini-website, which contains a wealth of useful materials on Community Led Total Sanitation (CLTS) and how it can serve as an entry point for other livelihoods activities:
http://www.livelihoods.org/hot_topics/CLTS.html

For any enquiries or if you would like to be added to our **CLTS mailing list** so that you will receive updates on new materials available on the website as well as other CLTS related news, please contact Petra Bongartz (P.Bongartz@ids.ac.uk)

Videos

UNICEF Cambodia
- CLTS (Khmer version) Contact Hilda Winarta hwinarta@unicef.org

Knowledge Links India (19-29 minutes)
- No shit Please! (English)
- Ek Behtar Duniya Ke Liye (Hindi)
- Understanding CLTS with Kamal Kar (Hindi with English subtitles)
- People and their Voices (Hindi with English subtitles) Contact Knowledge Links contact.knowledge.links@gmail.com

Project Concern International, Indonesia
CLTS contact: Sofihin Abas abu_goswami@yahoo.com

TVE
Earth Report: Clean Living
broadcast on BBC World in March 2008
See http://www.tve.org/earthreport/archive/doc.cfm?aid=1889 for more detail
For Tape or DVD orders – contact Dina Junkermann, TVE distribution manager: tel. +44 20 7901 8834; email: dina.junkermann@tve.org.uk

WSP/WASPOLA, Indonesia
Contact PAK Djoko of GATES project at WSP, Jakarta,
dwartono@worldbank.org
Awakening Change

WSP-South Asia, 55, Lodhi Estate, New Delhi, 100003, India.
Contact: Ajith Kumar, Ckumar1@worldbank.org

WSP Bangladesh
- Igniting Change.
Contact: WSP-South Asia, Dhaka, Bangladesh;

UNICEF Sierra Leone, Freetown
'Community Led Total Sanitation in Beautiful Salone'
Contact: Francesca De Ferrari, fdeferrari@unicef.org, Darren Geist, dgeist@unicef.org

Countries with CLTS and organisations involved in implementation/trials of CLTS

Africa
Burkina Faso: WaterAid
Egypt: Plan Egypt applying CLTS Principles in solid waste management
Ethiopia: Vita, (formerly Refugee Trust International) implementing CLTS in Arbaminch area, WSP, Plan Ethiopia
Ghana: WaterAid
Kenya: Plan Kenya, UNICEF
Mali: WaterAid
Nigeria: WaterAid
Sierra Leone: UNICEF, Ministry of Health, Education, Water Supply Energy and Power and Plan Sierra Leone
Tanzania: Plan Tanzania,
Uganda: Plan Uganda, Kibale District Administration supported by Irish Aid
Zambia: UNICEF, Choma district, DWASHE, Partner NGO of WaterAid Zambia,

Asia
Bangladesh: SDU-CARE, Bangladesh, Dishari, Plan, WaterAid and their NGO partners like, VERC, NGO Forum for Drinking Water Supply and Sanitation, Dhaka Ahsania Mission, World Vision, WSP-South Asia
Cambodia: Ministry of Rural Development, Royal Government of Cambodia implementing CLTS in six provinces, UNICEF, Plan, Cambodia, Swiss Red Cross.
India: Government of India (State Governments of Maharashtra, Haryana, Himachal Pradesh, only Urban CLTS in Kalyani Municipality under Kolkata Urban Services for the Poor (KUSP) in West Bengal), WSP-South Asia.
Indonesia: Government of Indonesia, WSLIC II (AusAid), Project Concern International, WSP-East Asia and Pacific Region, Jakarta, Gates Foundation supported TSSM project in East Java Province.
East Timor: Plan and WaterAid Australia have recently started implementing CLTS.
Nepal: WaterAid, Plan Nepal, UNICEF, NEWAH, and Nepal Red Cross.
Pakistan: IRSP, Rural Support Programme Network, (RSPN Pakistan Khushal Pakistan Fund (KPF)) WSP, SARAWON International.

Latin America
Bolivia: UNICEF, WSP, Plan Bolivia.

Middle East
Yemen: Yemeni Social Fund for Development (SFD-Yemen).

स्थानीय अनुकूलन और विकसित अभिनव मॉडल: एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशों में समुदायों द्वारा निर्मित शौचालयों के मॉडलों की विविधता

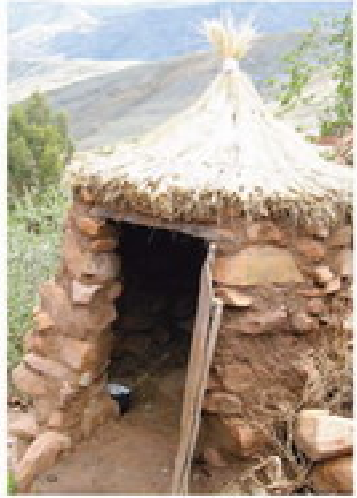

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ऊपर और नीचे कम्बोडिया के विभिन्न रोग के आवासन की गांवों में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता को ट्रिगरिंग के तुरन्त बाद एक गड्ढे को सूखे शौचालय का पूरा निकास करने वाले उत्साहित लोग जो कि अपने क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय हो गये.

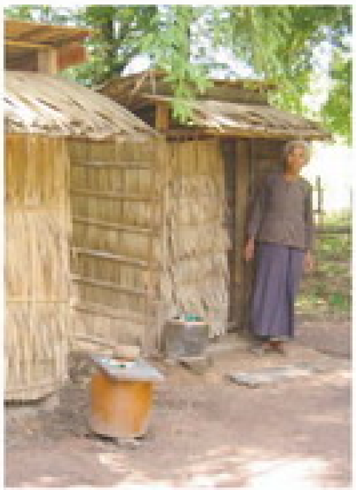

ऊपर कम्बोडिया के कम्पोंग स्पू प्रांत के गांवों में नव निर्मित शौचालयों के सामने घरों के नये मालिक और समुदाय का स्वागत कीजिये

ऊपर महाराष्ट्र, भारत में ट्रिगरिंग के बाद पहली बार निर्मित शौचालयों में लकड़ी के तख्तों का प्रयोग

ऊपर उत्तरी बंगाल में सिर्फ बाँस और प्लास्टिक का उपयोग, अलीपुरद्वार समुदाय और पूर्ण रूप से ODF, सिलीगुड़ी कोलोनी, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल

ऊपर शौचालय का उठा हुआ चबूतरा जिससे वर्षा ऋतु में बाढ़ का पानी शौचालय में न भरने पाये, इण्डोनेशिया

ऊपर और बायें महाराष्ट्र, भारत के एक स्थानीय समुदाय के द्वारा पहले लोगों के घर से निकलने वाले गंदे पानी को सोखने के लिये यह एक अभिनव तरीका ईजाद किया जिसमें एक सोकपिट गड्ढे में बोल्डर पत्थर भर कर उसे जमीन में गड्ढा बनाकर गाड़ दिया जाता है। इससे यह सड़क साफ और सूखी रहने लगी जो कि पहले कीचड़ और गन्दगी से भरी रहती थी।

आपकी टिप्पणियाँ!

लेखक परिचय

डॉ. कमल कार पशुधन उत्पादन, कृषि और प्राकृतिक संसाधन विशेषज्ञ हैं जिनकी विशेष अभिरुचि सामाजिक और सहभागी विकास में है. आपने दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में स्वतंत्र परामर्शदाता के रूप में द्विपक्षीय, बहुपक्षीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों के लिये काम किया है जिनमें विश्व बैंक, वाटर एण्ड सैनिटेशन प्रोग्राम, एशियन विकास बैंक, डीएफआईडी, यूनिसेफ, यूएनडीपी, आयरलैण्ड एड, डीएनीडा, सम्मिलित हैं और कई गैर-सरकारी संगठन जिनमें केयर, प्लान इन्टरनेशनल, और वाटरएड सम्मिलित हैं. डॉ. कमल कार ने प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन के क्षेत्र में पथप्रदर्शक के रूप में कई अभिनव कार्यविधियों, दृष्टिकोणों एवं कार्यशैलियों तथा कृषि के लिये कम लागत की उपयुक्त प्रौद्योगिकी का विकास किया है. मंगोलिया के गोबी क्षेत्र में चरागाही और प्राकृतिक संसाधनों (खुखुलुख) के सामुदायिक एकजुटता से प्रबन्धन तथा बांग्लादेश, भारत, पाकिस्तान, इण्डोनेशिया, कम्बोडिया, नेपाल, इथियोपिया, केन्या, जाम्बिया, युगान्डा और तंजानिया में समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता के अभियानों में आप एक अग्रणी मार्गदर्शक के रूप में पथप्रदर्शन करते रहे हैं. आपके अन्य कार्यक्षेत्रों में भारत, मंगोलिया, बांग्लादेश और कम्बोडिया में शहरी गरीबी, मलिन बस्ती सुधार, और स्थानीय शासन सम्मिलित हैं. डॉ. कमल कार आईडीएस, यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स की नॉलेज, टेक्नोलॉजी एण्ड सोसाइटी टीम के विजिटिंग फैलो हैं. आप इन्टरनेशनल फैडरेशन फॉर वीमेन इन एग्रीकल्चर (नई दिल्ली) के संस्थापक सदस्य भी हैं.

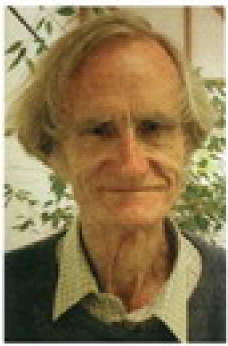

प्रोफेसर रॉबर्ट चैम्बर्स इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेन्ट स्टडीज, यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स, यूके के रिसर्च एसोसिएट हैं जहां आप सहभागिता टीम के सदस्य हैं. आपकी पृष्ठभूमि प्राकृतिक विज्ञान, इतिहास और लोक प्रशासन है. आपके विकास के क्षेत्र में मुख्य अनुभव पूर्वी अफ्रीका और दक्षिण एशिया में स्थानीय प्रशासन, प्रशिक्षण और शोध से सम्बन्धित रहे हैं. आपकी पुस्तकों में मैनेजिंग रूरल डेवलपमेन्ट (1974), रूरल डेवलपमेन्ट: पुटिंग दि लास्ट फर्स्ट (1983), चैलेंजिंग दि प्रोफेशन्स (1993), हूज़ रियेलिटी काउन्ट्स: पुटिंग दि फर्स्ट लास्ट (1997), पार्टिसिपेटरी वर्कशॉप्स (2002) और आइडियाज़ फॉर डेवलपमेन्ट (2005) सम्मिलित हैं. आपके वर्तमान कार्यों और अभिरुचि में सहभागी विधियां, प्रोफेशनलिज़्म एण्ड पर्सेप्शन ऑफ पॉवर्टी तथा पावर एण्ड रिलेशनशिप्स सम्मिलित हैं. लैला मेहता के नेतृत्व में आईडीएस की टीम के आप सदस्य हैं. इस टीम के साथ आप समुदाय संचालित सम्पूर्ण स्वच्छता पर अपने सहयोगियों के साथ शोध, कार्य अनुभव से सीखना, तथा नेटवर्किंग के कार्यों में संलग्न हैं.

यह हस्तपुस्तिका WSSCC की आर्थिक सहयोग से मुद्रित हुई है

वाटर सप्लाई एण्ड सैनिटेशन कोलाबोरेटिव काउंसिल
9 शेमिन दि आनिमो
1219 जेनेवा
स्विट्ज़रलैंड
फोन : **+41 22 917 8673**
फैक्स : **+41 22 917 8084**
ई-मेल :**vandervoordenc@who.int**
www.wsscc.org

प्लान यूके
5-6 अण्डरहिल स्ट्रीट
लंदन, एनडब्ल्यू1 7एचएस, यूके
फोन: +44 (0) 20 7482 9777
फैक्स: +44 (0) 20 7482 9778
ई-मेल: mail@plan-international.org
www.plan.uk.org

पंजीकृत चैरिटी संख्या 276035

ISBN 978.0.9550479.5.4

इंस्टिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज
यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स
ब्राइटन, बीएन1 9आरई, यूके
ids@ids.ac.uk
फोन: +44 (0) 1273 606261,
फैक्स: +44 (0) 1273 621202/691647

इलेक्ट्रिकल पाठ्यक्रम संचालित सम्पूर्ण व्यवस्था

कमल कार एवं पैकेज के साथ